नील गगन के प्रांगण से

लोक संस्कृति और साहित्य

प्राचीन भारत के मिथ एवं किंवदंतियां

नील गगन के प्रांगण से

मायाक्षी चट्टोपाध्याय

अनुवाद

विपिन कुमार

चित्रांकन

तापसी घोषाल

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

अनुक्रम

लेखक की कलम से

तारों भरी शांत शाम में दादी मां के चरणों में बैठकर बचपन में मैं प्रतिदिन उनकी अद्‌भुत कहानियां सुना करती थी। उनकी कहानियां जीवन की गौरवगाथा, समय की लीला एवं प्रकृति की लयात्मकता का बखान करतीं। आशा, विश्वास एवं साहस से भरी वे कहानियां नई ऊंचाइयों को छूने एवं अथाह गहराइयों में डुबकी लगाने को प्रेरित करतीं। वह भी खतरा एवं मृत्यु के भय से परे होकर, क्योंकि रात की कालिमा भले ही भयंकर हो, सुबह का उजाला होता ही है। सूरज सुनहली छटा के साथ उभरता है और एक नए दिन का जन्म होता है।

समय बीतता रहा पर मेरी इन कहानियों के प्रति उत्सुकता बनी रही। इनका एक-एक क्षण स्पंदन करता रहा, मैं मुग्ध हो सुनती रही, मानो किसी ने जादू कर दिया हो। ऊंचाइयों को छूने को आतुर मेरा दिल स्वर्ग के अद्‌भुत वैभवपूर्ण दुनिया में पहुंच जाता। छोटे-छोटे चकेवा की तरह चहकती मैं अपने सोच में मग्न, आसमान की गहराइयों में उतर जाती, खुशी के एक ऐसे धरातल पर जहां खिले फूल के लिए मधुमक्खियों का प्यार तपकर चमक उठता है।

परंतु एक मनहूस दिन आया और मेरी दादी मां अलग दुनिया में चली गई, जहां से कोई वापस नहीं आता। उसके साथ ही मेरे परियों वाला स्वप्न धुंधला पड़ गया, मेरी मन की आशाओं का अंत हो गया और दुनिया की कठोर सचाइयों से दो चार होने को मैं अकेली रह गई।

समय बीता, जिंदगी बदली और मैं पहुंच गई दूर एक ऐसी अलग दुनिया में जहां से घर उतना ही दूर था, जितना वो सब जो मुझे प्यारा था, जिसकी मुझे चाहत थी। अकेली खोई-सी, जाड़े के एक दिन जब मैंने खिड़की से बाहर झांका तो सामने थी बर्फ एवं उसी की तरह जमा अंधेरा। मेरे अंदर भी उतने ही जमे हुए, ठहरे हुए दृश्य थे। खिड़की के पास बैठी शून्यभाव से दिन का बीतना देखती रही। किसी भिन्नता अथवा नएपन की उम्मीद न रही। एक दिन यकायक मैंने बर्फीली

झाड़ियों से एक हरी लता को निकलते देखा। अंधकार से प्रकाश में आने का अथक संघर्ष करता हुई।

दादी मां की भूली-बिसरी कहानियां बिजलोका की तरह मेरे जेहन में कौंध गई। आशा एवं साहस का संदेश लिए उसने मेरे हृदय को उजाला से भर दिया। ऐसा प्रतीत हुआ मानो मैं वर्षों पीछे चली गई तथा समय ठहर गया...दादी मां के चरणों में...फिर वही सितारों भरी शांत शाम और अद्‌भुत कहानियां।

मैं अपने नन्हें दोस्तों के लिए इन कहानियों को लिखने खिड़की के पास बैठ गई, मानो यह सब एक स्वप्न हो। इस उम्मीद से कि सपनों के ये बीज उनके अंदर अंकुरित होंगे और पनपेंगे ताकि ये बच्चे सपनों का आनंद ले सकें—साथ ही यथार्थ का आनंद भी ले सकें, जो जीवन के रहस्यों को छिपाए बैठे हैं।

इन कहानियों की बाहरी सादगी को यदि खुले दिल से परखें, तो पाएंगे कि हम वर्तमान के समान युवा एवं अतीत के समान पुरातन हैं। और यदि जिंदगी के रहस्यों एवं विचित्रताओं को मानें तो सब कुछ संभव है—बशर्ते कि हम में विश्वास, आशा एवं साहस हो।

अम्मा, हमारी दादी मां, हमारा जीवन-प्रकाश थीं। सूर्य के सुनहले किरण की तरह हमारी जिंदगी में उन्होंने जीवंतता एवं खुशियां बिखेरीं।

अम्मा ने हमें प्यार दिया। हमने भी उन्हें चाहा। आखिर क्यों...? मोहक आंखों वाला हिरण—'मृगा', चटकीले रंग के पंखों वाला इतराता 'मयूर', कोयले की तरह काला मुंह लिए चतुर बंदर 'काजल'

तथा चमकीले लाल चोंच वाला रट्टू 'तोता' ...सब चाहते थे अम्मा को। उनकी झुर्रीदार हाथों से ही तो खाना लेते थे सब के सब।

अम्मा सुबह से शाम तक व्यस्त रहतीं। गेहूं को झाड़-झटककर साफ कर पीसना होता। पीतल के लैंप को साफकर उसमें शाम की आरती के लिए मीठे सुगंध वाला चंदन का तेल भरना होता। कुल देवता की सुनहली मूर्ति पर चढ़ाने के लिए ताजा-सुगंधित फूलों की माला बनती। परंतु प्रतिदिन गोधूलि की शांत बेला में, जब दिन रात का स्वागत करता, जस्मिन के पेड़ वाले आंगन में हरी घास पर फूस की चटाई बिछाकर अम्मा मौन ध्यान करने बैठ जाती। यही अवसर होता जब अम्मा की सबसे छोटी पोती रुपु खिसककर अम्मा के घुटने तक आती और झुर्रियों से भरी उनकी गर्दन अपनी छोटी- छोटी बाहों में भर लेती। फिर फुसफुसाकर कहती, 'अम्मा, कोई ऐसी कहानी सुनाओ जिसे बचपन में आपकी अम्मा ने सुनाया हो।'

दूर निहारती आंखों में याद की चमक लिए अम्मा मुस्कुरातीं और रुपु चौड़ी आंखें लिए इंतजार करती। उसकी टांगें अंदर की ओर मुड़ी होतीं, दोनों हाथ जुड़े होते, मानो प्रार्थना कर रही हो तथा हृदय परीलोक की कल्पना से भरा होता।

अम्मा कुछ सोचती हुई चांदी की पनबट्टी खोलती, उसमें से पान-तंबाकू खाती। पान चबाते ही उसका चेहरा कुछ गंभीर-सा हो जाता, आंखें गहरा जातीं एवं स्वप्निल अवस्था में पुचकारते हुए शुरू हो जातीं,

'अब सुनो, मेरे बच्चो, ***नील गगन के प्रांगण से*** कहानी'

– मायाक्षी चट्टोपाध्याय

नील गगन के प्रांगण से

लहराते-बलखाते, मुड़ते-मुड़ाते नीले पर्वत के इर्द-गिर्द चक्कर लगाते रहस्यमयी राहों पर चलकर तुम नील गगन की राजधानी पहुंचोगे। यहीं पहाड़ नीले आसमान को चूमते हैं और घुमड़ते हुए मोतियों से भरे बादल बूंद बनकर लहराते हुए गिरते हैं। धरती पर हरियाली छाई है तथा ठंडी हवा चल रही है। हनी-ब्लूम अपनी कोमल पंखुरियां खोले इतराती तितलियों तथा नीले चमकते मधुमक्खियों का स्वागत कर रही है। स्वप्निल आनंद में झूमते पेड़, चहकते-फुदकते पंछियों को प्रेम संदेश दे रहे हैं और यहीं चिर बसंत का स्वागत होता है।

इतने में आसमान के उस पार से जादुई आवाज आती है। पर्वतों पर गूंजती हुई यह दिलों में उतर जाती है, "वा-प-स--आ-ओ! वा-प-स आ-ओ!-व-ा-प-स आ-ओ!"

गूंज के आकर्षण से खिंचे तुम नील गगन के राजमहल में पहुंचोगे। रास्ते में होंगे झुके हुए मीनार और स्वप्निल गुंबदें। परंतु, यह क्या...? राजमहल तो खाली है। नील गगन के राज्य का राजा कहां गया? और यह अशांत हवा किसके लिए रो रही है?

युगों पहले, जब पहाड़ युवावस्था में था और धरती पर जीवन का प्रस्फुटन हुआ था, एक बलशाली विचित्र पुरुष नीले आकाश की धरती पर उतरा। उसके ललाट पर तारा था। सौंदर्य के इस सितारे को उसने अपना लिया, प्रतीक चिह्न बना लिया। साथ ही खूबसूरत इस धरती को भी उसने अपना बना लिया।

गिरते हुए तारों से उसने आसमान में एक तारा-महल बना लिया। सरिता की सुरमई ध्वनि को उत्कृष्ट संगीत में ढाल दिया। इंद्रधनुष से रंग चुराकर उन्हें उजाले में नहाकर जीवन को शानदार एवं चमत्कारपूर्ण बना दिया। और इस तरह वह नील गगन के राज्य का राजा बन बैठा।

सुंदरता एवं चमत्कार से भरी इस जिंदगी को अपनों के साथ बांटने को वह

आतुर रहता। और एक दिन वह काले आंधी वाले मोती-से बादल पर सवार हवा के संग उड़ चला। नीले पर्वत के ऊपर से नील गगन को पार कर सितारों से भरी दूधिया राह पर चलता रहा जो दरअसल चांद तक जाती है।

चांद के रुपहले किनारे पहुंचते ही उसे चंद्रपरी चंद्रिका, चांदनी रात में अठखेलियां करती मिली। उसके बालों में चंद्रमुखी फूल चमक रहे थे तथा चांदनी उसकी आंखों में टिमटिमा रही थी। राजा के मार्ग में सितारों की चमकीली धूल बिखेरती उसने राजा का मन मोह लिया। राजा ने उसके अधरों एवं हाथों को चूमकर उसे अपनी दुलहन बना ली। अब दोनों लालिमापूर्ण आकाश में सूर्य की तरफ जाती लपट भरी राह पर उड़ चले।

सूर्यदेव के राज्य के सुनहले द्वार पर सूरजपरी सूर्यकी खड़ी थी। दोनों के स्वागत में, रास्ते पर सूर्य-किरण बिखेरती सूर्यकी की आंखों में रश्मिपुंज तैर रही थी तथा बालों में एक सूर्यमुखी फूल चमक रहा था। सूर्यकी की अपूर्व सुंदरता पर मुग्ध राजा ने उसके सुनहले होठों तथा हाथों को चूमा और उसे भी अपनी दुलहन बना ली। अब तीनों एकसाथ नील गगन के राज्य वापस आ गए। राजधानी शान से चमक उठी।

सौंदर्य का सितारा राजा की ललाट पर चमकता रहा। और नील गगन के महल में राजा सुखपूर्वक दोनों सुंदर रानियों के साथ रहने लगा।

कुछ दिनों बाद जब सूर्य की छाया चांद पर पड़ी तो चंद्रिका ने जुड़वे लड़कों को जन्म दिया। उसकी आंखों में खुशी के तारे चमक उठे। दोनों नवजात बच्चों के ललाट पर भी दो छोटे-छोटे तारे चमकते रहते। राजा उन्हें अपनी बांहों में भरे उस दिन की कल्पना करता जिस दिन जवान होकर वे सौंदर्य तथा चमत्कार की नई दुनिया जीतने को जाते।

परंतु सूर्यकी दुःखी हो जल-भुन रही थी। उसे डर था कि कहीं राजा अपना सारा प्यार तथा धन चंद्रिका एवं उसके बच्चों पर न उड़ेल दे।

समय के साथ नवागंतुक सुंदर-सबल बच्चे के रूप में विकसित हुए। अधिक सुंदरता एवं खुशी की तलाश में दोनों एक दिन इंद्रधनुष पर सवार राजा के साथ निकल पड़े।

उस दिन आखिरकार सूर्यकी महल में चंद्रिका के साथ अकेली रह गई। उसने

दौड़कर बागीचे से एक सुगंधित फूल तोड़ उसके हृदय में जादुई चूर्ण मिला दिया। चंद्रिका को फूल देते हुए उसने कहा, ''बहन, यह सुगंधित फूल आपके लिए है। इसके मनमोहक सुगंध लीजिए तथा इसे अपने बालों में संवार लीजिए।''

चंद्रिका का फूल सूंघना क्या था, वह तो क्षण में भड़कीले हरे रंग का तोता बन टें-टें-टें, टें-टें...टें करते हुए महल से उड़ गई।''

लौटकर आने पर, राजा और उसके बच्चों ने सूर्यकी को रोते हुए देखा। रोते-रोते उसने कहा कि चंद्रिका पहाड़ पर गिर गई और लहराती नदी ने उसे बहा लिया। राजा की छाती में अजीब वेदना हुई मानो किसी ने तलवार चुभा दिया हो। नील गगन का राज्य दुःखों में डूब गया। उमड़ते बादलों ने दुःख के आंसू टपकाए। गम में पेड़ों ने पत्ते गिराए और फूलों ने पंखुड़ियां मूंद लीं।

इस बीच भयभीत तोता नीले आसमान को पारकर नीले पर्वतों में एक मरकत मणि की तरह चमकता हुआ मंडराता रहा। उसके पंख थक गए और सांसें कमजोर पड़ गईं और अंततः राजमहल के विशाल बागीचे में फलों से लदे एक पेड़ पर वह फड़फड़ाकर बैठ गया। भूख से अधमरे तोते ने जैसे ही एक पके फल पर चोंच मारी, फल गिर पड़ा। उसी वृक्ष के नीचे दो राजकुमारियां खेल रही थीं। उनकी नजर ऊपर वृक्ष पर बैठे हरे तोते पर गई और वे 'पिताजी, पिताजी' कहते राजा की तरफ भागे। उन्होंने कहा, 'लाल आंखों वाला एक हरा तोता हमारे उद्यान में आया है। इतना सुंदर तोता हमने कभी नहीं देखा है।'

राजा ने तुरंत सबसे अच्छे बहेलिये को बुलवाया, जिसने भयाक्रांत पक्षी को फंसाकर एक सुनहले पिंजड़े में कैद कर दिया।

उधर नील गगन के राज्य के राजा का दिन दुःखों से भरा था। उसकी प्रियतमा चंद्रिका खो गई थी। दुःख की इस घड़ी में वह जुड़वां बच्चों पर केंद्रित हो चुका था। उन पर पूरा प्यार उड़ेलता रहा। उनकी देखभाल करता रहा।

सूर्यकी क्रोधाग्नि में पुनः जलती रही। अब उसने दोनों बच्चों को खत्म करने का मन बना लिया। सुनहले रश्मि किरणों एवं सुबह के कुहासे से बने अपने वस्त्रों को उसने फाड़ लिया। उसने तो खाना-पीना भी बंद कर लिया। इस पर राजा ने एक दिन पूछा, 'मेरी सुंदर पत्नी, तुम क्यों दुःखी हो? अपनी इच्छा व्यक्त करो, उसकी पूर्ति की जाएगी।'

आंखों में दहकते अंगारे लिए उसने जवाब

दिया, 'मैं आपके बेटों के खून में नहाना चाहती हूं।' रानी के क्रूर शब्द सुन राजा दुःख से बेहोश हो गया।

सौंदर्य एवं सुख के उपभोग में मग्न राजा इन शब्दों को नहीं झेल सका। किंतु रानी ने राजा के नौकरों को बुलवाया और उन्हें आदेश दिया, 'दोनों बच्चों को दूर जंगल में ले जाकर मौत के घाट उतार दो और इस सुनहले पात्र में उनके लहू ले आओ।'

अंधेरी रात में दोनों छोटे बच्चों को जंगल की ओर ले जाया गया। रात की शांति में दोनों हाथ में हाथ डाले बढ़ रहे थे कि नौकर की आवाज ठनका की तरह उनके कानों पर गिरी, 'भागो, घने जंगल की गहराइयों में भाग जाओ।' उन्हें परे धकेलता हुआ वह चिल्लाया।

अंधेरे में भयभीत पदचाप की आवाज क्षीण पड़ती गई, परंतु नौकर तो जैसे पथरा गया था। वह अचानक मुड़ा और नदी में छलांग लगा दी और बहती धारा में गायब हो गया।

परंतु राजा एक बार बेहोशी की नींद जो सोया फिर कभी न जागा। सूर्यकी अंदर ही अंदर दुःख से जलती रही और सुलगती अंगार का एक ढेर बनकर रह गई। नील गगन के राज्य में शोक के काले बादल उमड़ पड़े और खाली महल में हवा भांय-भांय रोती रही।

घने जंगल के अंधियारे में दोनों राजकुमारों ने एक पेड़ के नीचे शरण ली। टप टप गिरते उनके आंसू ओस की बूंदों के साथ जा मिले और जंगल की छाया उनकी चारों तरफ मखमली आवरण की तरह घिर गए।

सवेरा होने को आया तो एक राजकुमार ने कहा, 'भइया, मैं प्यासा हूं, मेरे लिए पानी ला दो!' पानी लेने जैसे ही दूसरा राजकुमार सरिता के तट पर पहुंचा एक काला बलशाली हाथी अपनी पीठ पर सुनहला राज-सिंहासन लिए उसकी तरफ चिंघाड़ता हुआ लपका। हाथी ने राजकुमार को उठाकर सीधे सिंहासन पर बिठा दिया। और फिर आंधी की तरह जंगलों को चीरता हुआ दूसरी ओर चला गया।

दरअसल यह शाही हाथी एक ऐसे राजा का था जिसका देहांत उत्तराधिकारी के अभाव में ही हो गया था। इसीलिए राज्य के लोगों ने इस निर्णय के साथ हाथी को खुला छोड़ दिया कि जिसे भी यह अपनी पीठ पर बिठा लाएगा उसे राजा का

मुकुट पहनाया जाएगा। इस प्रकार भयाक्रांत राजकुमार एक अपरिचित राज्य का राजा बन गया।

उधर प्रतीक्षारत प्यासा राजकुमार एक पेड़ के नीचे सो गया। पास से गुजरते एक साधु उसे उठाकर अपनी छोटी-सी कुटिया में ले गया।

दिन, महीना और साल बीतते रहे। अब दोनों राजकुमार युवा एवं शक्तिशाली हो चुके थे। एक राजमहल में रहता तो दूसरा कुटिया में। पर दोनों मिलने के लिए प्रार्थना करते रहते।

एक रात जब जंगल की छांव गहराई, चांद मंद पड़ने लगा और तारे विश्राम को जाने लगे तो उल्लू का एक जोड़ा अपने में बातें कर रहा था। जंगल की झोपड़ी में लेटा राजकुमार उनकी बातें सुनने लगा। नर उल्लू ने अपनी मादा से कहा, 'प्रिये, क्या तुम जानती हो कि फूलों की घाटियों की राजकुमारियां जुड़वां भाइयों से विवाह करना चाहती हैं ताकि दोनों सदैव साथ रह सकें।'

मादा उल्लू ने कहा, 'हां, मैं जानती हूं और यह भी पता है कि वे उन्हीं जुड़वा भाइयों से शादी करेंगी जो हस्तिराज के मस्तक पर चमकते मणि को ले आएंगे।

इस पर चकित हो नर उल्लू ने कहा, "परंतु हस्तिराज कहां छिपता है इसका तो किसी को नहीं पता है। मुझ ज्ञानी को भी नहीं जो अन्य सभी पक्षियों से ज्ञानी है।"

इस पर करीब आकर मादा उल्लू ने फुसफुसाकर कहा, 'मैं जानती हूं। दुनियां के अंतिम छोड़ पर दूधिया पर्वत की तराई में दूध की एक नदी बहती है। उसमें हजारों कमल खिलते हैं। उन्हीं के बीच मस्तक के केंद्र में चमकते मणि वाला छोटा उजला हाथी खेलता है।"

राजकुमार सहज ही अपने कानों पर विश्वास नहीं कर सका सो उसने साधु को उठाकर सारी बात बताई। साधु ने राजकुमार के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा, "हस्तिराज की खोज में जाओ, मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है।"

राजकुमार जंगल में भटकता रहा। पर दुनियां के दूसरे छोर पर कैसे पहुंचेगा, इसका कोई ज्ञान उसे नहीं था।

इतने में बर्फ-से सफेद घोड़े पर सवार रुपहले कवच में दूसरा राजकुमार उधर से गुजरा। दोनों एक पल को रुके एवं एक-दूसरे को निहारा। दोनों के ललाटों पर सौंदर्य का तारा दमक उठा और एकबारगी ही उन्होंने एक दूसरे को पहचान लिया।

खुशी के मारे दोनों एक दूसरे से लिपट गए तथा बारी-बारी से बिछुड़ने से लेकर अब तक की कहानी सुनाई। तब साधु राजकुमार ने फूलों की घाटियों वाली, राजकुमारियों वाली बात सुनाई तथा दोनों हस्तिराज की तलाश में अंतहीन जंगल में निकल पड़े।

रात के गहराते ही बादलों के बीच से चांद उभरा। शांत एवं निर्मल। उसकी सौम्य सुंदरता के वशीभूत दोनों राजकुमार उसके रुपहले मार्ग पर खिंचते चले गए। यह रास्ता दुनियां के दूसरे छोड़ तक जाता था। वहां दूधिया पहाड़ के चरणों को पखाड़ती दूध की नदी बह रही थी। उसी में कुमुदिनी के हजारों फूलों के बीच चमकते मणि वाला छोटा सफेद हाथी खेल रहा था।

राजकुमारों के ललाटों पर सौंदर्य का सितारा देखते ही हाथी नदी के दूधिया जल से बाहर आया और झुककर मणि उनके चरणों में अर्पित कर दिया। एक जादुई किरण फूटी जिसने उन्हें सीधे फूलों की घाटियों के राजा के महल में पहुंचा दिया।

वहां स्वाभिमान से भरे राजकुमारों ने राजा का झुककर अभिवादन किया तथा उन्हें गज-मणि सौंप दिया। इतने में ही हरे तोते ने अपने पंख जोर से फड़फड़ाए तथा सुनहले पिंजरे को तोड़ दिया। आश्चर्य... घोर आश्चर्य। जैसे ही तोते ने राजकुमारों को हरे पंखों से गले लगाया वह रानी के रूप में बदल गई। उसकी आंखों में चांदनी की चमक थी एवं बालों में चंद्रमुखी फूल की। उसने लोगों को नील गगन के राज्य की कथा बताई। उसे किस तरह तोता बनाया गया एवं दोनों राजकुमारों को क्यों जंगल भेजा गया, अब रहस्य नहीं रहा। नील गगन के राज्य के राजकुमारों की शादी फूलों की घाटियों के राजकुमारियों के साथ हुई।

धरती एवं आकाश खुशी में झूम उठे। उसके बाद नील गगन के राज्य की खोज में सभी निकल पड़े। जैसे ही वे लहराते-बलखाते मुड़ते-मुड़ाते नीले पर्वत के गिर्द चक्कर लगाते रहस्यमयी राहों के पास पहुंचे नील गगन के उस पार से पर्वतों में गूंजती आवाज आई!

लौट-आ-ओ! ल-ौ-ट अ-ा-अ-ो! ल--ौ--ट अ--ा--अ--ो!

बस हुई कहानी खतम यहीं
ढलता सूरज हो चला लाल
मुंद गईं फूल की पंखुड़ियां
चुपचाप शाम आ गई द्वार

धीरे-धीरे बढ़ रही शाम
सो गए नींद से पंछी दल
झिल-मिल तारे चमके नभ में
तिल-तिल, क्षण-क्षण, पल-पल, पल-पल

यह छिपा चांद भी आ पहुंचा
भर रात करेगा करामात
अब हो गई गहरी रात-रात,
सो जा बच्चे, बस हुई बात।

एक कमल का जन्म

सदानीरा पवित्र गंगा विशाल पर्वतों से गिरती है। ऊंची चट्टानों से टकराकर गुफाओं में घुसती फिर बाहर निकलकर घने जंगलों एवं उर्वर घाटियों को पारकर सदैव बहती रहती है। युगों पहले जब से इस नदी का पवित्र जल धरती पर कल-कल करती बह रही है, तब से ही दूर-पास से आकर संत एवं श्रद्धालु इसमें स्नान कर अपने पापों को धोते आ रहे हैं।

सूर्य की रोशनी में नहाए नदी के एक तट पर सफेद बाल एवं लहराती हुई बड़ी दाढ़ी वाला एक गरीब वृद्ध ब्राह्मण बैठा करता था। सूर्योदय से सूर्यास्त तक रेतीले तट पर बैठा वह ब्राह्मण प्रार्थना एवं मनन करते रहता। शाम ढलते ही वह नदी तट पर बने ताड़ के पत्ते से बनी झोपड़ी में चला जाता। उस ब्राह्मण की न तो पत्नी थी और न ही कोई बच्चा था। उसके पास दुनियांदारी का सामान भी नहीं था। राह गुजरते श्रद्धालुओं द्वारा दिए गए दान से ही वह अपना काम चलाता था।

उस ब्राह्मण की झोपड़ी के निकट एक बिल में छोटा-सा भूरा चूहा रहता था। रात को जैसे ही ब्राह्मण वापस आता वह चूहा बिल से बाहर निकल आता। ब्राह्मण के पैरों के पास बैठ वह चूहा उसके ही रूखे-सूखे भोजन पर हाथ साफ करता। इस प्रकार हरेक रात दोनों मिलते और उनमें गहरी दोस्ती हो गई।

एक दिन भावावेश में ब्राह्मण ने चूहे को बोलने की शक्ति दे दी ताकि रात के वीरान पहर में अपने दोस्त चूहे के साथ बात कर वह समय बिता सके।

उसी रात ब्राह्मण के लौटते ही चूहा बिल से निकलकर अपनी पूंछ के बल खड़ा हो गया। फिर उसने अपने छोटे पंजों को जोड़कर चमकीली काली आंखों में आंसू लिए प्रार्थना की, ''हे भगवन्, आपने मुझे बोलने की शक्ति दी है। अब मेरी व्यथा की कथा सुनने की कृपा करें।''

'व्यथा' शब्द मात्र ही ब्राह्मण को चौंकाने वाला था। उसके अनुसार तो मनुष्यों की तरह बोलकर उस चूहे को अति प्रसन्न होना चाहिए था। फिर भी

उसने धीरे से पूछा, "एक छोटे से चूहे को भला क्या दुःख हो सकता है?"

इस पर चूहे ने याचना की, "हे स्वामी, मैं आपके पास एक भूखे चूहे की तरह आया। आपने खुद को भूखा रख मुझे खिलाया। अब मैं एक मोटा-तगड़ा चूहा बन गया हूं। बिल्लियां, मुझे देखते ही चिढ़ाती हैं और खदेड़ती हैं। मैं उनके लिए एक स्वादिष्ट भोजन बन चुका हूं। मुझे डर है कि एक दिन वे मुझे पकड़कर मार देंगी। अतः हे स्वामी, मेरी आपसे याचना है कि मुझे बिल्ली बना दीजिए, ताकि बाकी का जीवन मैं निडर होकर बिता सकूं।"

यह सुनते ही दयालु ब्राह्मण दुःखी हो गया। और चूहे के माथे पर उसने गंगाजल छिड़क दिया। देखते ही देखते वह चूहा एक सुंदर बिल्ली बन गया।

खुशी के मारे वह बिल्ली घमंड से गुर्राई। उसे पता था कि गांव में उससे अधिक ज्ञानी एवं शक्तिशाली कोई बिल्ली नहीं है। पूरे दिन वह शिकार की टोह में झोपड़ी के

इर्द-गिर्द टहलती रहती। रास्ते में आने वाले हरेक चूहे को दौड़ाती रहती, मारती रहती। उसे अब न किसी तरह का खतरा था और न ही मृत्यु का भय।

कुछ दिनों तक उस बिल्ली के दिन सुखपूर्वक बीतते रहे। पर एक रात जब ब्राह्मण वापस आया तो बिल्ली एक कोने में दुबकी दुःखी हो म्याऊं-म्याऊं कर रही थी। ब्राह्मण ने पूछा, ''मेरी छोटी बिल्ली, क्या बात है? बिल्ली की जिंदगी से तुम खुश नहीं हो क्या?''

दुःखी बिल्ली ने जवाब दिया, ''बिल्कुल नहीं।''

ब्राह्मण ने पूछा, ''क्यों? क्या तुम आसपास के अन्य बिल्लियों से अधिक ज्ञानी एवं शक्तिशाली नहीं हो? मेरे दोस्त, तुम बिल्ली की इस जिंदगी से दुःखी क्यों हो?''

इस प्रश्न के जवाब में चूहे ने कहा, ''मैं निस्संदेह बिल्लियों में ज्ञानी एवं शक्तिशाली हूं। पर अब कुत्ते मेरे अधिक खतरनाक दुश्मन हो गए हैं। मुझे देखते ही ये भौंकते एवं गुर्राते हैं तथा एक झुंड में मेरे पीछे पड़ जाते हैं। डर से मेरे दिल की धड़कन तेज हो जाती है। मेरे पांव शिथिल पड़ जाते हैं। और मुझे डर है कि एक दिन वे मुझे पकड़कर मार डालेंगे। अतएव हे प्रभु, दया कर मुझे कुत्ता बना डालिए, ताकि गांव के अन्य कुत्तों से मैं खुद निबट सकूं।''

उस बिल्ली से ब्राह्मण को इतना लगाव था कि गंगाजल छिड़ककर आनन-फानन में उसे कुत्ते में परिणत कर दिया।

खुशी के मारे वह कुत्ता छलांग लगाता रहा और पूंछ हिलाता रहा। अब स्वतंत्र एवं निर्भीक होकर वह अपने मालिक की झोपड़ी की रखवाली करता। शाम ढलते ही झोपड़ी के द्वार पर बैठ मालिक की प्रतीक्षा करता। रात में दोनों साथ-साथ खाते।

कुछ ही दिनों बाद एक तूफानी, अंधेरी रात में जब ब्राह्मण वापस आया तो उसे अपना वफादार कुत्ता दरवाजे पर नहीं मिला। चिंतित ब्राह्मण ने उसकी तलाश पूरे गांव एवं नदी के वीरान पड़े किनारे पर की। किंतु व्यर्थ...! अकेला, खोया-खोया अपनी सुनसान झोपड़ी में वापस आकर जब ब्राह्मण ने लालटेन जलाई तो उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। टिमटिमाती रोशनी में उसने कुत्ते को एक अंधेरे कोने में दुबका हुआ देखा। वह दुःख से सुबक रहा था। उसे पुचकारते हुए ब्राह्मण ने पूछा, ''मेरे वफादार दोस्त, तुम स्वस्थ तो हो। आओ मेरे पास बैठकर खाना खाओ और अपने सारे दुःख मुझे बताओ।''

अब अनुनय-विनय करते हुए कुत्ते ने कहा, ''इस जीवन से मुझे कोई शिकायत नहीं है। किंतु अब मेरी भूख बहुत बढ़ गई है। आपके सामान्य भोजन

में से जो टुकड़े मुझे मिलते हैं मैं उनसे कतई संतुष्ट नहीं हो पाता हूं। अतः हे स्वामी, अगर मैं बंदर होता तो सारा दिन ताजे एवं रसीले फल खाता। फिर मुझे कभी भूख नहीं सताती।'' यह सब कहते-कहते दुःखी कुत्ता बूढ़े ब्राह्मण के चरणों में लेटकर सुबकता रहा।

आंखें मूंदे हुए ब्राह्मण चुपचाप सोचता रहा, ''मैं तो एक बूढ़ा गरीब ब्राह्मण हूं। मुझे तो भूखे एवं अभाव में रहने की आदत है। परंतु मेरे साथ यह क्यों भूखा रहकर कष्ट झेले।'' यह सोचते-सोचते उसका कोमल हृदय दया से भर गया और मंत्रोच्चार करते हुए उसने प्रार्थना की। ठीक उसी जादुई समय में वह कुत्ता बंदर के मनवांछित स्वरूप में आ गया।

खुशी से पागल बंदर छलांग लगाता झोपड़ी से बाहर निकल गया और दूर जंगल में चला गया। जंगल की स्वच्छ एवं फूलों से सुगंधित हवा में चैन की सांस लेते हुए वह सोच रहा था, ''वाह! भरे-पूरे इस जंगल में कितनी स्वतंत्रता है।'' आनंद की इस घड़ी में वह एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर पूंछ की सहायता से झूलता रहा तथा मीठे रसीले फल तब तक खाता रहा जब तक उसकी खाने की इच्छा मर नहीं गई। जब जंगल में अंधेरा छा गया, तो वह बंदर आंखें मूंदे सुखमय नींद में डूब गया।

धीरे-धीरे गरमी का मौसम आया। दिन तपने लगा। पेड़ों ने पत्ते गिराए। नदियां सूख गईं। बेचारे बंदर का शरीर गर्मी से झुलसने लगा। उसकी जीभ एवं गला प्यास से सूख गया। दुःखी होकर उसने पेड़ से नीचे देखा, जहां भैंसों का एक झुंड ठंडे कीचड़ भरे एक तालाब में लोट रहा था। बंदर पुनः सोच में पड़ गया, ''ओह, ये कितने भाग्यशाली हैं। मैं यहां गरमी में जल रहा हूं, प्यास से मर रहा हूं और ठंडे तालाब में ये कितने आराम से हैं।''

सूरज ढलते ही बंदर ब्राह्मण की झोपड़ी की ओर लपका और दरवाजे पर बेचैनी से इंतजार करता रहा। वापस आते ही ब्राह्मण ने बंदर को देखा और मुस्कुराते हुए कहा, ''दोस्त, तुम्हें इस गरीब बूढ़े दोस्त की याद आ ही गई। आओ, बैठो, बंदर के रूप में जंगल में अपने बीते सुखी जीवन की कहानी सुनाओ।''

परंतु बंदर तो दुःखी था। शिकायत भरे स्वर में उसने कहा, ''मैं जंगल में ताजे एवं रसीले फल खाकर खुश हूं, किंतु मुझे गरमी में बंदर की इस जिंदगी से घृणा है। सूरज की तीखी किरणें मेरी पीठ को झुलसा देती हैं। घने, छांव-भरे पेड़ों की पत्तियां गिर जाती हैं तथा सरिता का पानी सूख जाता है। मेरा बदन ऐंठ जाता है। जीभ सूख जाती है। मुझे लगता है, मैं प्यास से मर जाऊंगा। अतः हे स्वामी!

मैं भैंस बनने के लिए कुछ भी त्यागने को तैयार हूं। भैंस बनकर मैं कीचड़ भरे तालाब में लेटा रहूंगा और ग्रीष्मकाल की गरमी मुझे तनिक भी सता नहीं सकेगी।''

एक बार फिर वह भद्र बूढ़ा ब्राह्मण उस निरीह प्राणी के लिए दुःखी हो गया। ब्राह्मण ने कहा, ''मेरे बच्चे, झोपड़ी के अंदर आओ। मैं तुम्हें कष्ट निवारक गंगाजल से नहा देता हूं। फिर तुम्हारी इच्छा-पूर्ति के लिए प्रार्थना करता हूं।'' यह सब करते ही एक विशालकाय भैंस झोंपड़ी से बाहर निकली और शीघ्र ही जंगल में ओझल हो गई।

गरमी के सारे दिन उस भैंस ने ठंडे गंदले तालाब में लेटकर बिताया। उसका शरीर शीतल था और चित्त प्रसन्न। अब वह निश्चिंत थी। अंततः उसने खुशी पा ली थी।

जल्द ही वर्षा का आगमन हुआ। सूखी धरती की प्यास बुझी। भूरे नग्न वृक्षों को नया जीवन मिला। सूखी नदियों को पानी। पेड़ों पर नए हरे पत्ते उग आए। उनकी शाखाओं पर बैठे पक्षियों ने चहकना शुरू कर दिया। खुशी से पागल मोरों ने रंगीन, भड़कीले पंखों को फैलाकर नाचना शुरू कर दिया।

बसंत के नए खुशहाली भरे दिनों में राजा अपने मित्रों के साथ एक बलशाली हाथी पर सवार जंगल की सैर को निकला। हाथी की गरदन में लटकी सुनहली कड़ी से बंधी घंटियां झूल रही थीं। गंदले तालाब में अलसाए भैंसों को देखते ही राजा ने अपनी धनुष से जहर-बुझा एक तीर उन पर चला दिया। बिजली की तरह जंगलों को चीरता यह तीर सीधे किसी भैंस के दिल में जा चुभा। और भैंस तुरंत ढेर हो गया।

इस पर आतंकित वह भैंस फटाफट पानी से बाहर आई तथा ब्राह्मण की

झोपड़ी की तरफ सरपट भागी। उस शाम जैसे ही ब्राह्मण वापस आया, भैंस घुटनों के बल होकर अपना सिर ब्राह्मण के चरणों में रख फूट-फूटकर रोने लगी।

भैंस अनुनय-विनय करते हुए पुनः बोली, ''हे भगवन्! यह तो आपके आशीर्वाद का ही फल है कि मैं बच गई, वरना जहर-बुझे उस तीर से मेरी भी तो मृत्यु हो सकती थी। उस तीर ने तो मेरी सहचरी भैंस का अंत एक
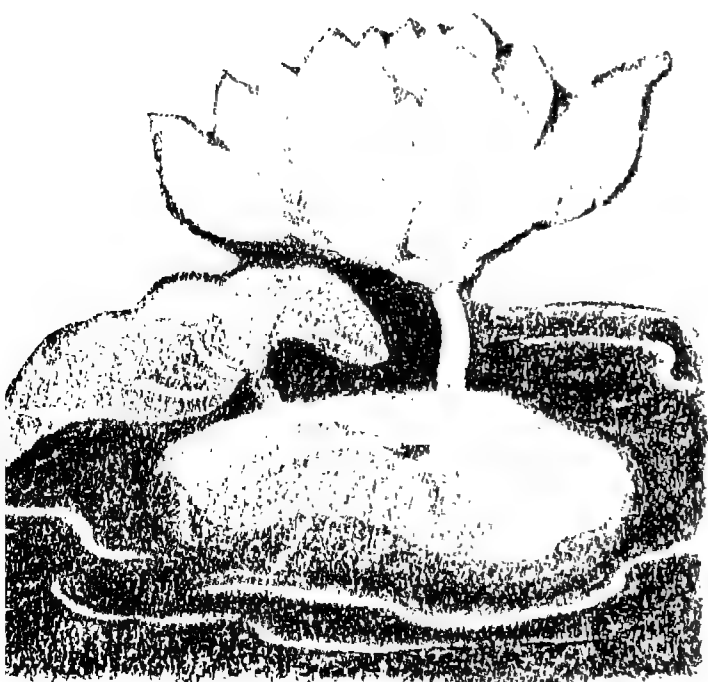
झटके से कर दिया। अतः मुझे भैंस के दुर्भाग्य से बचा लीजिए। मुझे हाथी बना दीजिए ताकि मेरी गर्दन में सुनहली घंटियां झूलती रहें और मैं राजा को अपनी पीठ पर बिठाकर घुमाने का सौभाग्य प्राप्त कर सकूं।"

हमेशा की तरह ब्राह्मण ने उसे वरदान दे दिया। अब वहां आबनूस की तरह काली चमड़ी एवं चमचमाते दांत लिए एक राजसी हाथी था, जो घमंड से चिंघाड़ते हुए, मदमस्त हो जंगल की ओर चला गया।

बसंत के एक सुखद दिन पुनः राजा अपने हाथी पर सवार जंगल में आया। उसके पास चमचमाती गहनों में सजी सुंदर रानी बैठी थी। रानी को देखते ही उस हाथी की आंखें चुंधिया गईं। ईर्ष्यालु हाथी सोचने लगा, 'रानी बनकर राजा के साथ राजसी हाथी की सवारी में कितना आनंद आएगा? हाथी बन लोगों को पीठ पर ढोने में भला क्या सौभाग्य है? भले ही वे राजा-रानी क्यों न हों? मैं तो रानी बनकर राजा के साथ शाही हाथी
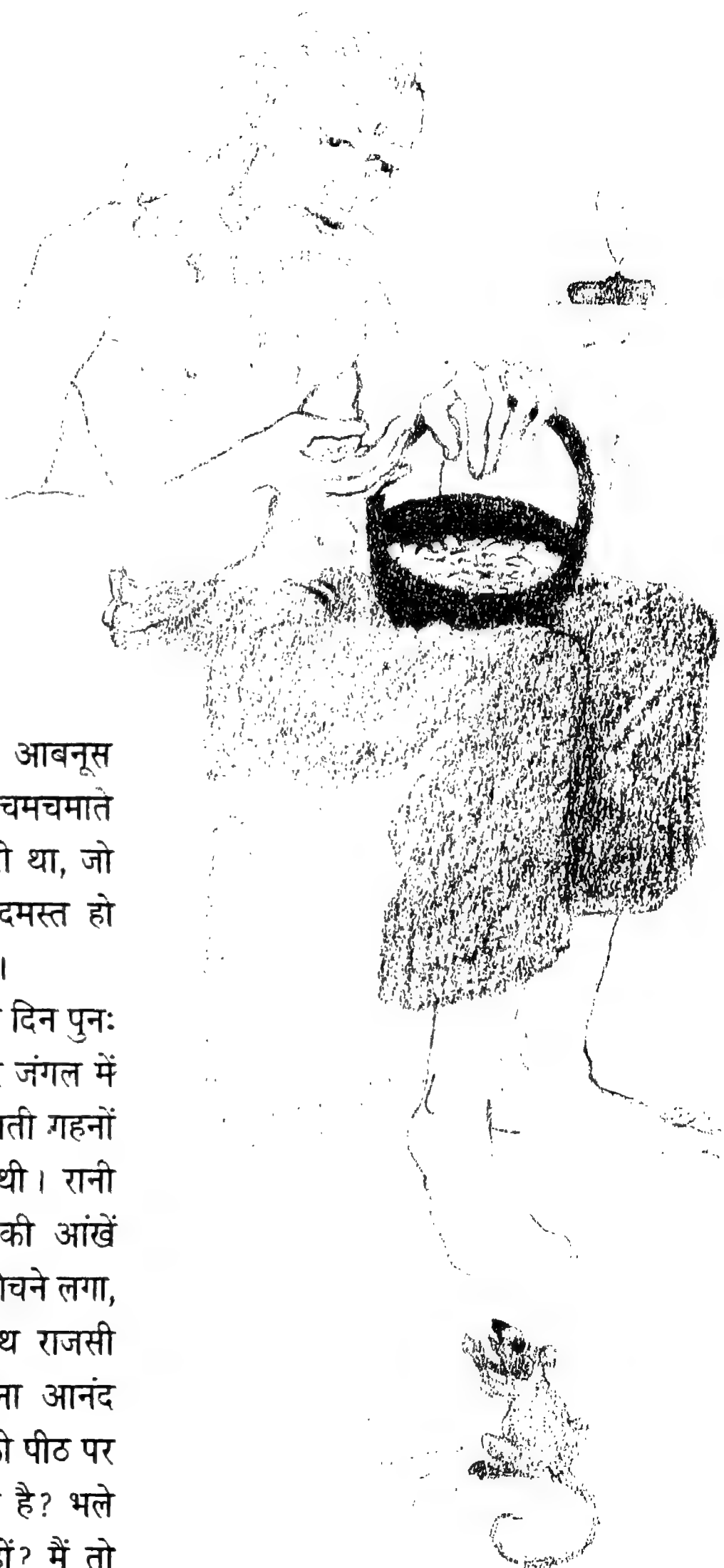
की सवारी पसंद करूंगी।'

उस शाम जब ब्राह्मण वापस आ रहा था तो उसने हाथी को झोपड़ी की तरफ भागते हुए देखा। परंतु इस बार ब्राह्मण ने निर्णय लिया कि उस जानवर की अंतहीन कामनाओं की पूर्ति के लिए अब जो धार्मिक शक्ति का प्रयोग वह करेगा, अंतिम होगा।

हाथी के गाल पर आंसू की बूंदें लुढ़क रही थीं। वह सुबकते हुए बोला, "हे भगवन्! मेरी एक अंतिम मनोकामना है। दरअसल लोगों को पीठ पर बिठाकर घुमाने में किंचित सम्मान है--भले ही वे राजा एवं रानी क्यों न हो। अतएव कृपाकर मुझे रानी बना दीजिए ताकि राजा के साथ मैं शाही हाथी की सवारी कर सकूं।"

"मूर्ख बच्चे, मैं तुम्हें रानी में कैसे बदल सकता हूं? मैं तुम्हारे लिए राजा एवं उसके लिए राज्य कहां से लाऊंगा?" यह प्रत्युत्तर था उस ब्राह्मण का। फिर उसने कहा, "मैं अधिक से अधिक तुम्हें एक सुंदर कन्या बना सकता हूं। शायद तुम किसी राजा का मन मोहकर उसकी रानी बन सको।" इतना कहकर उस ब्राह्मण ने मंत्रोच्चार के साथ प्रार्थना की और हाथी को एक सुंदर कन्या में बदल दिया। उसकी आंखें गहरी एवं काली थीं। और काले बाल चमक रहे थे।

शस्य-पूर्णिमा के त्योहार के दिन मंदिरों की हजारों घंटियों की आवाज पहाड़ों एवं नदियों के पार से आ रही थी। सूर्योदय के साथ ही वह सुंदर कन्या जग गई। अपने बदन पर सुगंधित तेल लगाया। फूलों की माला से खुद को सजाकर प्रार्थना करने मंदिर की ओर भागी।

मंदिर के द्वार पर पहुंचते ही उसने राजा को हाथी पर से उतरते देखा। वह फटाफट नदी की ओर भागी। वहां से पानी लाकर सावधानीपूर्वक राजा का पैर प्रक्षालित कर दिया। उसकी सुंदरता पर मोहित राजा ने पूछा, "तुम कौन हो सुंदर कन्या? कहां रहती हो?" लजाते हुए उस कन्या ने कहा, "मैं एक गरीब ब्राह्मण की बेटी हूं। और नदी किनारे एक झोपड़ी में रहती हूं।"

इस पर राजा ने कहा, "मुझे अपने पिता की झोपड़ी में ले चलो। मैं तुमसे विवाह कर तुम्हें अपनी रानी बनाना चाहता हूं।" सुंदर कन्या तो फूली न समाई। और वे ब्राह्मण की झोपड़ी पर पहुंचे। वहां ब्राह्मण ने राजा को विवाह की अनुमति दे दी तथा दोनों को आशीर्वाद दिया।

विवाह के दिन तो राजधानी में खुशी की लहर दौड़ गई। रानी ने सुनहले धागे से बुना परिधान धारण कर लिया। उसने पन्ना-जड़ित एक मुकुट पहन

लिया। अनमोल मोतियों की माला उसकी गरदन में चमक रही थी और वह शाही अंदाज में सुनहले सिंहासन पर राजा के समीप बैठी थी। महल की महिलाएं सुगंधित गुलाब की पंखुड़ियां एवं केसर-युक्त चावल के दाने राजसी जोड़े पर बरसा रही थीं। प्रेम एवं आनंद के गीत गाए गए। संगीत की ध्वनि एवं ढोल की आनंददायक थाप हवा में गूंज रही थी। छतों एवं ऊंचे पेड़ों पर बच्चे-बूढ़े-जवान सभी खड़े थे। उन्हें राजधानी से राजा एवं रानी के गुजरने का बेसब्री से इंतजार था। यह राजसी सवारी हरी-भरी घाटी के पार हाथी दांत से बनी महल को चली गई।

रानी की खुशी की सीमा नहीं थी। उसके सारे सपने सच हो चुके थे। पर एक रात जब राजा अपने बिस्तर में नींद में लेटा था तो वह दबे पांव महल से निकल कर राज उद्यान में पहुंच गई। वहां चांदनी झील के स्वच्छ पानी में अपनी सुंदरता निहारने लगी। परंतु दुर्भाग्य से उसका पैर फिसला और वह पानी में डूब गई। और वह सदा के लिए चली गई। राजधानी में शोक का माहौल बन गया। हताश राजा हवा से बात करने वाले घोड़े पर सवार ब्राह्मण की झोपड़ी की ओर भागा।

राजा को समीप आते देख ब्राह्मण ने सब कुछ भांप लिया और मंद-मंद मुस्कराता रहा। उसने राजा से कहा, "हे राजन! मैं तुम्हारे यहां आने का कारण जानता हूं।" तुम्हारी प्रिय रानी, जिसे तुम खो चुके हो, वस्तुतः मेरी झोपड़ी के एक बिल में रहने वाला निरीह चूहा था। दयावश मैंने अपने आशीर्वाद से उसे बारी-बारी से बिल्ली, कुत्ता, बंदर, भैंस, हाथी और अंत में एक सुंदर कन्या बना दिया। वही कन्या तुम्हारी रानी बनी। पर अपनी स्थिति से वह सदैव असंतुष्ट रही। उसकी इच्छाओं का अंत नहीं था। चांदनी रात में महल के झील में अपनी परछाईं निहारती हुई वह फिसलकर पानी में डूब गई। इस प्रकार वह इस दुनिया से चली गई। पर हे राजन्, आप दुःखी न हों, मैं उसे अमर बना दूंगा। उसके शरीर से एक सुंदर फूल का जन्म होगा। यह फूल सदैव बरसात के मौसम में खिलेगा। यह सदैव ललायित रहेगा कि सूर्योदय की किरणें चूमकर इसके सुंदर पंखुड़ियों को खोले। इस फूल को लोग 'कमल' के नाम से जानेंगे। और जब भी आप झील के पास रुकेंगे, एक फुसफुसाती आवाज आपके कानों तक आएगी :

"ठहरो, ऐ जाने वाले, सुनो! यदि तुम खुश रहना चाहते हो तो अपनी स्थिति पर संतोष करो। इससे तुम्हारे दुःख उसी तरह दूर होंगे, जिस तरह कमल की पंखुड़ियों से लुढ़ककर ओस की बूंदें।"

बस हुई कहानी खतम यहीं
ढलता सूरज हो चला लाल
मुंद गईं फूल की पंखुड़ियां
चुपचाप शाम आ गई द्वार

धीरे-धीरे बढ़ रही शाम
सो गए नींद से पंछी दल
झिल-मिल तारे चमके नभ में
तिल-तिल, क्षण-क्षण, पल-पल, पल-पल

यह छिपा चांद भी आ पहुंचा
भर रात करेगा करामात
अब हो गई गहरी रात-रात,
सो जा बच्चे, बस हुई बात।

नागराज का मणि

शांत घाटी से घिरे एक छोटे राज्य में अर्जुन नाम का एक एकाकी राजकुमार रहता था। वहां दूर-दूर तक कोई अन्य राज्य नहीं था। महल के बागीचों के माली का बेटा आनंद, राजकुमार का एक मात्र दोस्त था। वे साथ-साथ हंसते-खेलते और गाते थे। अपने-अपने गुप्त मनोभाव एवं परियों के सपनों की बातों के अलावा वे और भी कई बातें एक दूसरे को कहते-सुनते थे।

एक दिन दूर नीले आकाश में उन्होंने आवारा बादल देखा जो पर्वतों के ऊपर से होता हुआ जा रहा था, मानो इस दुनियां से परे जा रहा हो। सहसा उनके दिलों में एक इच्छा जग गई।

अर्जुन ने आंखों में सपने लिए दिल की बात कही, "आनंद, कितना मजा आता यदि हम आवारा बादलों के साथ बहते पर्वतों के ऊपर से होकर नीले आकाश के पार की दुनियां देख पाते।"

आनंद का जवाब तो मानो पहले ही तैयार था। उसने कहा, "तुम शक्तिशाली हो। मैं भी डरपोक नहीं हूं। चलो हम बादलों के पीछे हो लें। घाटी के उस पार, पर्वतों के ऊपर होते हुए दूसरी दुनियां को देखने चलें।"

अगले ही दिन, जब महल के पहरेदार गहरी नींद में थे, उन्होंने राज अस्तबल से हवा से बातें करने वाले दो घोड़े चुराए। और सूर्योदय से काफी पहले ही घोड़ों पर सवार होकर महल के द्वार से निकलकर, नगर की चारदीवारी से भी दूर चले गए।

हवा से बातें करते घोड़े पथरीली भूमि पर मीलों दूर निकल गए। रास्ते में धूप से तपता रेगिस्तान पड़ा। उसे पार कर वे हरी-भरी घासों वाली घाटी में पहुंचे। अब उनके सामने दूर-दूर तक गगनचुंबी पर्वतों की शृंखला थी। वे उस पर चढ़ने लगे। यह काफी खड़ी चढ़ाई थी। चट्टानों एवं बड़े-बड़े पत्थरों के बीच रास्ता बनाते हुए वे चढ़ते रहे। अचानक यह रास्ता एक गहरे घने जंगल में ढुलक गया।

उस जंगल में बाघ एवं भालू स्वतंत्रतापूर्वक निर्भीक हो विचरण करते थे। और लोग उस तरफ जाने से डरते थे।

जंगल में अर्जुन भयभीत हो गया। आंखों में डर का भाव लिए उसने कहा, ''इस अंधेरी रात में यह जंगल भयानक लग रहा है। हम क्यों न अपने घोड़ों को एक पेड़ से बांध दें। और उसकी शाखाओं की छांव में ही रात बिता लें। शीघ्र ही वे एक नीली झील के किनारे उतरे। बड़े-बड़े हरे वृक्षों से घिरी उस झील में ढेर सारे कमल के फूल खिले थे। बिना कोई आवाज किए उन्होंने घोड़ों को विशालतम वृक्ष से बांध दिया। और उसी पेड़ की सबसे ऊपरी शाखा पर चढ़कर शीघ्र ही गहरी नींद से सो गए।

आधी रात गए, दिल दहलाने वाली आवाज से जंगल की शांति अचानक भंग हो गई। ऐसा लगा मानो हजारों सांप क्रुद्ध हो फुफकार रहे हों। आंखों को चुंधियाने वाली रोशनी में जंगल चमक रहा था। ऐसा लगता था मानो मध्य रात्रि में सैकड़ों सूर्य आकाश में चमक रहे हों। इस विचित्र प्रकाश में उनकी आंखें चुंधिया गईं और भयभीत हो दोनों उठकर बैठ गए। डर से सहमे हुए उन्होंने देखा कि एक शक्तिशाली काला सांप झील के पानी से बाहर निकल रहा था। उसके काले, चमकीले फन के बीच में एक चमकता हुआ मणि था।

राजसी स्वाभिमान में वह अपने मणि-युक्त फन इधर-उधर हिलाता रहा। आसपास की छोटी-बड़ी सभी चीजों पर उसकी जहरीली नजर पड़ी। देखते ही देखते उसका चमकता काला शरीर कुंडली मारे पानी से कई गज ऊपर आ गया। अचानक वह सबसे विशाल वृक्ष की ओर लपका और एक के बाद एक दोनों घोड़ों को एक ही बार में निगल गया। फिर उसने धीरे से फन झुकाया और पेड़ के नीचे मणि गिराकर—लहराता, फिसलता जंगल के सुदूर कोने में सरसराकर भागा। रास्ते में आने वाले हरेक जंतु को उसने निगल लिया।

अर्जुन को तो सांप सूंघ गया था। पर आनंद का दिल उत्तेजित था। उत्तेजना उसकी आंखों में साफ चमक रही थी। वह फुसफुसाया, ''अर्जुन,देखो! हमारे नीचे धूल में पड़ा चमकता यह नागमणि सात राज्यों एवं सात राजाओं

के धन के बराबर है। हमें हर हाल में इसे पाना है।''

पलक झपकते ही आनंद पेड़ से कूद पड़ा। अपनी तलवार से उसने जल्दी-जल्दी धरती में एक गड्ढा बनाया। मणि को उसमें छिपाकर अपने नंगे पांव से उस पर पुनः मिट्टी डालकर जोरों से दबा दिया। उसके बाद तलवार को अनमोल गड्ढे के पास घोंपकर पेड़ पर आ बैठा।

सूर्यास्त के साथ जिस तरह दिन की रोशनी चली जाती है, उसी प्रकार जंगल का प्रकाश अंधकार बन चुका था। रात की कालिमा से भी ज्यादा घना। इतने में ही क्रुद्ध सांप सरसराता हुआ पेड़ तक आया। फन से पूंछ तक गुस्से में वह तड़प रहा था। उसकी लाल-लाल हिंस्र आंखें अंधेरे में चमक रही थीं। वह अपने मणि की तलाश में छटपटाते हुए उस पेड़ के चारों ओर चकरी मारे लहराता रहा। क्रोध से पागल सांप अपने भयानक पूंछ पेड़ एवं धरती पर फटकारता रहा। अपने शरीर से अनगिनत कुंडलियां बनाई एवं फंदा बनाया। फिर अपने दैत्याकार मुंह खोल अपनी ही पूंछ को निगल लिया। पर जैसे ही उसका फन तलवार से टकराया, उसका शरीर दो भागों में कट गया।

अर्जुन और आनंद एक दूसरे से सटे पत्थर के बुत बने बैठे रहे। सूर्य की पहली किरण फूटने तक वे एक-एक पल गिनते रहे। भयानक रात बीत चुकी थी। सांस थामे हुए आनंद ने नीचे देखा। वहां जहरीले खून में लथपथ, मरा हुआ सांप शिथिल पड़ चुका था।

कुछ क्षणों तक दोनों निःशब्द रहे। फिर खुशी से चिल्लाते आनंद ने पेड़ पर से ही नीचे छलांग लगाई। उसने मणि को धरती से बाहर निकालकर अर्जुन के हाथ पर रख दिया। खुशी से चिल्लाते हुए आनंद ने कहा, ''मेरे दोस्त, तुम सात राज्यों का वैभव अपनी हथेली पर रखो। आओ, हम इस मणि को चमकते झील के पानी में साफ करें। फिर यह मध्याह्न के सूरज की तरह चमकेगा।'' यह कहते हुए वह झील के किनारे भागा।

रात की भयावहता अब भी अर्जुन की आंखों में समाई थी। मणि को हाथ में कसकर पकड़े जैसे ही उसने बंद मुट्ठी पानी में डुबोई, पानी दो भागों में बंट ग.. । अंदर रत्नजड़ित तीर की तरह एक सुनहली सीढ़ी चमकी। और एक अजीब जादुई ताकत के प्रभाव में दोनों दोस्त झील की असीम गहराई में डूबते चले गए। अचानक वे गहरे चमकीले कोहरे की परत में घिर चुके थे। चकित होकर वे कुछ

देर वहीं खड़े रहे। धीरे-धीरे कोहरा छंटा, तो सामने था इंद्रधनुषी रंगों में नहाया एक मोतीमहल।

आश्चर्य एवं उत्तेजना से भरे अर्जुन एवं आनंद मोती-जड़ित दरवाजे से प्रवेश कर मूंगा के बने गलियारे एवं रत्न-जड़ित सभा-भवनों में टहलते रहे। चारों तरफ एक अजीब शांति एवं गम का मौहाल था। वे अचरज में थे कि 'वे कहां हैं? किस झील के तल में? किस दुनियां के अंत में?'

आनंद की नजर अचानक एक छोटे सुनहले द्वार पर पड़ी। उसमें रत्न-जड़ित चाबी भी लटक रही थी। 'क्लिक' की आवाज के साथ जैसे ही उसने चाबी घुमाई, दरवाजा खुल गया। अंदर मोतियों से बने परिधान में एक सुंदर कन्या एक विशाल शंख पर लेटी थी। उसकी आंखों में नींद समाई थी। उसका सुंदर सौम्य चेहरा चमक रहा था। ऐसा लगता था जैसे चांदनी, खिले हुए कमल को चूम रही हो। उसके चमकते बाल मोतियों से लटों में उसके टखनों तक झूल रहे थे। राजहंस की तरह उसकी गर्दन में लिपटा एक सांप सो रहा था।

नींद में लेटी उस कन्या की सुंदरता पर मुग्ध वे चुपचाप उसके समीप पहुंचे। अचानक अर्जुन के हाथ से नागमणि छूटकर उस कन्या की पलकों पर गिरा। लगा, जैसे चौंककर सोया हुआ सांप जग गया हो और चकरी खोलकर वह दूसरी ओर रेंग गया मानों कोई भयाक्रांत कीड़ा हो। अब तक उस कन्या की नींद खुल चुकी थी। सामने अपरिचितों को देख उसकी आंखें फटी रह गईं। डर के मारे वह चिल्लायी, "हे अजनबियों, तुम मृत्यु के द्वार पर क्यों आए हो? भागो, अपनी जान बचाकर भागो। मेरे पिता का मोतीमहल अब नागराज के अधीन है। उसने मेरे माता-पिता एवं भाई-बहनों को निगल लिया है। और अब मेरी बारी है।"

इस पर अर्जुन ने कहा, "हे, नवयुवती! अब डरने की कोई बात नहीं है। हमने नागराज को मारकर उसका मणि-युक्त मुकुट चुरा लिया है।" यह कहते हुए उसने नवयुवती के मोतियों-से सफेद हाथ पर मणि रख दी।
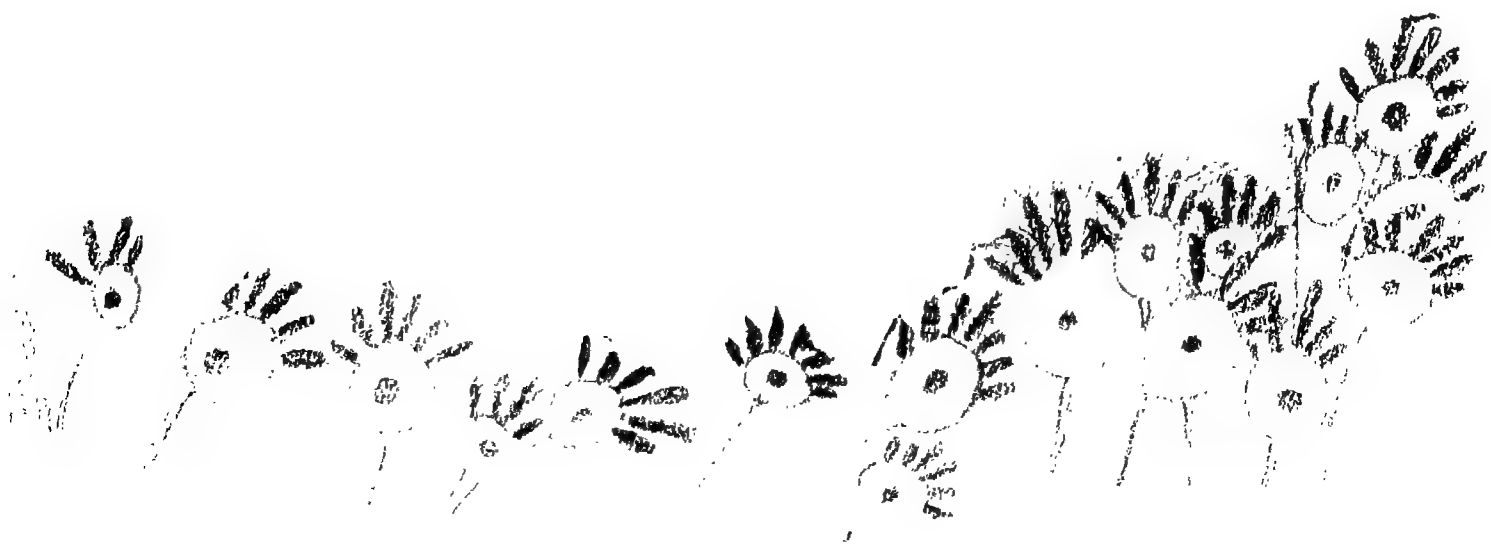
पर वह नवयुवती अर्जुन की बांह पकड़े खड़ी रही। उसे डर था कहीं अर्जुन एक सुंदर सपने की तरह गायब न हो जाए। फिर उसने कहा, "मणि को तुम अपने पास ही रखो। मैं अभी सपनों की दुनिया में खोई हूं। जागते ही मुझे पता चलेगा कि मैं सपना देख रही थी। और तब तक तुम भी जा चुके होंगे।"

अपनी लाल अंगूठी उस नवयुवती की कोमल अंगुली में स्नेहपूर्वक पहनाते हुए अर्जुन ने कहा, "तुम सपने में नहीं हो। मैं सचमुच यहां हूं। मैं तो तुमसे प्रेम करता हूं और विवाह रचाकर तुम्हें अपने पिता के महल ले जाना चाहता हूं। वहां हम दोनों की जिंदगी हमेशा प्यार एवं खुशी से भरी होगी।"

समय, पंख लगाकर उड़ता रहा। सब-के-सब काफी खुश थे। अर्जुन एवं आनंद ने कमल झील के तल में विद्यमान मोतीमहल तक की रहस्यमय यात्रा का वृत्तांत उस नवयुवती को सुनाया। उसने भी अपने पिता, मोतीमहल के राजा के बारे में सब कुछ बताया। कमल-झील की असीम गहराई में छिपी अकूत संपत्ति के संबंध में भी बताया।

तब एक दिन चिंतित होते हुए आनंद ने कहा, "अर्जुन, तुम्हारे पिता एवं उनकी प्रजा दुःखी होगी। उन्हें तुम्हारा कुछ भी पता नहीं है। तुम कब तक लौटोगे ...यह भी नहीं। उनके राज्य तक पहुंचने का रास्ता लंबा एवं खतरों से भरा है। फिर, हमारे पास घोड़े भी नहीं हैं। पर तुम यहीं रुको। मैं वापस जाकर राजा को अपनी रहस्यमयी यात्रा के बारे में बताता हूं। मोतियों वाली सुंदर राजकुमारी से तुम्हारे प्रेम की बात भी बताऊंगा। शीघ्र ही मैं हाथियों एवं घोड़ों के साथ अन्य लोगों को लिए वापस लौटूंगा। फिर तुम्हें एवं राजकुमारी को वापस तुम्हारे महल ले चलूंगा।"

इस तरह आनंद ने वापसी का दिन एवं समय निश्चित कर लिया। अर्जुन ने वादा किया कि वह राजकुमारी के साथ झील के किनारे नियत समय पर उसकी प्रतीक्षा करेगा। राजकुमारी से विदा लेकर आनंद चल पड़ा। अर्जुन हाथ में नागमणि लिए सुनहले सीढ़ी चढ़ते हुए आनंद को झील की सतह पर छोड़ गया।

एक क्षण दोनों मौन रहे। फिर दोनों अलग हो गए। दो चार कदम आगे बढ़ आनंद ठिठका, पीछे मुड़कर देखा और फिर दौड़ना शुरू कर दिया। अर्जुन वहीं खड़ा देखता रहा। धीरे-धीरे आनंद उसकी आंखों से ओझल हो गया।

कमल-झील के नीचे महल में अर्जुन एवं राजकुमारी का समय प्रेम का पंख लगाए उड़ता रहा। पर एक दिन, न जाने क्यों राजकुमारी ने अर्जुन की स्वर्ण मंजूषा

से नागमणि चुराकर उसके सहारे झील के सतह पर आ पहुंची।

ऊपर उसे सब कुछ प्रकाशित एवं जलता हुआ लगा। उसने तो पहले कभी दिन का प्रकाश देखा ही नहीं था। सूर्य की सुनहली किरण भी वह पहली बार देख रही थी। धरती एवं आकश की छटा पर मुग्ध वह झील के किनारे बैठ गई। सूरज की रोशनी में नहाए पहाड़ों एवं फूलों से भरे बागों को निहारती रही। चिड़ियों के मधुर संगीत में डूबी राजकुमारी उन्हें नाचते, फड़फड़ाते, उड़ते देखती रही। उनके छोटे-छोटे पदचिह्न रेत पर बनते रहे। अब राजकुमारी धीरे-धीरे दबे पांव बाग में टहलने लगी। सुगंधित फूलों के रंगों को निहारती वह अचानक ठिठक गई।

पेड़ों के नीचे से एक बूढ़ी कर्कश आवाज आई, "यह क्या है तुम्हारे हाथ में? इसकी चमक मेरी आंखों को चुंधिया रही है।"

राजकुमारी सकते में आ गई। इधर-उधर देखते उसकी नजर पेड़ के नीचे बैठी झुर्रियों वाली बूढ़ी महिला पर पड़ी। वह हरे एवं बैगनी रंग का शानदार परिधान बना रही थी, जो बिल्कुल मोर-पंख की तरह दिखता था।

बूढ़ी महिला के समीप जाकर राजकुमारी ने पूछा, "मोती जड़े मेरे इस परिधान के बदले जो पोशाक तुम बना रही हो वह दोगी।"

बुढ़िया ने जवाब दिया, "मैं जब तक इसमें किनारी नहीं लगा लेती तुम्हें रुकना होगा। हां, तब तक तुम झील के निर्मल जल में नहा सकती हो। नीले मोती से आकाश में सूर्य की नाचती किरणों को देख सकती हो।"

राजकुमारी ने बिना कुछ सोचे-समझे उस मणि को पेड़ के नीचे रख दिया। फिर झील की ओर बढ़ते हुए जैसे ही एक बार पीछे मुड़कर देखा, बुढ़िया मणि के साथ गायब हो चुकी थी। राजकुमारी बुढ़िया को पेड़ों के नीचे एवं झील के चारों ओर ढूंढती रही, चिल्लाती रही। पर सब व्यर्थ...। डर से बदहवास वह झील की ओर भागी। झील का पानी अब अथाह एवं काला दिख रहा था। वह झील के किनारे सिर पकड़े बैठी रही, सुबकती रही। उसके गोरे गालों पर आंसू की बूंदें लुढ़क गईं।

उसी समय फूलों वाले बाग का राजा वहां से गुजरा। उसने घोड़ा रोककर राजकुमारी से पूछा, "हे सुंदरी, तुम क्यों रो रही हो?" राजकुमारी ने सिर उठाकर डबडबाई आंखों से उसकी ओर देखा। फिर उसने बुढ़िया द्वारा उस मणि चोरी की बात सुनाई, जिसके बिना झील के नीचे अपने महल में उसका वापस जाना असंभव था।

इस पर राजा ने कहा, "अपने आंसू पोंछ लो। फिर मेरे महल चलो। मेरे
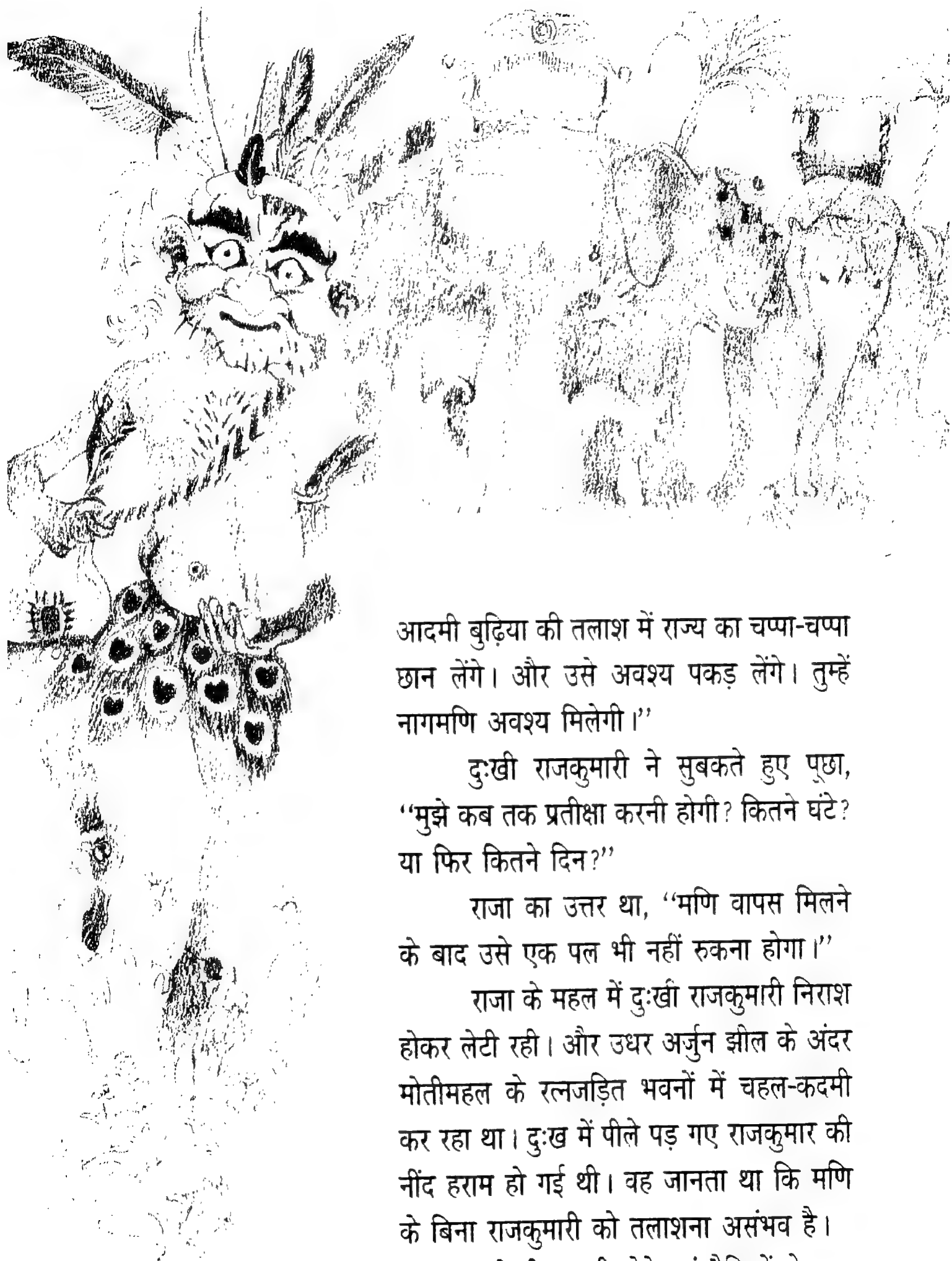
आदमी बुढ़िया की तलाश में राज्य का चप्पा-चप्पा छान लेंगे। और उसे अवश्य पकड़ लेंगे। तुम्हें नागमणि अवश्य मिलेगी।''

दुःखी राजकुमारी ने सुबकते हुए पूछा, ''मुझे कब तक प्रतीक्षा करनी होगी? कितने घंटे? या फिर कितने दिन?''

राजा का उत्तर था, ''मणि वापस मिलने के बाद उसे एक पल भी नहीं रुकना होगा।''

राजा के महल में दुःखी राजकुमारी निराश होकर लेटी रही। और उधर अर्जुन झील के अंदर मोतीमहल के रत्नजड़ित भवनों में चहल-कदमी कर रहा था। दुःख में पीले पड़ गए राजकुमार की नींद हराम हो गई थी। वह जानता था कि मणि के बिना राजकुमारी को तलाशना असंभव है।

इसी बीच हाथी-घोड़े एवं सैनिकों के साथ नियत समय पर आनंद झील के पास पहुंचा। पानी पर टकटकी लगाए वह इंतजार करता रहा। उसे हर पल लगता कि अर्जुन एवं राजकुमारी प्रकट होंगे। इंतजार

करते-करते वह झल्ला गया। चिंता की रेखा उसके माथे पर झलकने लगी। वह चकित था, आखिर वादा कर दोनों क्यों नहीं आए।

अचानक बाग के दूसरी तरफ से हंसने की आवाज आई। हवा में उसकी खनक देर तक लहराती रही। साथ ही हवा के झोंके से टनटनाती घंटियों की आवाज बाग के ऊपर गूंजती रही। अब घोड़ों ने हिनहिनाना शुरू कर दिया। और हाथियों ने चिंघाड़ना...। उपस्थित लोगों ने आवाज की दिशा में देखा। उधर से एक मसखरा दिखने वाला आदमी आ रहा था। मोर के पंखों से बना एक घाघरा पहने उस आदमी के सिर पर रंग-बिरंगे पंखों से बना मुकुट था। उसके पांवों में घुंघरुओं का गुच्छा बंधा था। और फूलों वाले बाग में वह झूमता हुआ नाच रहा था और चक्कर लगा रहा था।

अचानक वहां चुप्पी छा गई। वह अजीब इंसान बिल्कुल स्थिर हो गया था। वह खड़े-खड़े उन घोड़ों एवं हाथियों को देख रहा था। फिर चक्कर लगाकर वह उछलने लगा और चिल्लाया, "हीरा है, मेरे पास एक बड़ा हीरा है। मुझे एक हाथी दो मैं यह हीरा दे दूंगा।" इसके साथ ही वह अपनी फटी-पुरानी थैली से एक चमकता हीरा निकाल लिया।

आनंद को नागमणि पहचानते देर नहीं लगी। उस मसखरे के हाथ से मणि झपटते हुए आनंद ने पूछा, "यह हीरा तुम्हें कहां मिला?"

"मेरी मा ने मुझे दिया" अपनी खीसें नीपोड़ते हुए उसने कहा।

फिर बेचैनी से आनंद ने पूछा, "तुम्हारी मां कहां है?"

इतना सुनना था कि वह इंसान खुशी से ताली पीटने लगा। फिर बेवकूफों की तरह हंसते हुए कहा, "मेरी मां? ओ...मेरी मां? वह तो मर गई। मर गई, मर...गई।"

अब आनंद ने चिल्लाते हुए कहा, "अब यह हाथी लो और जाओ।"

खुशी से चिल्लाता वह सनकी मसखरा हवा में उछला और चकरघिन्नी की तरह घूमता हुआ हाथी की पीठ पर धम्म से जा बैठा। फिर गाते हुए चल पड़ा :

मैं राजा, एक राजा, बलशाली राजा।
मूर्खों एवं मसखरों के राज्य का मैं राजा,
आसमान के धुंधलाते ही, भाग्य देवी के झुंझलाते ही!
हंसूं, खुश हो मैं गाऊं गीत, और बजाऊं बाजा।

मैं राजा, एक राजा, बलशाली राजा।
अपने गुलाबी हाथी पर मैं सवार,

गाते, झूलते जैसे मदमस्त बयार।
छोटे गोरैये की मुझे तलाश, दुल्हन बनाता उसे मैं काश!
साथ-साथ हम गाते-नाचते, आता खूब मजा,
मैं राजा, एक राजा, बलशाली राजा।

आनंद के दिमाग में हजारों शंकाएं उठ रही थीं। एक क्षण के लिए वह रुका ... बिल्कुल शांत। दरअसल वह दिमाग शांत करना चाहता था ताकि कुछ निर्णय ले सके।

सैनिकों को अपने वापसी तक झील के किनारे रुकने का आदेश देते हुए वह नागमणि हाथ में लिए घुटनों के बल बैठ गया। मणि वाले हाथ को पानी के अंदर ले जाते ही पानी पुनः अलग हो गया एवं रत्नजड़ित सुनहली सीढ़ी उभर आई। आनंद नीचे उतरता चला गया। पानी ने एक रेशमी लबादे की तरह उसे ढंक दिया।

शंकाओं से घिरा आनंद, दम साधे, मोतीजड़ित दरवाजे को पार कर मूंगा से बने गलियारे में पहुंचा। उसे रत्नजड़ित भवन में बदहवास, चहल-कदमी करता अर्जुन मिला।

आनंद ने हांफते हुए पूछा, "अर्जुन, तुम राजकुमारी के संग झील के किनारे क्यों नहीं आए? राजकुमारी कहां है?" अर्जुन ने सब कुछ बता दिया। पर उसे राजकुमारी एवं नागमणि के बारे में कुछ भी पता नहीं था।

फिर एक पल भी गंवाए बिना वे उस मणि के साथ सीढ़ी चढ़कर ऊपर आ गए। झील के किनारे पहुंचते ही उन्होंने लोगों की एक भीड़ देखी। उसमें सेवक, संतरी, सैनिक एवं अन्य लोग खड़े थे और चिल्ला रहे थे :

"मोतीमहल की राजकुमारी की एक मणि खो गई है। आपने देखी है...?"

उत्तेजित आनंद ने उनसे पूछा, "कहां है कमलझील की राजकुमारी?"

"मेरे राजा की मेहमान है, उनके महल में रहती है" एक सैनिक ने कहा।

"चलो, महल की ओर चलें" कहता हुआ आनंद

एक घोड़े पर सवार होकर सरपट भागा। पीछे हाथी पर सवार अर्जुन था। और लोग भी चल पड़े।

हाथियों, घोड़ों एवं लोगों का जुलूस अपने महल की ओर आते देख फूलों वाले बाग के राजा ने पूछा, "यह कौन शाही मेहमान है, जो मुझसे मिलने आ रहा है?"

तभी आनंद घोड़े पर से उतरा। और राजा के सामने झुकते हुए निवेदन किया, "हे दयालु राजा! मेरे राजकुमार मोतीमहल की राजकुमारी को लेने आए हैं। दयालुता के लिए वे आपको धन्यवाद देना चाहते हैं।"

राजा ने अर्जुन का स्वागत कर तुरंत राजकुमारी को उसके आने का संदेश भिजवाया।

दुःख से सिर झुकाए राजकुमारी धीरे-धीरे राजा के समीप पहुंची। आंखें ऊपर उठाते ही वह धीमे स्वर में बोली, "अर्जुन...आनंद! सचमुच तुम दोनों ही हो। या मैं सपना देख रही हूं।"

अर्जुन उसके दोनों हाथ पकड़कर चूमता रहा। आनंद ने उसके पास जाकर, वह मणि उसके सुपुर्द कर दी।

अर्जुन ने राजा को एक बार फिर धन्यवाद दिया। उन्हें अपने पिता के राज्य में आने का निमंत्रण भी दिया। फिर वे सभी घर वापसी की लंबी यात्रा पर निकल पड़े। जंगलों से गुजरते, पर्वतों को लांघते, वे बढ़ते रहे। राजकुमारी की आंखें अभी भी स्वप्निल थीं। आह भरते हुए उसने कहा, "मेरे लिए यह सब एक सपने की तरह है। वह सपना जिसे मैं कब से देखती रही हूं।"

बस हुई कहानी खतम यहीं
ढलता सूरज हो चला लाल
मुंद गईं फूल की पंखुड़ियां
चुपचाप शाम आ गई द्वार

धीरे-धीरे बढ़ रही शाम
सो गए नींद से पंछी दल
झिल-मिल तारे चमके नभ में
तिल-तिल, क्षण-क्षण, पल-पल, पल-पल

यह छिपा चांद भी आ पहुंचा
भर रात करेगा करामात
अब हो गई गहरी रात-रात,
सो जा बच्चे, बस हुई बात।

मोती-चंद्र के फूल

बहुत दिन पहले की बात है। एक दयालु एवं महान राजा था। उसकी सात सुंदर रानियां थीं। वह एक सुनहले महल में रहता था। मोती एवं पन्ना से जड़ा वह महल दिन रात चमकता था।

दुनियां की सारी बुद्धिमानी उस राजा के पास थी। कुबेर के खजाने की तरह उसका खजाना अनमोल रत्नों से भरा होता। उसका अस्तबल शानदार जंगी घोड़ों एवं बलशाली हाथियों के लिए प्रसिद्ध था। उसके पास वफादार सैनिकों की एक विशाल सेना थी। राज्य में योग्य एवं बुद्धिमान राजनेता थे। और जनता संतुष्ट एवं खुश थी। कोई राजा, भला और क्या चाहता?

परंतु इतना सब रहते हुए भी राजा की स्थिति दयनीय थी। कहने को तो उसकी सात सुंदर रानियां थीं, पर बच्चा एक भी नहीं। यही गम राजा को सालता रहता था। रानियां एवं प्रजा भी दुःखी थी। उनसे राजा का गम देखा नहीं जाता।

एक दिन पौ फटते ही सातो रानियां नदी में स्नान करने निकलीं। सितारे कब के डूब चुके थे। सवेरा अपनी आंखें मलते हुए उषा किरण के स्वागत में आकाश का द्वार, पूर्व में खोल रहा था। नदी तट पर पहुंचते ही रानियों ने देखा कि एक इंद्रधनुषी कुहासा मंडराते हुए उनकी ओर आ रहा है। ऐसा लगता था जैसे एक रेशमी परदा हवा के साथ लहरा रहा हो। कुहासे से धीरे-धीरे मोतियों-से बूंद बरसने लगे। फिर उसमें से एक ठिगना बूढ़ा प्रकट हुआ। उसकी चांद से बनी रूपहली दाढ़ी फहराती हुई नदी के पानी तक जा पहुंची। अब तो रानियों के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा।

प्रातः बेला की मंद-मंद हवा-सी आवाज में उस बूढ़े ने सबसे बड़ी रानी से कहा, ''यह जड़ी-बूटी लो। इसे पीसकर लेई बना लेना। उसे सात बराबर हिस्सों में बांट लेना ताकि हरेक को एक हिस्सा मिले। फिर उसे गुलाब के अर्क में मिलाकर, भगवान का ध्यान कर पी लेना। तुम में से प्रत्येक एक सुंदर राजकुमार

को जन्म दोगी।" इतना कहकर वह बूढ़ा ओस की बूंद की तरह गायब हो गया। सातों रानियां शीघ्र ही महल वापस लौट चलीं। उनका चेहरा खुशी से चमक रहा था।

महल पहुंचते ही सबसे बड़ी रानी ने सबसे छोटी दो रानियों से कहा, "जल्दी से मंदिर जाकर फूल एवं फल चढ़ा आओ। तब तक हम जादुई जड़ी-बूटी को पीसकर लेई बनाते हैं। तुम दोनों के वापस आने पर उसे बराबर-बराबर बांटकर भगवान से प्रार्थना करेंगे कि हम सबको एक-एक संतान हो।"

सबसे छोटी दोनों रानियां शीघ्र ही मंदिर से वापस आईं। वे खुशी से फूली न समा रही थीं। पर उनकी खुशी शीघ्र ही दुःख में बदल गई। बड़ी रानियों ने मिलकर जादुई जड़ी बांट ली थी। उन दोनों के लिए कुछ भी नहीं बचा था।

सबसे छोटी रानी तो फूट-फूटकर रो पड़ी। पर उससे बड़ी ने ढाढस बंधाते हुए कहा, "बहन, अपने आंसू पोछ लो। आओ, हम संगमर्मर के उस सिल को धोते हैं जिस पर जड़ी को पीसा गया है। फिर उस 'धावन' को गुलाब के अर्क में मिलाकर प्रार्थना करते हुए पी लेंगे।"

नौ पूर्णमासी एवं अमावस्या के बाद पांचों बड़ी रानियों ने एक-एक लड़कों को जन्म दिया। उनकी सुंदरता देखते ही बनती थी। राजा की खुशी का कोई ठिकाना नहीं था। उसने उन रानियों को उपहार में ढेर सारे स्वर्णाभूषण दिए। पूरे राज्य में गरीबों को भोज दिया गया। सोने-चांदी के सिक्के लुटवाए गए। चारों ओर खुशी एवं संगीत का माहौल था। लोग खुशी से नाच-गा रहे थे। उनका राजा अब बहुत सुखी था।

"पर सबसे छोटी दोनों रानियों का क्या हुआ...?" बेचारी रानियां! उनमें से एक ने बंदर को जन्म दिया। तो दूसरे ने उल्लू को। क्षुब्ध एवं लज्जित राजा ने अपने दो विश्वासपात्र सेवकों को आदेश दिया कि वे उन दोनों रानियों को अभागे बच्चों के साथ महल से दूर घने जंगल में छोड़ आएं।

समय के साथ महल में पले ये राजकुमार सुंदर एवं बहादुर बने। उन्होंने अड़ियल घोड़ों को लगाम देने की कला पाई। तलवारबाजी में निपुणता प्राप्त की। सरपट भागते हिरण को एक तीर से धराशायी करने में भी उन्हें महारत हासिल थी।

उधर बीहड़ में बंदर एवं उल्लू भी बड़े हो रहे थे। जानवरों की संगत में उन्होंने भी दहाड़ना, चिंघाड़ना, गुर्राना और हुआं-हुआं करना सीख लिया। दिन भर

वे शीतल, हरे बागों में खेलते, सूरज ढलते ही थके-मांदे वापस आते और गहरी नींद में सो जाते। बंदर अपनी मां की गोद में और उल्लू अपनी मां की बांह पर।

एक दिन पांचों राजकुमार सेवकों के साथ शिकार के लिए जंगल गए। वहां सूर्य की किरणें पेड़ों की झुरमुटों से छनकर धरती पर प्रकाश एवं छाया का मनोरम दृश्य बना रहे थे। पत्तियां इधर-उधर बिखरी पड़ी थीं। इतने में सबसे बड़े राजकुमार को भयभीत होकर भागता एक हिरण दिख गया। तुरंत उसने तीर निकाल निशाना साध लिया।

तभी पेड़ के ऊपर से सहमी हुई एक आवाज आई, "हे दयालु राजकुमार! हम प्रार्थना करते हैं, हमारे निर्दोष मित्र को नहीं मारो।"

चौंककर राजकुमार ने ऊपर देखा जहां एक बंदर एवं एक उल्लू बैठे थे। उनकी आंखें भर आई थीं। अचंभित राजकुमार ने अपने सेवक से पूछा, "क्या यह संभव है? भला कोई जंगली जानवर मनुष्यों की तरह बोल सकता है।" इस पर सेवक ने नजरें झुकाए हुए कहा, "इस दुनियां में कुछ भी संभव है, राजकुमार! यह बंदर एवं उल्लू भी आपके पिता की संतान हैं।"

"क्या?" गुस्से में चीख पड़ा राजकुमार। "तुम्हारा मतलब है कि ये नीच जंगली जानवर मेरे भाई हैं? मैं, उच्च कुल का एक राजकुमार, अभी प्रतिज्ञा करता हूं कि उनका वध किए बिना महल नहीं जाऊंगा।" फिर अन्य राजकुमारों की ओर मुड़ते हुए उसने कहा, "भाइयो, आओ। हम इन दो जंगली जानवरों का वध कर दें, जो संभवतः हमारे ही भाई हैं।"

किंतु तब तक बंदर एवं उल्लू गायब हो चुके थे। राजकुमारों एवं सेवकों ने उन्हें बहुत ढूंढा पर व्यर्थ :

जहां-जहां गई उनकी नजर,
डाल-डाल, और पेड़-पेड़ पर।
कोना-कोना छान मारा, और,
छूटी न एक गुफा, न एक सरोवर।
इधर देखा, उधर देखा,
ऊपर देखा, नीचे देखा,
पर दोनों की कोई न थी रूप-रेखा।

रात होते ही घोड़ों को बेतहाशा भगाते हुए पांचों राजकुमार वापस महल आए।

उधर बंदर एवं उल्लू भी अपनी झोपड़ी

पहुंचे। परंतु उस रात जब उनकी मांएं सो गईं तो वे झोपड़ी से बाहर निकल आए। एक लंबी चुप्पी तोड़ते हुए बंदर ने कहा, ''ऐ भाई, यह तो पता चल गया कि हम भी उच्च कुल में जन्मे राजकुमार हैं!''

एक दिन नगाड़े की जोरदार आवाज से जंगल की शांति भंग हो गई। एक अज्ञात राज्य से आए कुछ संदेशवाहक सूचित कर रहे थे कि एक विशिष्ट राजकुमारी को वर की तलाश है। राजकुमारी की आंखें कमल की तरह सुंदर एवं बाल बादलों की तरह काले हैं। पर संदेशवाहकों का कहना था कि वह उसी बहादुर राजकुमार से विवाह करेगी जो उसे ढूंढ निकालेगा और उसके बालों में से मोती-चंद्र का फूल चुरा सकेगा।

हालांकि किसी को भी न तो राजकुमारी का पता था और न ही उसके राज्य का। पर हरेक राज्य का प्रत्येक राजकुमार उसे ढूंढ निकालने चल पड़ा।

हमारे पांचों राजकुमार भी कहां पीछे छूटने वाले थे। सुनहले नाव में चांदी का पाल लगाकर राजकुमारी की तलाश में निकल पड़े।

इस विचित्र खोज की बात बंदर के कानों तक पहुंची। फुसफुसाते हुए उसने भाई से कहा, ''अब, जब हम जान चुके हैं कि हम भी उच्च कुल में जन्मे राजकुमार हैं, क्यों न हम भी अज्ञात देश की राजकुमारी की खोज में चलें।'' इस तरह बंदर एवं उल्लू भी नारियल की खोपड़ी को अपनी नाव बनाकर उसमें सवार होकर चल पड़े। वे रास्ते में खुशी से गाते रहे :

लो, चले हम भी, मैं और मेरा प्यारा भाई,
ऊपर आसमान है, नीचे सागर की गहराई।
अनजान देश में राजकुमारी है एक अनजाना,
फूल चुराकर उसके बालों का, उसे है अपनाना।
बढ़ते चलेंगे हम, मैं और मेरा प्यारा भाई,
जीएं-मरें या फिर कुछ भी हो कठिनाई।

सुनहले नाव में तीस दिन एवं तीस रात की समुद्री यात्रा के बाद पांचों राजकुमार एक निर्जन टापू पर पहुंचे। वहां चारों ओर सूर्य की चमक तो थी, पर उजाला एवं गर्मी लेश मात्र भी नहीं थी। मीलों दूर तक धान के खेत थे पर दाना एक भी नहीं। बड़े-बड़े पेड़ थे पर उनमें फूलों-फलों का नामोनिशान नहीं था।

यह छल-कपट का टापू था। यहां तीन दुष्ट चुड़ैलें रहती थीं। पहली चुड़ैल के माथे पर बीचोंबीच एक आंख थी। तेजी से गोल-गोल घूमते हुए आंख से नीला-हरा अंगार निकल रहा था। दूसरी चुड़ैल के नाक के ऊपर की ओर मुड़े थे मानो जुड़वां चिमनियां हो। फूं-फूं की आवाज के साथ उनसे बैगनी धुंआ निकल रहा था। तीसरी चुड़ैल के सिर के पीछे एक विशाल कान था। वह किसी विशाल पंखे की तरह डोल रहा था, फड़फड़ा रहा था। उससे एक भीषण तूफान चल रहा था।

उन चुड़ौलों की नजर जैसे ही नाव में सवार पांच राजकुमारों पर पड़ी, उन्होंने अपने आंख, नाक एवं कान खोल दिए। उनसे अंगारे बरसने लगे, धुआं निकलने लगा। तूफान उठ खड़ा हुआ। पूरे आसमान में लपटें फैल गईं। हवा में जहरीला बैगनी धुंआ भर गया। समुद्र में हलचल मचा था। उसमें ज्वार के साथ झाग भर आया। पांचों राजकुमारों एवं सुनहले नाव को निगलने के लिए भीषण लहरें उठने लगीं।

कुछ देर बाद नारियल की खोपड़ी के नाव में सवार बंदर एवं उल्लू दिख पड़े। उन्हें देखते ही तीनों बड़ी चुड़ैलों की हंसी छूट गई। बंदर अपने पंजे से एवं उल्लू अपने पंखों से पानी काटते बहादुरों की तरह बढ़ जा रहे थे। इस दृश्य को देख चुड़ैलों की हंसी रुकने का नाम ही नहीं ले रही थी। उन्होंने निरा मूर्ख, निर्दोष एवं अहितकर जंतुओं को आगे जाने दिया।

अचानक नारियल की खोपड़ी वाली उनकी नाव एक समुद्रताल की ओर बह गई। वहां पानी बिल्कुल ठहरा हुआ था। उसकी गहराई रहस्यपूर्ण थी। इसीलिए बंदर ने नाव रोककर कहा, "अरे भाई, लगता है हम अपनी मंजिल, उस अनजान देश के समीप हैं। तुम यहीं ऊपर रुककर रखवाली करो। मैं गहरे रहस्यमयी पानी के अंदर गोता लगाता हूं। और देखता हूं कि वहां क्या है।"

इस प्रकार बंदर अथाह समुद्रताल में नीचे डूबता चला गया। अंदर ठंड बढ़ती जा रही थी। उसका खून जमने लगा था। उसे लगता कि उसकी कुल्फी जम जाएगी। अंदर का घुप्प अंधेरा एवं शांति उसे भयभीत करने लगी थी। उसने सपने में ... नहीं सोचा था कि वह इस तरह अकेला पड़ जाएगा, खो जाएगा। फिर अचानक उसने खुद को कांच के एक हरे पर्वत से घिरा पाया। देखते-देखते एक जोरदार लहर ने उसे जादुई पर्वत के ऊपर से बहाकर एक जादुई बागीचे में गिरा

दिया।

वहां हरे-भरे एक पेड़ के नीचे फूलों की सेज पर एक सुंदर कन्या लेटी थी। वह एक सुनहली चिड़िया से बात कर रही थी। उसके बालों में मोती-चंद्र का फूल देखते ही बंदर समझ गया कि अनजान देश की राजकुमारी वही है। वह चुपचाप, कांपते पंजे से, दम साधे राजकुमारी की ओर बढ़ने लगा। फिर एक झटके से राजकुमारी के बाल से मोती-चंद्र का वह फूल हासिल कर लिया। इतने में सुनहली चिड़िया ने :

बदहवास हो अपने पंख फड़फड़ाए।
चिल्लाई, "राजकुमारी, कहां गए,
बालों में गुंथे फूल तुम्हारे?"

चौंककर राजकुमारी ने सिर में अपना हाथ

फेरा और झट से पीछे मुड़कर देखा। वहां अपने कांपते पंजे में फूल थामे खड़ा था बंदर। राजकुमारी उसे देखते ही डर से चीख पड़ी। दूसरी ओर मुड़कर उसने अपना चेहरा दोनों हाथों में छिपा लिया। फिर सुबकने लगी। लेकिन भयभीत चिड़िया गाती रही :

मत रो, मत रो ऐ अच्छी राजकुमारी,
वचन तेरा जो टूटा, तू भी जाएगी मारी।

चिड़िया के दर्द भरे गीत सुन राजकुमारी की बहनें फूलों के बाग के पार से रोते हवा के संग वहां आ पहुंची। मोती-चंद्र के उस फूल को एक बंदर के रोएंदार पंजे में देख दुःख से उनका दिल बैठ गया और वे जार-जार रोने लगीं।

अचंभित बंदर वहां खड़ा रहा। उसके माथे पर बल पड़ रहे थे। दिल धौंकनी की तरह चल रहा था। अचानक एक बात बिजली की तरह उसके जेहन में कौंध गई, "मैंने भी तो सात समुद्र लांघने का दुस्साहस किया है। जल की अथाह गहराइयों में डुबकी लगाने का खतरा मोल लिया है। फिर, इनाम की दावेदारी में कैसा डर?"

अब बंदर का डर जाता रहा। पूंछ को हवा में लहराते वह उछलकर राजकुमारी के समक्ष जा पहुंचा। उसके काले घने बाल को सहलाते हुए कहा :

फूलों-सी सुंदर,
गीतों-सी सुरीली, ऐ राजकुमारी, छबीली।
बताओ, तेरे हैं और कौन?

इस पर आंसुओं को पोंछते हुए राजकुमारी ने धीमे स्वर में कहा :

छह बहनों वाली मैं, मेरा न कोई भाई,
कभी मैं थी लाडली माता-पिता की,
अब, मैं बस तेरी, मेरा न सगा न कोई।

अब बंदर और करीब आकर उसकी झील-सी गहरी आंखों में झांकते हुए फुसफुसाया :

कमलनयनी, प्रिय राजकुमारी!
पास आओ, मेरी दुल्हन बन जाओ।

...कुमारी कुछ जवाब देती उससे पहले ही सबसे बड़ी बहन चिल्ला उठी :

नहीं! नहीं! नहीं!
वह जा सकती नहीं!

भला हो या बुरा, हम पर है शाप पड़ा
सुंदर सातो बहनें हम,
समुद्रराज के मानते कहने हम।
बिना उसकी मर्जी के वह
जा सकती नहीं, नहीं! नहीं!
कहीं नहीं, कहीं नहीं!

फिर एक कुटिल मुस्कान लिए उसने बंदर से कहा, "मेरे पीछे आओ। मैं तुम्हें समुद्रराज की गुफा दिखाती हूं।" डर से बंदर का दिल बैठने लगा। पर वह उस राजकुमारी के पीछे चल पड़ा। पथरीली, चट्टानी राहों से होकर दरारों से निकलकर वे एक भयानक, भूरे रंग की गुफा के पास पहुंचे। वहां मूंगा का एक खड़ा चट्टान था। उसके अंदर एक संकरा मार्ग जा रहा था। यही भव्य मूंगा की गुफा का मार्ग था। उसी की ओर इंगित करते हुए वह राजकुमारी बोली, "मूंगे के उसी विशाल गुफा में सात समुद्र के राजा का निवास है।" यह कहकर राजकुमारी ने विदा ली और हवा में लुप्त हो गई।

वह उत्साहित बंदर जैसे ही गुफा में पहुंचा उसके पांव फिसले और वह धड़ाम से गिरा। सहसा गुफा का द्वार बंद हो गया। अंदर घुप्प अंधेरा हो गया। बेचारा अकेला बंदर हांफता हुआ रोशनी के लिए प्रार्थना करने लगा। उसके शरीर की एक-एक हड्डी, एक-एक जोड़ दुःख रहा था। और बंदर को बचने की उम्मीद नहीं लग रही थी।

पर उसी क्षण एक अचरज घटित हुआ। ऐसा लगा कि सूर्योदय की किरणें मूंगे की गुफा को बेधती हुई अंदर आ रही हों। रोशनी देख बंदर की आंखें चमक उठीं। उसने गुफा के बाहर एक नाटा बूढ़ा देखा। उसकी बड़ी सफेद दाढ़ी चमक रही थी। मानो काले बादल में बिजली चमक रही हो। प्रातःकाल की शांत हवा से स्वर में उसने बंदर से कहा :

"मेरे साथ आओ। मैं तुम्हें मंजिल तक पहुंचा दूंगा।"

यह सब एक स्वप्न की तरह लग रहा था। पर बिल्कुल सच था। स्तब्ध बंदर उसी बूढ़े के पीछे चल दिया। जीर्ण-शीर्ण छत वाली उस गुफा से निकलकर, कांटेदार जंगल होते हुए वे एक जादुई बागीचे में पहुंचे। वहीं फूलों वाले एक पेड़ के नीचे बैठकर छह बड़ी राजकुमारियां बंदर की दुर्दशा पर हंस रही थीं। पर सबसे

छोटी राजकुमारी एकांत में बंदर की सुरक्षा के लिए प्रार्थना कर रही थी। उसके हाथ में कमल के फूलों की कलियों की एक माला थी।

उस बूढ़े नाटे आदमी के पैर जैसे ही बागीचे में पड़े, समुद्र में लहरें हिलोरें लेने लगीं। लहरों में ही पांचो खोए राजकुमार अपने सुनहले नाव में सवार दिख गए। नारियल की खोपड़ी वाले नाव में बैठा उल्लू भी दृष्टिगोचर हुआ। अब बादल की भांति उड़ता हुआ वह बूढ़ा अथाह जलराशि पारकर उन राजकुमारों एवं उल्लू को वापस ले आया। फिर उसने बंदर एवं उल्लू को अपनी बाहों में भर जादुई शक्ति जगाने के लिए ध्यानमग्न हो गया। देखते-देखते दोनों जंगली जानवर खूबसूरत राजकुमार में परिवर्तित हो गए। उनका चेहरा सौम्य था। उनकी सुंदरता देखते ही बनती थी।

अब रहस्योद्घाटन करते हुए उस बूढ़े ने कहा, "तुम सात राजकुमारों का जन्म जादुई वरदान से हुआ था। और इन सात राजकुमारियों का जन्म भी तुम लोगों की रानियां बनने के लिए ही हुआ है। पर किस्मत ने एक अजीब खेल दिखाया। दोनों छोटे राजकुमारों को जानवर बना दिया, ताकि वे इन सातों अभिशप्त राजकुमारियों को शापमुक्त करा सकें। पर अब जादू टूट चुका है। इसलिए खुशियां मनाओ। परंतु पहले दोनों निर्वासित रानियों को जंगल से वापस ले आओ। तब सुंदर दुलहनों के साथ अपने पिता के राज्य में वापस चले जाओ।"

यह कहकर प्रातःकालीन ओस की बूंद की तरह वह बूढ़ा गायब हो गया। सातों राजकुमार अपनी-अपनी दुलहनों के साथ सुनहले नाव में बैठकर चांदी का चप्पू चलाते सात समुद्र पार से वापस आ गये।

बस हुई कहानी खतम यहीं
ढलता सूरज हो चला लाल
मुंद गईं फूल की पंखुड़ियां
चुपचाप शाम आ गई द्वार

धीरे-धीरे बढ़ रही शाम
सो गए नींद से पंछी दल
झिल-मिल तारे चमके नभ में
तिल-तिल, क्षण-क्षण, पल-पल, पल-पल

यह छिपा चांद भी आ पहुंचा
भर रात करेगा करामात
अब हो गई गहरी रात-रात,
सो जा बच्चे, बस हुई बात।

मोर के पंख

बहुत पहले की बात है। गगनचुंबी पर्वतों से घिरी घाटी में एक प्राचीन नगर था। विश्व का यह सुंदरतम नगर, धन-संपदा में भी बेजोड़ था। इस घाटी में एक नदी बहती थी। उसकी चमक आसमान में बिजली की चमक के समान थी। यह नदी लहराते हुए कमल के फूल से भरे झील में गिरती थी। ऐसा दृश्य बनता मानो पन्नों का द्वीप एक रूपहले बादल पर इतरा रहा हो।

नदी के पार एक विशाल भवन था। उसमें एक धनी व्यापारी अपनी तीन सुंदर बेटियों के साथ रहता था। व्यापारी की तीनो बेटियां इतनी सुंदर एवं सुशील थीं कि वह उन्हें बहुत प्यार करता था। उनके लिए दुनियां की सारी खुशी जुटाता—खेलने की सुनहली गुड़िया, जिसकी पन्ना-सी आंखें खुलतीं-बंद होतीं; मनमोहक गीत गाने वाली जादुई चिड़िया; और फिर सपनों वाली नाव जो उन्हें परियों की रहस्यमय दुनियां की सैर कराती।

वैसे तो व्यापारी अपनी बेटियों से सचमुच बहुत प्यार करता पर उसे खुद से कहीं ज्यादा लगाव था। और अपने आपसे भी अधिक प्यार उसे अपनी दौलत से था।

एक दिन व्यापारी ने अपनी बेटियों को बुलाकर पूछा, ''प्यारी बेटियो, मुझे बताओ तुमलोग किसके भाग्य से यहां दुनियां का सारा सुख भोग रही हो।''

इस पर सबसे बड़ी लड़की ने कहा, ''पूज्य पिताजी, मैं आपके भाग्य से ही ऐसी सुंदर जिंदगी गुजार रही हूं।''

दूसरे ने पिता का माथा चूमते हुए जवाब दिया, ''मेरे दयालु पिताजी आपके भाग्य से ही मेरी जिंदगी खुशी से निहाल है।''

पर तीसरी लड़की ने व्यापारी की आंखों में झांकते हुए कहा, ''पिताजी, मैं तो अपने भाग्य के बदौलत जी रही हूं।''

यह सुनते ही व्यापारी गुस्से से बिफरते हुए बोला, ''एहसानफरामोश! तुम्हें

आज ही, न केवल मेरा घर छोड़ना होगा बल्कि वे सारे कीमती उपहार भी त्यागने होंगे जो मैंने तुझे दिए। फिर मैं देखता हूं तुम कैसे अपने भाग्य के भरोसे रहती हो।''

बेचारी छोटी लड़की ने अपने आंसू पोछते हुए निवेदन किया, ''पिताजी, मैं आपकी आज्ञा का पालन करूंगी। पर मेरी एक विनती है। कृपाकर मुझे सूई-धागा वाला डब्बा ले जाने दीजिए।'' व्यापारी ने उसकी यह इच्छा पूरी कर दी। और उस लड़की को नगर से दूर पर्वतों के पार जंगल में भेज दिया।

पर जंगल से तो उसे पहली नजर में ही लगाव हो गया। कल-कल कर गाती नदी के साथ झूमते बड़े-बड़े घने, हरे पेड़ उसके मन को भा गए। काई से ढंकी चट्टानों की दरारों में सितारों की तरह गुलचांदनी का फूल चमक रहा था। वहीं बैगनी फूल इस तरह खिले थे मानो लजा रहे हों। नीलकंठ के उड़ते ही उसे लगा कि आसमान में बिजली चमक पड़ी है। फिर सम्मोहित हो वह लड़की रंग-बिरंगी तितलियों के पीछे चलती गई। पर जैसे ही उसने कठफोड़वा के चोंच की लयबद्ध टक-टक की आवाज सुनी उसने तो नाचना शुरू कर दिया। परंतु जैसे ही सूर्यास्त की लाली मद्धम पड़ने लगी और अंधेरा बढ़ने लगा, उसे घर की याद सताने लगी। उसके अपने पिता एवं बहनें सब वहीं थीं। अपना खूबसूरत नगर बार-बार उसकी आंखों के सामने घूम जाता। जंगल की अजीब शांति अब उसे काटने लगी थी। उसकी सारी खुशियां अंधेरे में खो गई थी। और वह एक विशाल हरे पेड़ के नीचे बैठकर फूट-फूटकर रोने लगी।

छोटी लड़की को इस तरह रोती देखकर वह विशाल वृक्ष दुःख से हिलने लगा। उसे जंगल की भयानक रात का पता था। सो उसने फुस-फुसाकर कहा, ''ऐ प्यारी बच्ची, कुछ देर में ही जंगली जानवर अपनी मांद से निकलकर शिकार की तलाश में घूमेंगे। वे देखते ही तुम्हें निगल लेंगे। पर घबराओ नहीं। मैं तुम्हारी रक्षा करूंगा। तुम जैसे ही मेरे तना को खुलते देखो, उसमें अंदर घुस जाओ। फिर मैं तुम्हें चारों तरफ से घेर लूंगा। और तुम रात भर सुरक्षित रहोगी।''

उसी क्षण तना खुला। लड़की अंदर समा गई। फिर तना उसके चारों ओर घिर गया।

अब जंगल में भूखे जानवर शिकार सूंघ रहे थे। मानव के लहू की गंध से बौराये वे उस पेड़ के इर्द-गिर्द चक्कर काटते रहे। वे दहाड़ते-गुर्राते एवं हुआं-हुआं करते रहे। पेड़ की तना पर जोर-जोर से पंजा मारकर उसकी छाल उधेड़ते रहे।

धीरे-धीरे पेड़ की तना में खांचा बन गया। उन्होंने उसकी शाखाएं तोड़ डालीं। पत्तियों को नोंच डाला एवं फलों को कुचल डाला। परंतु सूर्य की पहली किरण देखते-देखते जंगल में सब कुछ शांत हो चुका था। जानवर अपनी मांद में चले गए।

अब दयालु पेड़ ने लड़की से कहा, "सुनो, सूरज आसमान में चमक रहा है। जंगल में एक नया सवेरा हो चुका है। अब तुम निश्चिंत होकर बाहर आ जाओ।" बाहर आते ही उस लड़की ने पेड़ की दुर्दशा देखी। शाखाविहीन वह बेचारा पेड़ नुचे हुए पत्तों एवं फलों के टूट जाने के बाद बिल्कुल नग्न लग रहा था। इस पर दुःखी होती हुई लड़की ने कहा, "हे दयालु पेड़! मुझे खतरनाक जानवरों से बचाने के लिए आपने कितने कष्ट उठाए। मैं शोणित से लथ-पथ आपके तने पर गीली मिट्टी का लेप लगा देती हूं। इससे आपको राहत मिलेगी एवं घाव भर जाएंगे।"

लड़की गीली मिट्टी का मलहम स्नेहपूर्ण पेड़ के घावों पर लगाने लगी। कुछ देर में पेड़ ने उसे धन्यवाद देते हुए कहा, "मेरे घाव भर चुके हैं। मेरा दर्द अब जाता रहा। आओ, मेरे बगल के पेड़ का फल खाओ। और मेरी बात ध्यान से सुनो। इस जंगल के बीचोंबीच निर्मल जल वाला एक तालाब है। उसमें हजारों कमल खिले हैं। प्रति दिन एक मुट्ठी कमल का बीज चुनकर उसे तालाब के इर्द-गिर्द बिखेर देना। और शाम होते ही मेरे पास वापस आ जाना।"

पेड़ की बात का अर्थ लड़की नहीं समझ सकी। पर कारण जाने बिना ही वह तालाब के समीप गई। एक मुट्ठी कमल का बीज लिया और उसे वहीं चारों ओर बिखेर दिया। शाम ढलते-ढलते वह अपने घर, तना के अंदर वापस आ गई।

अगले दिन सवेरे वह लड़की फिर तालाब के पास गई। रास्ते में नीले-हरे मयूर के पंख बिखरे चमक रहे थे। दरअसल उस स्वादिष्ट बीज को खाने वहां हजारों शानदार मोर आए थे। उनमें बीज के लिए छीना-झपटी हुई। उन्होंने एक दूसरे पर चोंच मारी और पंख नोंच डाले। उनके जाते-जाते चमकते पंखों का एक मार्ग-सा बन गया था।

खुशी से उत्तेजित लड़की उन पंखों को चुनकर पेड़ की ओर दौड़ पड़ी। पेड़ भी खुश हुआ। झूमते हुए उसने कहा, "मेरी प्यारी बच्ची, अब इन पंखों को अपने सूई-धागा से सिलकर पंखा बना लो। तुम्हारे पास जब ऐसे सौ पंखे तैयार हो जाएं तो जंगल से बाहर जाकर गुजरते व्यापारियों को उन्हें बेच देना।"

अब वह लड़की प्रति-दिन तालाब के पास जाती एवं मुट्ठीभर बीज चुनकर

उन्हें आसपास बिखेर देती। फिर मोर के पंखों को चुनती और उनका गुच्छा लेकर वापस आ जाती। धीरे-धीरे उसके पास ढेर सारे पंख जमा हो गए। लड़की ने उनसे सैकड़ों उत्कृष्ट पंखे बनाए और व्यापारियों को बेचने चल पड़ी।

उन पंखों को अपने सामने करीने से सजाकर वह सारा दिन बैठी रही। अचानक उसकी नजर दूर छाई धुंध पर पड़ी। दूर-दूर तक फैले उस निर्जन रेतीली भूमि पर धूल का गुबार उड़ते देखा। शीघ्र ही ऊंटों का एक कारवां दृष्टिगोचर हुआ। धूल उड़ाते हुए यह जंगल के किनारे पहुंचा। वहां पहुंचते ही सभी ऊंट घुटनों के बल बैठकर नदी से पानी पीने लगे। और सुस्ताने लगे। उनके पांव थक गए थे। इतने में शरीर पर से धूल झाड़ता एक व्यापारी आगे आया और पूछा, "ऐ सुंदर लड़की! तुम्हारे ये पंखे तो अद्‌भुत हैं। क्या तुम इन्हें बेचोगी? मैं इनके बदले तुम्हें लाल रेशम का एक गट्ठर एवं फीरोजा एवं मोतियों से बना एक हार दूंगा।" लड़की यही तो चाहती थी। पंखों को बेचकर वह भागी-भागी पेड़ के पास पहुंची।

दया से भरा पेड़, उन सामानों को देखकर बोल पड़ा, "मेरी बच्ची, अब इस लाल रेशम से तुम अपने लिए एक लहंगा बना लो। उसे पहनकर तुम फीरोजा एवं मोती का वह हार गले में पहन लेना। तुम जंगल की रानी बन

जाओगी। तब मोर के ढेर सारे पंख जमा करना। उनसे हजारों वैसे ही पंखे बनाना। फिर जंगल के किनारे कारवां में जा रहे सौदागरों को ये पंखे बेच देना।''

उस लड़की ने हजारों पंखे बनाए, पहले से ज्यादा सुंदर। उन्हें जंगल के किनारे ले गई। एक बार फिर धूल का गुबार दिखा। और उसमें से निकलकर एक सौदागर उसके पास आया और कहने लगा, ''हे सुंदरी, मैं तुम्हारे लिए एक अच्छी खबर लाया हूं। मैंने तुम्हारे सब पंखे राजा को बेच दिए। वह वैसे ही सुंदर हजार पंखे और चाहता है।''

लड़की एक क्षण कुछ सोचती रही। फिर आंखों में चमक लिए उसने उत्तर दिया, ''अपने राजा से कह देना यदि वह ऐसे हजार पंखे चाहता है तो खुद आकर ले जाए।''

''मूर्ख लड़की'' आगबबूला होते हुए सौदागर ने कहा, ''तुम्हें पता नहीं निर्जन मरुस्थल पार करने का यह सफर लंबा और दुष्कर है। और आज तक किसी राजा ने इस वीरान मरुभूमि को पार नहीं किया है।''

''फिर भी, यदि तुम्हारा राजा पंखा खरीदना चाहता है तो उसे यहीं आना होगा''—यह कहते-कहते पंखों को समेटकर लड़की वापस जंगल में भाग गई।

कई दिन बीत गए। कारवां की वापसी का समय आ गया। लड़की ने अपने हाथ से बना लाल रेशम का लहंगा पहन लिया। ऊपर, गले में फीरोजा एवं मोतियों की माला भी पहन ली। फिर जंगल के किनारे अपने पंखों को करीने से सजाकर बैठ गई। फिर वही धूल का गुबार उड़ता हुआ नजर आया। लेकिन इस बार उसमें से प्रकट होने वाला और कोई नहीं बल्कि राजा ही था।

राजा को पहली नजर में सुंदरी से प्यार हो गया। उसकी सुंदरता आंखों में भरते हुए राजा ने कहा, ''सुंदर, अति सुंदर। इन हजार पंखों के बदले तुम क्या लेना पसंद करोगी?''

शर्माती हुई लड़की ने जवाब दिया, ''मैं आपकी रानी बनूंगी?'' इस पर राजा ने कहा, ''तब तुम मरुस्थल के पार मेरे राज्य में चलो। मैं तुमसे विवाह कर तुम्हें अपनी रानी बनाऊंगा।''

''पर मैं तो जंगल की हूं और यहीं रहूंगी। यदि तुम विवाह कर मुझे रानी बनाना चाहते हो तो तुम्हें यहीं मेरे लिए एक महल बनवाना होगा। और तुम्हें भी उसी में रहना होगा'' उस लड़की ने कहा।

राजा उस लड़की के प्यार में इतना डूब चुका था कि उसने तुरंत जंगल में, अपने एवं होने वाली रानी के लिए, शानदार महल बनाने का आदेश दिया।

आसपास के गांवों एवं शहरों के सैकड़ों लोगों को काम पर लगाया गया। जंगल की सफाई की गई। हजारों पेड़ काटे गए। किंतु उस ममतामयी पेड़ को किसी ने छुआ तक नहीं। उसी ने तो अब तक लड़की को सुरक्षा एवं प्यार दिया था। उसके चारों ओर हरे पत्थरों का विशाल महल देखते-देखते बन गया।

प्रेम में आनंदविभोर राजा ने उस लड़की से विवाह किया। उसके बाद राजा ने अपना सारा धन एवं अनमोल खजाना लड़की को सौंप दिया। फिर अपनी रानी को लेकर जंगल में बने महल की ओर चल पड़ा। यह देख ममतामयी पेड़ खुशी से झूम उठा। सुनहरे मार्ग पर चुनिंदा फूलों को बरसाकर उन दोनों को आशीर्वाद दिया।

बरसों बाद एक दिन रानी खिड़की से बाहर महल के उद्यान में झांक रही थी। उसकी

नजर गुलाबबाग में पानी पटाते एक बूढ़े पर पड़ी। फटे-पुराने वस्त्र पहने उस बूढ़े का चेहरा स्वाभिमानी था एवं वह कुलीन दिखता था। उसे देखते ही रानो को अपने पिता के वचन की याद आ गई। असमंजस में पड़ी रानी ने पास ही खड़े राजा से कहा "मेरे गुलाबों को पानी पटाता वह बूढ़ा तो काफी परिचित लगता है। उसकी शक्ल हू-ब-हू मेरे पिताजी की तरह है। पर यथार्थ यह है कि मेरे पिताजी एक संपन्न व्यवसायी हैं और एक राजसी भवन में रहते हैं। पर खैर, क्यों न हम उस बूढ़े को महल में बुलवाकर पूछें कि वह कौन है और कहां से आया है।"

बूढ़े को महल में आने का आदेश दिया गया। वह कांपते हुए महल के अंदर पहुंचा। अब तक उसे रानी की बातों की भनक नहीं थी। आशंका एवं डर से कांपता वह राजा के भवन में पहुंचा। झुककर उसने राजा का अभिवादन किया। जैसे ही उसने रानी को देखा वह चौंक गया और उसकी रुलाई फूट पड़ी। उसने बेटी को पहचान लिया था। सुबकते हुए उसने कहा, "मेरी बच्ची, सबसे छोटी बच्ची, तुम्हें घर से बाहर निकालने का पछतावा जो मुझे हुआ है उसका तुम अनुमान नहीं कर सकती। धन एवं दुनियावी वस्तुओं ने मुझे घमंड में अंधा बना दिया था।"

राजा भौंचक्का खड़ा सब देखता रहा। पर रानी ने कहा, "ये वाकई मेरे पिताजी हैं। यद्यपि इन्होंने मुझे घर से बाहर, दूर जंगल में भेज दिया, पर मैं इन्हें आज भी पहले की तरह ही प्यार करती हूं।"

रानी के दिल के घाव हरे हो आए। बीते दिनों की याद ने उसे मायूस कर दिया। बोलते वक्त उसे एक-एक शब्द बर्फ की भांति भारी लग रहा था। उसने पिता से पूछा, "आपका यह दुर्दिन कैसे आया कि आज आप मेरे दरवाजे पर खड़े हैं?"

कुछ पलों तक माहौल में चुप्पी छाई रही। सब कुछ बोझिल लग रहा था। अथाह वेदना एवं शर्म में डूबा बूढ़ा मानो कुछ कहने के लिए शब्द तलाश रहा हो। एक-आध लंबी सांस लेते हुए उसने अपनी व्यथा सुनाई, "मेरी प्यारी बच्ची, मैंने अपनी सारी धन-संपत्ति खो दी। मैं दरिद्र हो गया। फिर लज्जावश उस नगर से दूर जाकर, जंगल में रात-दिन परिश्रम कर एक-आध आना कमाने लगा।"

यह सुनते-सुनते रानी का दिल भर आया। डबडबाई आंखों से अपने पिता की ओर देखते हुए उसने पूछा, "पर, मेरी प्यारी बहनें कहां हैं?"

"उनकी शादी अमीर व्यापारियों से हो गई। और अब उन्हें मुझ असहाय एवं दरिद्र को अपना पिता मानने में संकोच होता है" उस बूढ़े का उत्तर अथाह दुःख में डूबा हुआ था।

परंतु रानी ने सांत्वना देते हुए कहा, "मेरे पूज्य पिताजी, अब आपके पास पहले से कहीं ज्यादा धन होगा। आप मेरे साथ ही इस महल में आत्मसम्मान एवं आदरपूर्वक रहेंगे।"

रानी स्नेहपूर्वक अपने पिता को बांहों का सहारा देते हुए राज अतिथि गृह में ले गई। रास्ते में बूढ़े ने एक आह भरते हुए कहा, "बेटी, तुम बिल्कुल सही थी। कोई किसी अन्य के भाग्य से नहीं जीवन यापन करता है। हरेक आदमी का अपना नसीब होता है। अब मैं जानता हूं कि प्रेम, दुनिया की तमाम धन-दौलत से भी नहीं खरीदा जा सकता है।"

बस हुई कहानी खतम यहीं
ढलता सूरज हो चला लाल
मुंद गईं फूल की पंखुड़ियां
चुपचाप शाम आ गई द्वार

धीरे-धीरे बढ़ रही शाम
सो गए नींद से पंछी दल
झिल-मिल तारे चमके नभ में
तिल-तिल, क्षण-क्षण, पल-पल, पल-पल

यह छिपा चांद भी आ पहुंचा
भर रात करेगा करामात
अब हो गई गहरी रात-रात,
सो जा बच्चे, बस हुई बात।

बोलती चिड़िया—हिरामन

एक जंगल के किनारे टूटे हुए फूस के घर में एक बहेलिया अपनी पत्नी के साथ रहता था। मौसम कोई भी होता, सर्दी, गरमी या बरसात, बेचारा बहेलिया प्रतिदिन चिड़ियों की तलाश में इस जंगल से उस जंगल में भटकता था। और कुछ चिड़ियों को पकड़कर उन्हें बाजार में बेच देता। पर जो पैसे मिलते, उससे उनका घर चलना मुश्किल होता। परिणामतः वे सदैव भुखमरी से तंग रहते।

एक रात जब बहेलिया झोपड़ी में वापस आया तो उसकी पत्नी ने कहा, "प्रिये, तुम्हें पता है, हमारी बदहाली का कारण क्या है? दरअसल तुम, पकड़े गए सभी चिड़ियों को बेच देते हो। शायद उनमें से कुछ को पकाकर खाने से हमारा भाग्य बदल जाए। और हमारी तंगहाली भी जाती रहे। इसलिए कल तुम एक भी चिड़िया नहीं बेचोगे। मैं तुम्हारे लिए भात एवं चिड़ियों का मांस पकाऊंगी। फिर हम देखेंगे कि हमारा भाग्य पलटता है या नहीं।"

बहेलिया अपनी पत्नी की बात सहर्ष मान गया। अगले दिन वह सवेरे जंगल चला गया और पूरा दिन मारा-मारा घूमता रहा। दुर्भाग्यवश उसे एक भी चिड़िया न तो आसमान में दिखाई दी और न ही पेड़ों पर बैठी। इस प्रकार प्रतीक्षा में दिन निकल गया। शाम होने को आई। लेकिन एक भी चिड़िया पेड़ों की फुनगी पर बने घोंसले में वापस नहीं आई।

बहेलिया निराश एवं थका-मांदा वापस झोपड़ी की ओर चल दिया। अचानक उसकी नजर ताड़ के पेड़ पर बैठी एक अकेली चिड़िया पर गई। चिड़िया गोधूलि वेला के सपनों के सुरीले गीत गा रही थी। बहेलिया ने उसे तुरंत पकड़ लिया। उसे घर ले जाकर पत्नी को उसका मांस पकाने के लिए कहा।

छोटी सी भयभीत चिड़िया को अपने हाथ में लेकर उसके पंखों को सहलाते हुए बहेलिये की पत्नी ने चकित होकर कहा, "यह चिड़िया तो अद्भुत है। इसके पंख ऐसे चमक रहे हैं जैसे सूरज की रोशनी में बादल। इसके केसरिया
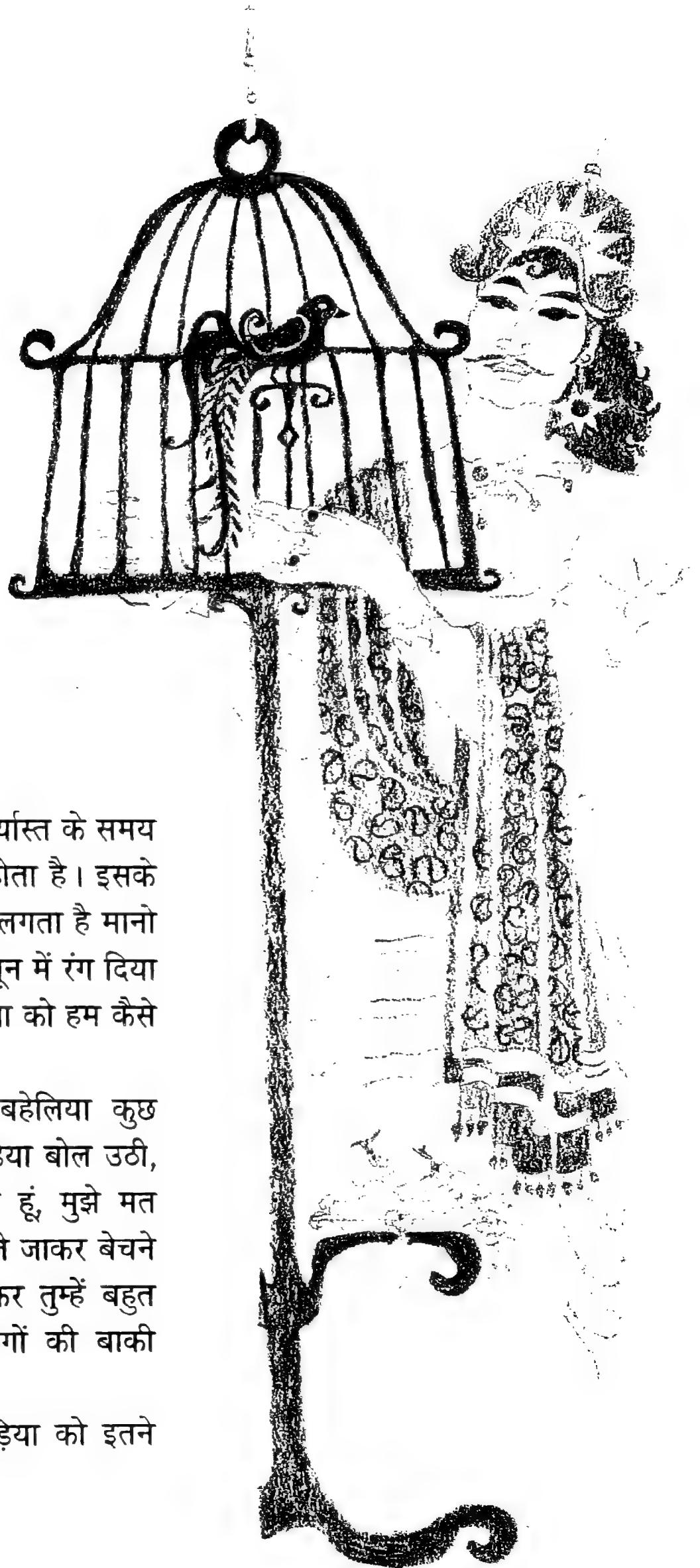
वक्षस्थल को देखकर तो सूर्यास्त के समय का आकाश का आभास होता है। इसके छोटे-छोटे पैरों को देखकर लगता है मानो किसी ने अत्यधिक लाल खून में रंग दिया हो। भला, इस सुंदर चिड़िया को हम कैसे मार कर खा सकते हैं।''

इससे पहले कि बहेलिया कुछ बोलता, वह छोटी-सी चिड़िया बोल उठी, ''हे मां, मैं विनती करती हूं, मुझे मत मारो। मुझे राजा के पास ले जाकर बेचने की बात करो। मुझे बेचकर तुम्हें बहुत धन मिलेगा। फिर तुमलोगों की बाकी जिंदगी मौज में कटेगी।''

छोटी सी इस चिड़िया को इतने

स्पष्ट एवं जोरदार आवाज में बोलते सुनकर बहेलिया एवं उसकी पत्नी अचंभित थी। वे उस चिड़िया को टकटकी लगाए देखते रहे। अब उसकी पत्नी ने पूछा, "हे विचित्र चिड़िया है, हम राजा से तुम्हारी क्या कीमत मांगेंगे?"

"वह मुझ पर छोड़ दीजिए", चिड़िया ने जवाब दिया। फिर उसने कहा, "मुझे बेचने के लिए राजा के पास ले तो चलिए। जैसे ही वह मेरी कीमत पूछेंगे तो कहिएगा—राजन, चिड़िया अपनी कीमत खुद कहेगी।"

अगले दिन बहेलिया एवं उसकी पत्नी चिड़िया के साथ राजा के पास पहुंची और उसे बेचने की बात कही। राजा तो चिड़िया की खूबसूरती पर मर मिटा। उसे खरीदने की इच्छा जाहिर करते हुए उसने कहा, "इस सुंदर चिड़िया की क्या कीमत चाहते हो?"

बहेलिया ने कहा, "हे, महान राजा! चिड़िया खुद अपनी कीमत बताएगी।"

"क्या?" चौंक पड़ा राजा। उसने पूछा, "तुम्हारा मतलब कि चिड़िया खुद अपनी कीमत बताएगी?"

"हां, हजूर! चिड़िया से उसकी कीमत पूछ कर तो देखिए। यह जरूर बताएगी" यह कहकर बहेलिया चुप हो गया।

राजा ने मजाक में ही उस चिड़िया से पूछ डाला, "अच्छा, सुंदर चिड़िया, तुम अपना नाम और दाम बताओ।"

इस पर चिड़िया का उत्तर था, "मेरा नाम हिरामन है। मैं चिड़ियों के ऐसे नस्ल से संबंधित हूं जिसके बहुत कम सदस्य हैं। और मेरी कीमत सोने के एक हजार सिक्के हैं।"

एक चिड़िया को इस तरह बोलते सुनकर राजा दंग रह गया। पर वह इससे अधिक क्षुब्ध, चिड़िया की कीमत सुनकर था। अब राजा ने पूछा, "हिरामन, तुम्हें नहीं लगता कि तुम्हारी कीमत अत्यधिक है।"

पर हिरामन ने कहा, "महाराज, ऐसा मत सोचिए। मैं आपके बहुत काम आ सकती हूं।"

इस पर राजा की हंसी छूट पड़ी। फिर उसने पूछा, "हिरामन, बताओ तो सही कि किस तरह तुम मेरे बड़े काम आ सकती हो।"

हिरामन का बुद्धिमतापूर्ण जवाब था, "समय आने पर महाराज खुद समझ जाएंगे।"

एक तो बोलती चिड़िया, वह भी इतनी बुद्धिमतापूर्ण ढंग से...! राजा तो उसे प्राप्त करने के लिए मचल गया। उसने शाही खजांची को आदेश दिया कि वह बहेलिये को सोने के एक हजार सिक्के तुरंत दे दे। फिर उस अद्‌भुत चिड़िया के लिए सोने का एक विशेष पिंजरा बनाने का आदेश दिया गया।

उस राजा की चार सुंदर रानियां थीं। पर उनमें आपस में एक दूसरे के बहुत लिए घृणा थी। और वे सुबह से रात तक आपस में लड़ती रहतीं। राजा इससे दुःखी था। लड़ाई रोकने का कोई उपाय उसे नहीं दिख रहा था। पर जब से हिरामन महल में आई, राजा ने किसी अन्य की सुध छोड़ दी। अपने झगड़ालु रानियों को भूल गया। सारा समय बुद्धिमान चिड़िया के साथ ही बिताता।

हिरामन भी नाच-गाकर राजा का दिल बहलाती। राजा से बातें करती। और राज-काज के मामले में सलाह देती। राजा जब भी उदास होता वह विभिन्न देवी-देवताओं के हजारों नाम जपा करती। वह भजन भी गाती। धीरे-धीरे राजा और हिरामन की अटूट जोड़ी बन गई।

रानियों का राजा के इस अनूठे प्रेम पर जलना स्वाभाविक था उन्होंने हिरामन को मारने की ठान ली। जिंदगी में पहली बार वे इकट्ठे हुए। सबसे बड़ी रानी ने अन्य रानियों के साथ षड्‌यंत्र करते हुए कहा, "राजा के शिकार पर जाते ही हम उस चिड़िया से पूछेंगे कि हममें से सबसे कुरूप कौन है। चिड़िया जिसे सबसे कुरूप कहेगी वह गरदन मरोड़कर तुरंत उसे मार डालेगी।"

बसंत आया। जंगल में चिड़ियां सुरीली आवाज में गा रही थीं। एक दिन राजा मित्रों के साथ शिकार पर गया था। उसी समय चारों रानियां रत्नजड़ित भवन में गई जहां अपने सोने के पिंजरे में वह चिड़िया रहती थी। फिर बड़ी रानी ने उससे कहा, "हे बुद्धिमान चिड़िया, तुम्हारे निष्पक्ष न्याय के संबंध में हमने बहुत सुना है। कृपया बताओ कि हममें से सबसे सुंदर और सबसे कुरूप कौन है।"

इस पर चिड़िया तपाक से बोली, "मैं विवेकपूर्ण निर्णय कैसे कर सकती हूं। मैं तो इस पिंजड़े में बंद हूं। यदि आपलोगों को सही निर्णय चाहिए तो मुझे इस पिंजरे से निकालिए। उसके बाद ही मैं सबको बारीकी से देख-परख सकूंगी और फिर सही निर्णय दूंगी।" रानियों ने उस भवन के सभी दरवाजों एवं खिड़कियों को बंद कर दिया ताकि चिड़िया उड़कर बाहर न भाग जाए। परंतु हिरामन की नजर उस भवन के एक जल-निकास छिद्र पर पड़ चुकी थी। वह उससे निकल सकती थी। अब सबसे बड़ी रानी ने पिंजरे का दरवाजा खोलकर हिरामन को बाहर आने दिया। हिरामन ने एकाग्रता से प्रत्येक रानी को

नख-सिख देखने के बाद कहा, ''आप में से किसी की भी सुंदरता सात समुद्र एवं तेरह नदियों के पार रहने वाली राजकुमारी के अंगूठे की तुलना में भी नहीं है।'' इस पर रानियां अपने को अपमानित महसूस करने लगीं। चिड़िया ने उनकी सुंदरता का तो मजाक ही बना दिया था। गुस्से में लाल-पीली होती रानियां चिड़िया की गरदन मरोड़ने के लिए लपकी। पर जल-निकासी के छेद से निकलकर चिड़िया फुर्र हो गई। और पास के ही एक लकड़हारा की झोपड़ी में शरण ली।

राजा अगले दिन शिकार से वापस आया। वह हिरामन से मिलने सीधे भव्य भवन में पहुंचा। पर पिंजरा खाली देख वह हताश हो गया। उसने बारी-बारी से सबसे पूछताछ की—रानियों से, नौकरों से, द्वारपालों से और मंत्रियों से भी। पर कोई नहीं बता सका कि वह चिड़िया कब, कहां और कैसे उड़ गई। पूरे नगर में ढिंढोरा पीटा गया। यह मुनादी की गई कि राजा के खोए हुए प्रिय चिड़िया को जो भी पकड़ लाएगा, उसे ईनाम में सोने की सौ मोहरें मिलेंगी।

लकड़हारे की तो किस्मत ही खुल गई। वह चिड़िया को पकड़कर महल की ओर भागा। वहां उसे सोने की सौ मोहरें ईनाम में मिलीं और राजा को सर्वप्रिय हिरामन। उसे अपने हृदय से लगाए अश्रुपूरित आंखें लिए राजा ने पूछा, ''हिरामन, मेरे दोस्त, मेरी अनुपस्थिति में तुम मुझे छोड़कर कैसे चले गए।''

इस पर हिरामन ने जवाब दिया, ''हे महान राजा! मेरे प्रिय मित्र, मैं भला आपको कैसे धोखा दे सकता हूं। दरअसल आपकी अनुपस्थिति में रानियों ने मुझे मारने की योजना बनाई थी। पर उसका आभास मुझे पहले ही हो गया। इसलिए मैंने उनको फुसलाकर खुद को पिंजरे से मुक्त करवा लिया। फिर जल-निकास के एक छेद से निकलकर भाग गया। और पास के ही एक लकड़हारे की झोपड़ी में शरण ली।''

''लेकिन हिरामन'' राजा ने अचंभित होकर पूछा, ''रानियां तुम्हें क्यों मारना चाहती हैं?''

इस पर हिरामन ने कहा, ''यह एक लंबी कहानी है। पर मैं इसे थोड़े में कहती हूं। दरअसल रानियां मेरे प्रति आपके प्यार से जलती हैं। और मैंने जब यह कह दिया कि उनमें से किसी की सुंदरता सात समुद्र एवं तेरह नदियां पार रहने वाली सुंदर राजकुमारी के अंगूठे के बराबर भी नहीं है तो वे गुस्से से जल-भुन गईं। और मेरी गरदन मरोड़ने दौड़ीं। यह तो मेरी किस्मत अच्छी थी कि मैं बचकर भाग गई।

गुस्से में पागल राजा ने सभी रानियों को दूर रेगिस्तान में भेज दिया। फिर वे कभी वापस नहीं आ सकीं।

कुछ दिनों बाद राजा ने हिरामन को पिंजरे से बाहर निकालकर उसे अपने बांह पर बिठाते हुए पूछा, "हिरामन, क्या तुमने रानियों को कहा था कि उनकी सुंदरता सात समुद्र एवं तेरह नदियां पार रहने वाली सुंदर राजकुमारी के अंगूठे के बराबर भी नहीं है।"

"अवश्य, मैंने ऐसा ही कहा था" हिरामन बोली।

इस पर राजा ने पूछा, "हे, बुद्धिमान हिरामन! क्या तुम्हें उस राजकुमारी तक पहुंचने का पता है?"

"बिल्कुल" बोली चिड़िया, "मैं हुजूर को उस राजकुमारी के दरवाजे तक ले जा सकती हूं। पर आपको वही करना होगा जो मैं कहूंगी।" राजा को शर्त मंजूर थी। फिर हिरामन बोली, "हमें सबसे पहले पंखों वाला घोड़ा पोखिराज खोजना होगा। वह हमें उड़ाकर सात समुद्र एवं तेरह नदियां पार उस सुंदर राजकुमारी के ठीक द्वार पर ले जाएगा।

"पर हमें पंखों वाला घोड़ा मिलेगा कहां?" विस्मित होकर राजा ने पूछा।

हिरामन ने जवाब दिया, "आपके शाही अस्तबल में कई सुंदर घोड़े हैं। हम चलकर देखते हैं, उनमें ही कोई पोखिराज हो।"

शीघ्र ही वे राज-अस्तबल पहुंचे। वहां उन्होंने प्रत्येक घोड़े का बारीकी से निरीक्षण प्रारंभ किया। हिरामन उत्तम प्रजाति के कई सुंदर घोड़ों को नजरअंदाज कर उड़ते हुए एक मरियल छोटे टट्टू के पास रुक गई। और वह खुशी से चिल्ला पड़ी, "मिल गया। हमें यही चाहिए। यह पोखिराज नस्ल का ही है। परंतु इसे छह महीने तक उत्तम अनाज पर पालना होगा। उसके बाद ही यह सुंदर राजकुमारी के महल तक का लंबा एवं दुष्कर सफर तय कर सकेगा।"

राजा ने उस टट्टू को तुरंत एक विशेष अस्तबल में रखवा दिया। वह उसे राज्य में उपलब्ध सर्वोत्तम अनाज खुद खिलाता। कुछ ही दिनों में टट्टू एक विशाल घोड़ा बन गया। उसके पंख निकल आए जिसका फैलाव गरुड़-राज के पंखों से भी अधिक था। हिरामन के अनुसार अब पोखिराज उस यात्रा के लिए तैयार था। उसने राजा से आग्रह किया कि सुनार से कहकर चांदी की एक हजार गुटिका बनवा लें। रास्ते में उनकी आवश्यकता पड़ेगी।

कुछ ही समय में राज के सुनार ने चांदी की गुटिका से भरा एक थैला राजा को सौंप दिया। परंतु यात्रा से पूर्व हिरामन ने राजा को सावधान करते हुए कहा, "हे राजन, कृपया मेरी बात ध्यान से सुनिए। यात्रा से पहले आप सिर्फ एक बार पोखिराज को चाबुक लगाएंगे। यदि आप ऐसा नहीं करेंगे तो यह आधे रास्ते में ही रुक जाएगा। हम अपनी मंजिल तक नहीं पहुंच पाएंगे। फिर जब हम राजकुमारी के साथ वापस आ रहे होंगे, आप मात्र एक बार पोखिराज को चाबुक लगाएंगे। ध्यान रहे, यदि आपने एक से अधिक चाबुक लगाया तो हम बीच में ही रह जाएंगे। और फिर कभी आपके राज्य में नहीं पहुंच सकेंगे।

यह सब सुनने के बाद चांदी की गुटिका वाली थैली लेकर राजा पोखिराज पर सवार हो गया। उसकी बांह पर बैठी हिरामन चिड़िया सुरीली आवाज में गा रही थी। राजा ने जैसे ही पंखों वाले घोड़े को प्यार से एक चाबुक लगाया वह बिजली की तरह चमकता हुआ आसमान में उड़ने लगा। सात समुद्र एवं तेरह नदियों को लांघकर वह सीधे राजकुमारी के महल के द्वार पर उतरा। हिरामन ने राजा से कहा कि पोखिराज को वहीं अस्तबल में बांध दें। और राजद्वार के पास एक ऊंचे पेड़ की फुनगी पर चढ़कर उसके झुरमुट में छिप जाएं।

अब हिरामन चोंच में भरकर चांदी की गुटिका एक-एक कर गिराने लगी। पहले पेड़ के इर्द-गिर्द फिर स्फटिक से बने गलियारे और अंत में राजकुमारी के शयन कक्ष के सुनहले द्वार तक। राजकुमारी के कान में गुटिका के गिरने की आवाज गई तो उसने दरवाजा खोला। बाहर बिखरी चांदी की गुटिका चमक रही थी। सहज उत्सुकता में वह उनके पीछे चल पड़ी और पेड़ तक पहुंच गई। उसी पेड़ पर राजा एवं हिरामन छिपे हुए थे।

राजकुमारी को देखते ही राजा धरती पर कूद पड़ा। समय गंवाए बिना उसने राजकुमारी को अपनी बांहों में उठाकर घोड़े पर बिठा दिया। जैसे ही उसने पोखिराज को एक चाबुक लगाया वह आंधियों की तरह चक्कर लगाता आकाश में उड़ चला। 'पर यह क्या!' उसने तो बेसब्री में पोखिराज को एक चाबुक फिर लगा दिया। घोड़ा अचानक एक रेगिस्तान में धड़ाम से गिरा। और फिर चलने का नाम भी नहीं लिया।

हिरामन चीख पड़ी, "क्या कर दिया आपने? क्या मैंने एक से अधिक चाबुक नहीं लगाने की हिदायत नहीं दी थी? अब पोखिराज शक्तिहीन हो गया है और हमें मौत आने तक यहीं रहना होगा।"

उसी दिन रेगिस्तान का राजा शिकार पर निकला था। उसके तीर ने एक

हिरन के हृदय को बेध दिया था। उसका पीछा करते हुए राजा की नजर, रेगिस्तान में बैठे उस राजा, अद्वितीय सुंदरी राजकुमारी एवं घोड़े पर गई। चिड़िया भी वहीं बैठी थी। राजकुमारी की सुंदरता पर मर मिटा रेगिस्तान का राजा, उसे चुराकर अपने महल भाग गया जो वीरान रेगिस्तान के मध्य पन्ना की तरह हरा मरुद्यान में खड़ा चमक रहा था।

राजकुमारी डर से नहीं बोल पा रही थी। सदमा से उसकी रुलाई भी नहीं छूट रही थी। पर उसका अंतर्मन कह रहा था कि बुद्धिमान हिरामन उसे जरूर ढूंढ निकालेगी, बचा लेगी। इसी आशा में वह प्रतिदिन महल के संगमरमर से बने छत पर चिड़ियों के लिए उत्कृष्ट चुग्गा डालती। उसे विश्वास था कि एक दिन अन्य चिड़ियों के साथ हिरामन भी छत पर उतरेगी और रेगिस्तान महल के इस एकाकी जिंदगी से उसे निकाल ले जाएगी।

इस बीच राजा, हिरामन एवं पोखिराज रेगिस्तान में किसी तरह दिन काट रहे थे। अन्न-पानी तो दूर उन्हें नींद भी नहीं नसीब हो पाती। एक दिन कुछ चिड़ियां हिरामन के समीप जाकर बोली, "यहां दाना-पानी के बिना तुम्हारी जिंदगी दयनीय है। पास में ही एक राजकुमारी संगमरमर की छत पर एक विशाल भोज का आयोजन करती है। तुम, क्यों न हमारे साथ उसमें शामिल हो जाती? हम सवेरे हजारों की संख्या में वहां पहुंचते हैं। सारा दिन ताजा दाना एवं स्वादिष्ट बीज चुगते हैं। और शाम ढलते अपने घोसले में वापस आ जाते हैं।"

अगले दिन सवेरे हिरामन भी अन्य चिड़ियों के साथ संगमरमर की उस छत पर उतरी। वहां उनके लिए दाना बिखरा था। रेगिस्तान के राजा द्वारा अपहृत उस राजकुमारी को देख हिरामन चौंक पड़ा। सुनहले अनाज के दाने एवं कमल के बीजों को चुगते हुए वह कुछ सोचता रहा। उसे दरअसल अन्य चिड़ियों के वापस उड़ जाने का इंतजार था। मौका मिलते ही उसने राजकुमारी के कान में फुसफुसाकर कुछ कह दिया। फिर उड़ चली हिरामन, राजा के पास।

उस रात चांद आसमान में चढ़ चुका था। लाखों प्रकाश पुंज की तरह तारे चमक रहे थे। रेगिस्तान के ऊपर ऊपर औंधा, अंधेरा आसमान उनसे उजियारा हो गया था। इतने में दूर कहीं एक उल्लू के घुघुआने की आवाज आई। यह सुनते ही हिरामन अपने पंख झाड़ फड़फड़ाते हुए उड़ गई। दूर बालू के एक टीले पर उसने एक अकेला उल्लू को बैठा देखा। उस बुद्धिमान पक्षी के सम्मान में झुकते

हुए उसने कहा, "हे पक्षियों में सर्वश्रेष्ठ ज्ञानी! आज रात आपसे मिलकर मैं कृतार्थ हुआ। मैं और मेरा राजा राह भटक चुके हैं और पंखों वाला हमारा घोड़ा पोखिराज शक्ति विहीन हो गया है। वह हमें अपने राज्य तक उड़ाकर नहीं ले जा सकता है। अतः मुझे आपके महत्वपूर्ण सुझाव की नितांत आवश्यकता है। मेरी प्रार्थना है कि आप हमें संकट से निकालिए।" हिरामन को गंभीरता से देखते हुए वृद्ध ज्ञानी उल्लू ने कहा, "तुम वस्तुतः दुर्लभ नस्ल के गुणी पक्षी लगते हो। इसलिए मैं तुम्हें सुझाव देता हूं। जंगल के सीमान्त क्षेत्र में एक गुप्त मार्ग है। पहले उसे ढूंढ निकालो। तुम चतुर एवं इतने छोटे हो कि उसमें घुस सकते हो। यह तुम्हें एक ऐसे अदृश्य नदी के तट पर ले जाएगा जो रेगिस्तान के नीचे चुपचाप बहती है। वहां तुम्हें सैकड़ों बुद्धिमानी भरे जादुई मोती बिखरे मिलेंगे। उनमें से एक, चोंच में दबाकर ले आना। पोखिराज उसे सहर्ष निगल लेगा। जैसे ही मोती उसके हृदय के अंदर जाएगा, वह उड़ने के लिए तैयार हो जाएगा।"

ज्ञानी उल्लू को धन्यवाद देकर हिरामन गुप्त मार्ग की तलाश में उड़ चली। वह एक अंधेरी गुफा में उड़ती रही। उसी में अदृश्य नदी भी बह रही थी। नदी के किनारे हिरामन को अलग पड़ा, चमकता हुआ एक मोती दिख गया। उसे अपनी चोंच में दबाकर वह वापस पोखिराज के पास पहुंची। पोखिराज ने सहर्ष उस मोती को निगल लिया।

शीघ्र ही पोखिराज में अद्भुत परिवर्तन हुआ। उसने अपने जादुई पंख फैलाए। उनमें उड़ने की शक्ति आ गई थी। राजा एवं हिरामन उस पर सवार होकर संगमरमर के उस छत पर उतरे। वहां राजकुमारी उनका इंतजार कर रही थी। हिरामन पहले ही उसे कह गई थी कि वह राजा के साथ उसे लेने आएगी।

राजा तुरंत पोखिराज से उतरा। राजकुमारी को बांहों में भरकर घोड़े पर बिठा दिया। धीरे से सिर्फ एक चाबुक लगाया ही था कि पोखिराज हवा से बातें करने लगा। सात समुद्र एवं तेरह नदियों को पार कर वे अपने राज्य वापस लौटे। इस बीच राजा की बांह पर बैठी हिरामन देवी-देवताओं के असंख्य नाम जपती रही। और भजन गाती रही।

बस हुई कहानी खतम यहीं
ढलता सूरज हो चला लाल

मुंद गई फूल की पंखुड़ियां
चुपचाप शाम आ गई द्वार

धीरे-धीरे बढ़ रही शाम
सो गए नींद से पंछी दल
झिल-मिल तारे चमके नभ में
तिल-तिल, क्षण-क्षण, पल-पल, पल-पल

यह छिपा चांद भी आ पहुंचा
भर रात करेगा करामात
अब हो गई गहरी रात-रात,
सो जा बच्चे, बस हुई बात।

धूप और छांव

सृष्टि के आरंभ में धरती एवं स्वर्ग दोनों पर देवी-देवताओं का शासन था। वे साफ नीले आकाश से परे हिमाच्छादित ऊंचे पहाड़ों के ऊपर कैलाश में रहते थे। धरती पर रहने वाला हर प्राणी समान रूप से उनकी पूजा करता एवं भक्ति में लीन रहता। राजमहल में रहने वाला संपत्तिवान राजा से लेकर, हाथों में भीख की कटोरी एवं टूटी लाठी पकड़े, झोपड़ी वाला भिखारी तक उनकी पूजा करते।

दुर्भाग्य के देवता शनि एवं सौभाग्य की देवी लक्ष्मी अक्सर कैलाश की ऊंचाइयों से धरती पर झांकते थे। वहां चल रहे सुख एवं दुःख का खेल देखते। उसमें तल्लीन मनुष्यों को हंसते-रोते और प्रार्थना करते देख शनि एवं लक्ष्मी मुस्कराते रहते। दिन ढलते जब मंदिरों की घंटियों की गूंज क्षीण पड़ती तब जाकर यह खेल खत्म होता।

एक दिन जब वे हंसी एवं आंसू का दुनियावी दृश्य देख रहे थे, शनि अहंकारवश लक्ष्मी से बोल पड़े, "मैं आपसे अधिक प्रभावशाली हूं। तब तो इस धरती पर सुख से अधिक दुःख दिखता है।"

परंतु लक्ष्मी ने कहा, "मेरा पद आपके पद से ऊंचा है। जब मृत्युलोक के वासियों पर भाग्य मुस्कराता है तो वे अपना गम भूलकर खुशी से भर जाते हैं।"

इस तरह दोनों में ठन गई,
झगड़ा गंभीर, भयंकर बन गई।
क्रुद्ध शब्दों के तीर चले, टकराए,
धमकियों की लपट, चमककर गरज आए।
आसमान में आग लगी, लपट उठा जंगल-जंगल
शर्म, दुःख से भरे बादलों ने आंसू गिराए देख यह दंगल।"

यह देख स्वर्ग के देवी-देवता घबरा गए। उन्होंने दोनों को मनाते हुए प्रार्थना की, "हे महान शनि देव एवं देवी लक्ष्मी, हमारी प्रार्थना सुनिए। कृपया स्वर्ग की शांति

बनाए रखिए। यदि यहीं अशांति व्याप्त हो गई तो धरती का क्या होगा।''

परंतु स्वर्ग एवं धरती से बेखबर शनि देव एवं देवी लक्ष्मी ने उनकी एक न सुनी।

विपत्ति की इस घड़ी में देवी-देवताओं ने मृत्युलोक के एक ज्ञानी मानव, विवेक से सहायता लेने का निर्णय लिया। विवेक अपने उचित न्याय एवं उपयुक्त निर्णय के लिए जाना जाता था। वे दहकते पहाड़ों एवं जलते आसमान को पीछे छोड़ उल्कापात की तरह धरती पर उतरे। पहले उन्होंने विवेक के ज्ञान को सराहा एवं उसे आशीर्वाद दिया। फिर स्वर्ग में चल रहे झगड़े के बारे में बताया। उसके बाद उन्होंने साफ शब्दों में सहायता मांगते हुए कहा, ''हमारी मान-मनुहार एवं प्रार्थना तो बेकार गई। स्वर्ग में हम सभी असहाय हैं। इसलिए, हे महान विवेक! हमारा आपसे अनुरोध है कि अपनी इहलौकिक ज्ञान एवं न्यायोक्ति से स्वर्ग का झगड़ा शांत कीजिए।''

विवेक तुरंत इस कार्य में छिपे खतरे को भांप गया। उसका दिल डर से कांप उठा। वह जानता था कि यदि शनि का पक्ष लेगा तो लक्ष्मी उससे रूठकर सदा के लिए चली जाएगी। दूसरी तरफ लक्ष्मी का पक्ष लेने से उसे क्रुद्ध शनि की वक्र दृष्टि से कोई बचा नहीं पाएगा। इस प्रकार दोनों तरफ खतरा ही था।

विवेक पूरे दिन एवं रात सोचता रहा। अंत में वह इस निर्णय पर पहुंचा कि वह एक शब्द भी नहीं बोलेगा। शनि एवं लक्ष्मी को अपने क्रिया-कलाप से ही अपने अंदर की बात समझने पर मजबूर कर देगा।

उसने दो कुर्सियां—एक सोने की एवं एक चांदी की, बनवाई। दोनों के अपने इर्द-गिर्द रख दिया। शांत गोधूलि वेला में स्वर्ण के चमकते रथ पर सवार शनि देव एवं देवी लक्ष्मी लालिमा भरे आकाश को चीरकर धरती पर उतरे। विवेक ने दोनों का एक समान स्वागत किया। फिर वह लक्ष्मी को सोने की कुर्सी की तरफ ले गया और शनि को चांदी वाली पर बैठने का इशारा किया।

शनि महान के अहं को चोट पहुंची। उनके क्रोध का ठिकाना नहीं रहा। अपने पैर पटकते हुए जाते-जाते वे गरज उठे, ''हे निरीह प्राणी, चूंकि तुमने लक्ष्मी के सामने मुझे तुच्छ समझा है, इसलिए मैं सात वर्षों तक तुम पर अपनी कुपित दृष्टि रखूंगा। तुम कहीं भी जाओगे दुःख, साया की तरह तुम्हारे साथ होगा।''

परंतु लक्ष्मी कुछ पल रुकी रही। उन्होंने धीरे से कहा, ''डरो मत विवेक, मैं दुःख में तुम्हारी मदद करूंगी।''
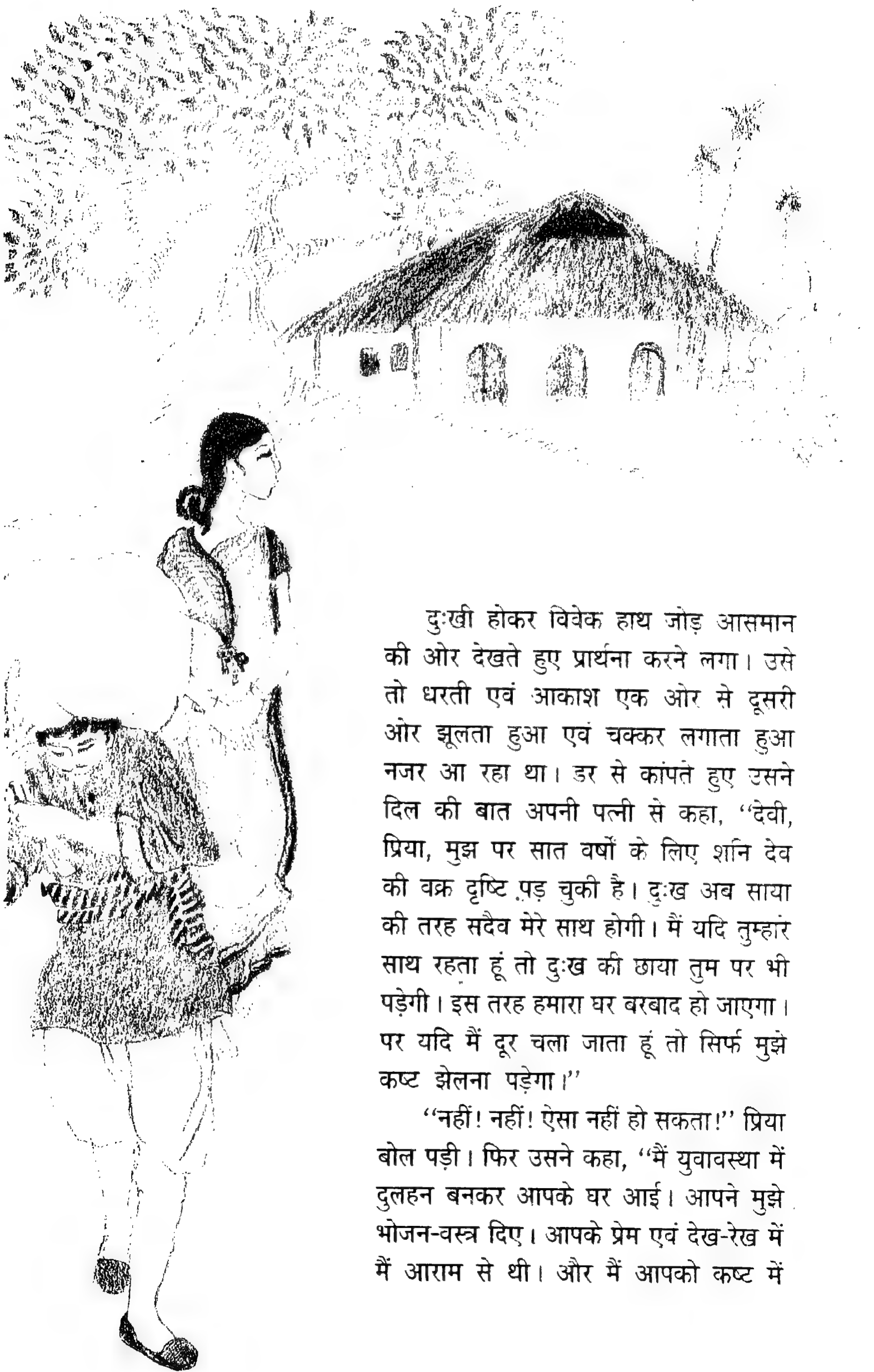
दुःखी होकर विवेक हाथ जोड़ आसमान की ओर देखते हुए प्रार्थना करने लगा। उसे तो धरती एवं आकाश एक ओर से दूसरी ओर झूलता हुआ एवं चक्कर लगाता हुआ नजर आ रहा था। डर से कांपते हुए उसने दिल की बात अपनी पत्नी से कहा, "देवी, प्रिया, मुझ पर सात वर्षों के लिए शनि देव की वक्र दृष्टि पड़ चुकी है। दुःख अब साया की तरह सदैव मेरे साथ होगी। मैं यदि तुम्हारे साथ रहता हूं तो दुःख की छाया तुम पर भी पड़ेगी। इस तरह हमारा घर बरबाद हो जाएगा। पर यदि मैं दूर चला जाता हूं तो सिर्फ मुझे कष्ट झेलना पड़ेगा।"

"नहीं! नहीं! ऐसा नहीं हो सकता!" प्रिया बोल पड़ी। फिर उसने कहा, "मैं युवावस्था में दुलहन बनकर आपके घर आई। आपने मुझे भोजन-वस्त्र दिए। आपके प्रेम एवं देख-रेख में मैं आराम से थी। और मैं आपको कष्ट में

अकेले छोड़ दूं! आप जहां भी जाएंगे, मैं साथ चलूंगी। हम मिलकर दुःख बांट लेंगे।''

प्रिया के मुरझाए हुए चेहरे पर आंसू टपक पड़े। उसने आभूषणों को बिस्तर में बांध लिया। फिर विवेक ने दरवाजा बंद कर ताला लगा दिया। और संकट की घड़ी में साथ देने के लिए देवी लक्ष्मी की प्रार्थना करते हुए दोनों लक्ष्यहीन यात्रा पर निकल पड़े।

सिर पर बिस्तर की गठरी रखकर विवेक आगे चल पड़ा। प्रिया पीछे थी। वह अपने घर की अंतिम झलक पाने के लिए बार-बार पीछे मुड़कर देखती। दुःख में डूबे विवेक एवं प्रिया भयानक जंगल एवं अनजान जगहों को पारकर एक नदी के किनारे पहुंचे। वहां चमकीले रेत पर बैठा एक नाविक सुख-दुःख का एक मधुर गीत गा रहा था।

कितना खुश होता मैं! जब आसमान होता नीला,
प्रेम-गीत चिड़िया गाती, निर्मल, सच्चा और सुरीला।
पंख लगाकर उड़ता, गाता चिड़ियों के संग मेरा दिल,
धूप खिला, चमक रहा है, बसंत की लगी है महफिल।
सपने मेरे उड़कर पहुंचे, जहां खुशियों का संसार चमकता,
मधुमक्खियों का फूलों के लिए जहां प्यार उमड़ता।
परंतु दिन के अंत में आसमान जब धुंधलाता,
चिड़ियां छोड़ जाती मुझे, सपना टूट-टूट कर बिखर जाता।
नीली ये तितलियां, एवं लाल गुलाब,
गिरते...मर जाते! खोकर अपना शबाब।
हर चीज एक दिन मुरझाते, कहते हैं ज्ञानी,
कुछ भी अमर नहीं यहां, सब कुछ आनी-जानी।

विवेक उसके पास जाकर बोला, ''ये भाई नाविक, हमें नाव में बिठाकर नदी पार करवा दो। हम तुम्हें सोने का एक सिक्का देंगे।''

इस पर नाविक ने कहा, ''मैं तो एक बार में सिर्फ एक को ले जा सकता हूं। पर यहां तो तीन हैं, ''आप स्वयं, आपकी पत्नी एवं आपका बिस्तर।''

''फिर बिस्तर एवं मेरी पत्नी को पहले पार करवा दो। तब मुझे ले जाना'', विवेक ने आग्रह किया। परंतु नाविक ने नहीं में सिर हिलाते हुए जवाब दिया, ''मैं पहले बिस्तर ले जाऊंगा, तब आपकी पत्नी को। और अंत में आपको।''

इस पर विवेक राजी हो गया। परंतु, यह क्या ...? नाव नदी के मध्य पहुंचती उससे पहले ही अचानक विचित्र आंधी आई। उसमें न केवल नाव, नाविक एवं बिस्तर गायब हो गया बल्कि नदी का भी कोई निशान नहीं बचा। विवेक एवं प्रिया दूर-दूर तक फैले वीरान रेगिस्तान देखते रहे। वहां जीवन का लेश मात्र नहीं बचा था। पेड़-पौधे एवं चिड़ियां तो दूर घास तक लुप्त हो गया था। 'धक-धक' धड़कते उनके दिल की आवाज मात्र सुनाई दे रही थी। इतने में अचानक विवेक एवं प्रिया के सामने जादुई कालीन की तरह फूलों का एक मार्ग बन गया। वे देवी लक्ष्मी का गुणगान करते हुए उस पर चल पड़े।

दोनों सूर्य-विहीन दिन एवं सितारे-विहीन रात में चलते रहे। उन्हें नहीं पता था कि उनकी यात्रा कब और कहां खत्म होगी। परंतु अचानक वे लकड़हारों के एक गांव में पहुंच गए। वहां उन्होंने पेड़ की टूटी डालियों से एक झोपड़ी बनाकर शीघ्र ही उसमें सो गए। अगली सुबह लकड़हारों के कुल के सरदार की नजर अपरिचित नई झोपड़ी पर गई। वह हाथ में कुल्हाड़ी लेकर उधर भागा।

वहां पहुंचकर वह चिल्ला पड़ा, "हमारे गांव में अजनबी! तुरंत हमारा गांव छोड़ दो वरना मैं तुम्हें मार दूंगा।"

परंतु जैसे ही सरदार की नजर प्रिया के सौम्य चेहरे पर एवं विवेक के प्रभावशाली व्यक्तित्व पर पड़ी उसने अपनी कुल्हाड़ी गिरा दी। और अपने कुल में उनका स्वागत किया।

कुछ दिन में विवेक अन्य लकड़हारों की तरह लकड़ी काटना सीख गया। परंतु उसमें एक खासियत थी। जहां अन्य लकड़हारे सभी प्रकार की लकड़ियां काटते, विवेक सिर्फ बेशकीमती चंदन की। चंदन की लकड़ी के कुछ टुकड़ों को बांह में दबाकर वह दौड़कर बाजार चला जाता। इससे उसकी कमर भी कभी नहीं झुकी। उन्हें बेचकर हर बार वह सोने का एक सिक्का लेकर वापस प्रिया के पास आता। कुछ ही दिनों में टहनियों से बनी उनकी झोपड़ी ईंट एवं लकड़ी के एक मकान में बदल चुका था। प्रिया के चेहरे पर प्रसन्नता लौट आई थी। विवेक खुश था।

परंतु गांव के अन्य लकड़हारे विवेक की कार्य-कुशलता तथा ईंट एवं लकड़ी के बने उसके मकान से जलने लगे। और एक रात जब वह वापस आ रहा था तो उन्होंने उसे खूब पीटा। फिर दोनों को गांव से भगा दिया।

विवेक एवं प्रिया सुनसान अंधेरी रात में नाचते जुगनुओं के प्रकाश में भटकते रहे। दुःख से उनके आंसू बह आए। धीरे-धीरे अंधेरा मिट गया एवं सुनहला प्रकाश

फैल गया। अब वे धागा कातने एवं बुनने वाले जुलाहों के गांव में पहुंच चुके थे।

एक जुलाहे की बेटी होने के नाते प्रिया की अंगुलियां सूत कातने में दक्ष थीं। उसके द्वारा काते गए सूत इतने महीन एवं कोमल होते मानो हवा से बने हों। और इस सूत के एक छोटे से लच्छे के लिए बाजार में उसे सोने का एक सिक्का मिलता। एक-एक सिक्का जमा कर उसके पास सौ सिक्के हो गए। उन्हें धागे में पिरोकर उसने एक सुंदर हार बना लिया। फिर उसे अपने राजहंस से सुंदर गले में पहन लिया।

प्रिया की गरदन में सोने के सिक्कों का हार देखकर जुलाहों की पत्नियों की आंखें फटी रह गईं। उन्होंने ईर्ष्यावश एक दूसरे से कहा, "हम पूरे दिन बैठकर मोटे, मजबूत धागा की कई गांठ कात लेते हैं, फिर भी चांदी का ही एक सिक्का कमा पाते हैं। और प्रिया प्रतिदिन थोड़े से कमजोर, तंतुमय धागे कातकर, गले में सोने के सिक्कों का हार लटकाए घूम रही है।"

एक दिन गांव की महिलाओं के साथ प्रिया नदी किनारे गई। वहां खड़ा एक नाविक उसकी लावण्यमयी सुंदरता पर आसक्त हो गया। उसने तत्काल प्रिया की पतली कमर में बांह डालकर उसे नाव में बिठा लिया। और देखते-देखते नौ दो ग्यारह हो गया। प्रिया मदद के लिए चिल्लाती रही। पर ईर्ष्यालु महिलाओं ने आंखें फेर लीं। प्रिया को नाविक की दया पर छोड़ दिया।

नाविक द्वारा प्रिया के अपहरण की बात विवेक के कानों में गई। उस पर तो गम का पहाड़ टूट पड़ा। वह सारा दिन एवं पूरी रात नदी तट पर खाक छानता रहा। उसके पांव थककर चूर हो गए। और वह एक पेड़ के नीचे गिर गया। पता नहीं, कब उसे नींद आ गई।

सुबह सूर्य की किरण ने उसे नींद से जगाया। ठंडी हवा उसे सुकून पहुंचा रही थी। आंखें खोलते ही विवेक ने एक चितकबरे गाय को सामने खड़ा पाया। गाय ने विवेक को जी भरकर दूध पीने को दिया। जैसे ही वह प्रिया की तलाश में निकलने वाला था, उसकी नजर सुनहले गोबर पर गई। पास जाकर देखा तो वह चकित रह गया। गोबर बेशक सोना ही था।

उसने तुरंत सुनहले गोबर को उठाकर उसे ईंटों के आकार में ढाल लिया। हरेक ईंट पर विवेक ने अपना एवं अपने गांव का नाम खोद दिया। गाय प्रतिदिन आती। विवेक उसकी गोबर समेट, ईंटें बनाता। एक के ऊपर एक सोने की ईंटों का अंबार लग गया। धीरे-धीरे ईंटों का यह ढेर काफी ऊंचा हो गया। अब यह सोने के चमकते पहाड़ की तरह हो गया।

इस बीच, बेचारी प्रिया दुःख से कुम्हला गई थी। वह दुष्ट नाविक से मुक्ति के लिए लक्ष्मी की प्रार्थना करती रही। लक्ष्मी ने उसकी प्रार्थना सुन ली। उसके शरीर पर फोड़े निकल आए। चेहरा पीला एवं बदसूरत हो गया। इससे झल्लाकर, नाविक ने प्रिया को घसीटकर नाव के निचले अंदरूनी भाग में अन्य सामानों के साथ बंद कर दिया।

कई बंदरगाहों पर घूमकर अपना सारा माल बेचकर नाविक गांव वापस चल पड़ा। उसकी नाव आराम से बढ़ रही थी। अचानक उसकी नजर दूर, नदी तट पर, खड़े सोने के चमकते पहाड़ पर अटक गई। वह बेसब्री से नाव खेता हुआ वीरान तट पर पहुंचा। विवेक को देखते ही उसकी गर्दन पकड़कर नाव के अंदरूनी भाग में धकेल दिया। वहीं तो प्रिया भी कैद थी।

विवेक एवं प्रिया की जब नजरें मिलीं तो उनकी खुशी का ठिकाना न रहा। वे चुपचाप एक-दूसरे से गले मिले। नाविक के भय से वे कुछ बोल नहीं पा रहे थे।

लालच में अंधे, नाविक ने हांफते-हांफते सोने की ईंटें अपनी नाव में लाद लिया। फिर तेजी से नाव खेने लगा। वापसी का सफर लंबा था। और नाविक को अकेलापन खलने लगा। उसने दरवाजा खोल कर विवेक को बाहर बुलाया। फिर उससे कहा, "आओ, मेरे साथ खाओ, पीओ। हम चौपड़ का खेल खेलेंगे।"

एक के बाद दूसरा खेल जारी रहा। विवेक हर बाजी जीतता रहा। और नाविक गुस्से में दांत पीसता। अंत में क्रोधित होकर उसने विवेक को नदी के भंवर में फेंक दिया। हवा के तेज झोंके से पानी की लहर तेज हो गई थी। वह विवेक के शरीर को उछाल-पटक रही थी। उसकी सांस टूट रही थी। उसका साहस जाता रहा। और पानी की तेज धार उसे बहाकर दूर ले गई।

अगले दिन एक बूढ़ी महिला लकड़ी चुनने सुनसान तट पर गई। वहां

उसने एक अधमरे नंगे व्यक्ति को रेत पर लेटा पाया। वह उसे अपने झोपड़ी में ले गई। उसके शरीर को गरमी पहुंचाने के लिए अलाव जलाया। और उसे एक गिलास गर्म दूध पीने के लिए दिया।

विवेक शीघ्र ही होश में आ गया। जैसे ही उसने आंखें खोली, उसकी नजर ममता भरी दो बूढ़ी आंखों पर गई। जो उसे प्यार से निहार रही थी। विवेक की जिंदगी की दुःखदायी कथा सुनकर

उस बुढ़िया के चेहरे पर गम के बादल छा गए। वह चुपचाप अपने बगीचे में चली गई। वहां मुट्ठी भर चुनिंदा फूलों को तोड़कर राजमहल की ओर दौड़ पड़ी।

फूलों का शौकीन राजा उन फूलों को देखकर खुशी से झूम उठा। उसने पूछा, "तुमने ऐसे दुर्लभ फूल कहां पाए? तुम्हें इसके लिए मुंहमांगी कीमत मिलेगी।"

परंतु बुढ़िया घुटनों के बल बैठ, हाथ जोड़ प्रार्थना करते हुए बोली, "हे महान राजा! मुझे सोना-चांदी नहीं चाहिए। मुझ पर बस एक कृपा कीजिए। दरअसल मेरी झोपड़ी में एक कुलीन, ज्ञानी पुरुष आया है। उसकी पत्नी खो गई है। उसके पास एक पैसा नहीं है। और उसका घर बहुत दूर है। इसलिए मैं आपसे विनती करती हूं कि उसे अपना सेवक बना लीजिए।" राजा ने तुरंत विवेक को बुलवाया। उसे उस नदी से गुजरने वाले हरेक नाव से मालगुजारी वसूल करने की नौकरी पर लगा दिया।

विवेक पूरी तत्परता से काम में जुट गया। एक भी नाव उपयुक्त मालगुजारी दिए बिना वहां से नहीं गुजर पाती। परंतु दिन के अंत में, जब सूरज नदी के तट पर ढलने लगता, तो विवेक को प्रिया की याद सताने लगती।

एक रात नदी के तट पर विवेक अकेला लेटा था। शांत बहते नदी की कलकल ध्वनि उसके कानों में आ रही थी। अचानक मछलियों एवं मेंढकों ने पानी में हलचल पैदा कर दिया। पानी में बन रहे चांद की छाया डोलने लगी थी। अचानक उसने लकड़ी के चरमराने की आवाज सुनी। वह उछलकर खड़ा हो गया। और वीरान पड़े तट पर लालटेन लिए टहलने लगा। नदी में एक छाया चलती नजर आ रही थी। शीघ्र ही धुंधलके में उसे एक नाव दिख गया।

"ठहरो! कौन जा रहा है?" रात की शांति भंग करते हुए विवेक चीख पड़ा। आवाज सुनकर महल के रक्षक टॉर्च जलाए, हाथों में तलवार लिए दौड़ पड़े। विवेक नाव को रोकते हुए चिल्ला पड़ा, "नाविक को बंदी बना लो। उसने मेरी पत्नी एवं सोने की ईंटें चुराई है।" फिर तेज धड़कते दिल से नाव की ओर लपका। ताला तोड़कर उसने प्रिया को बाहर निकाला। प्रिया के फोड़े गायब हो चुके थे। वह पुनः नए खिले फूल की तरह सुंदर बन गई थी।

इधर रक्षकों ने उस नाविक को कैद कर लिया था। नाव की तलाशी ली गई। अंदर सोने की ईंटें लदी हुई थीं, जिन पर विवेक एवं उसके गांव का नाम खुदा था।

खुशी की इस घड़ी में प्रिया एवं विवेक अपना दुःख भूल गए। सात साल

लंबी दुःख की अवधि बीत गई थी। उन पर शनि का प्रकोप खत्म हो चुका था। एक दूसरे का हाथ पकड़े दोनों राजा के पास गए और फिर उस बुढ़िया की झोपड़ी में। उन्होंने सहायता एवं दया के लिए दोनों को धन्यवाद दिया। फिर उसी नाव में बैठकर, सोने की ईंटों के साथ खुशी-खुशी वापस अपने गांव पहुंचे।

इस तरह यह साबित हुआ कि शनि एवं लक्ष्मी दोनों का पद समान है। उनकी शक्ति बराबर है। और इस तरह स्वर्ग का झगड़ा खत्म हुआ। यह निश्चित हुआ कि गम का अंधेरा एक दिन दूर होता है। तब नई खुशियां जीवन में उजाला लाती है।

बस हुई कहानी खतम यहीं
ढलता सूरज हो चला लाल
मुंद गईं फूल की पंखुड़ियां
चुपचाप शाम आ गई द्वार

धीरे-धीरे बढ़ रही शाम
सो गए नींद से पंछी दल
झिल-मिल तारे चमके नभ में
तिल-तिल, क्षण-क्षण, पल-पल, पल-पल

यह छिपा चांद भी आ पहुंचा
भर रात करेगा करामात
अब हो गई गहरी रात-रात,
सो जा बच्चे, बस हुई बात।

दालिम कुमार–अनार वाला राजकुमार

बहुत पहले की बात है। एक राजा था। उसकी दो पत्नियां थीं। पर उनमें से किसी की संतान नहीं थी। राजा को एक पुत्र की बहुत लालसा थी। अपनी मृत्यु के बाद उसे कोई उत्तराधिकारी चाहिए था जो उसके राज्य को संभालता।

दोनों रानियों का अलग-अलग महल था। उन्हें प्रसन्न रखने के लिए सैकड़ों सखियां साथ रहती थीं। वे रानियों के लिए नाचती-गाती एवं कहानियां सुनातीं। अनगिनत सेवक रात-दिन उनकी सेवा में जुटे रहते। महल के चारों ओर बड़े-बड़े पेड़ों से घिरी ऊंची चारदीवारी थी। आम जनता का, महल के अंदर आना तो दूर, झांकना भी दुष्कर था।

पर एक दिन किसी तरह एक बूढ़ा फटीचर भिखारी, छोटी रानी के महल में घुस गया। वहां उसने एक कटोरी भात मांगी। किंतु रानी की सखियों ने यह कहकर उसे भगा दिया कि उनके पास देने के लिए भात का एक दाना भी नहीं है।

भूखा एवं थका भिखारी खाना मांगने बड़ी रानी के महल में गया। रानी स्वयं बाहर आई। उसे खाना एवं पानी दिया। फिर महल के ही एक फूल के पेड़ के नीचे आराम करने के लिए कहा। भोजनोपरांत भिखारी ने वहां आराम किया। उसके बाद रानी को धन्यवाद एवं आशीर्वाद देकर वह चल पड़ा। परंतु चलते-चलते उसने पूछा, "हे दयालु रानी! आपके कितने बच्चे हैं?"

"एक भी नहीं", इतना कहकर रानी उदास हो गई। तब भिखारी ने उसे साफ पत्ते में लिपटा एक जादुई सरसफल दिया। और कहा, "इस फल को पीसकर अनार के फूल के रस में मिलाकर भगवान का ध्यान कर पी लीजिएगा। नौ पूर्णमासी के बाद आप एक अद्वितीय सुंदर बालक को जन्म देंगी। उसका वर्ण अनार के फूल की तरह होगा। और आप उसका नाम 'दालिम कुमार' रखिएगा। याद रहे इसके जान के पीछे शत्रु लोग पड़े रहेंगे। पर मैं आपको एक गुप्त बात

बताता हूं जिसे आप राजा से भी नहीं कहिएगा। आपके बच्चे की जान महल के तालाब में रहने वाली एक रूपहले मछली के दिल में रहेगी। उस मछली के हृदय के मध्य में एक छोटे सुनहले डिब्बे के अंदर सोने का एक हार है। उसमें ही आपके बेटे की जान होगी।''

भिखारी बाहर निकला ही था कि यह खबर चारों तरफ फैल गई कि बड़ी रानी एक बच्चे की मां बनेंगी। यह सुनकर राजा बहुत प्रसन्न हुआ। वह शीघ्र ही अपने खजाने में गया। वहां सबसे अधिक कीमती आभूषण चुनकर रानी को भेंट कर दिया।

समय पूर्ण होने पर भिखमंगे के कथनानुसार रानी ने एक अद्भुत सुंदर बालक को जन्म दिया। उसका रंग दाड़िम के फूल की तरह सौम्य था। और उसका नाम पड़ा 'दालिम कुमार'। खुशी के मारे राजा की बांछें खिल गईं। नवजात राजकुमार को बांहों में भरे वह उस दिन की कल्पना करने लगा जिस दिन वह बालक राजा बनता। रत्नजड़ित राजमुकुट पहनकर विशाल राज-काज संभालता। पूरे राज्य में खुशियां मनाने का आदेश दिया गया। महल का द्वार अमीर-गरीब सब के लिए खोल दिया गया। बड़ी संख्या में लोग छोटे राजकुमार को देखने आते एवं उसे आशीर्वाद देते।

समय के साथ बढ़ते हुए दालिम कुमार एक सुंदर एवं प्रसन्नचित्त किशोर बन गया। उसके साथ खेलने के लिए कई दोस्त थे। पर, उसे महल के बागीचे में टहलते रंग-बिरंगे कबूतरों के साथ खेलना सबसे अच्छा लगता। वह उनकी गरदन में गुप्त संदेश बांधकर उन्हें अपने मित्रों के पास भेज देता। फिर, जवाब के संग, उनके वापस आने की प्रतीक्षा करता। परंतु कभी-कभी ये कबूतर उड़कर छोटी रानी के महल में पहुंच जाते थे। उनके पीछे भागता हुआ दालिम कुमार भी वहां पहुंच जाता।

एक दिन दालिम कुमार का प्रिय उजला कबूतर उड़कर छोटी रानी के महल में पहुंच गया। वह उसे पकड़ने भागा। पर रानी की सखियों ने उसे पहले ही पकड़ कर पिंजरे में कैद कर लिया था। राजकुमार ने कबूतर को छोड़ देने के लिए रानी से निवेदन किया। रानी ने कबूतर तो छोड़ दिया पर उसे आगे से सावधान रहने को कहा। उसने धमकी दी कि भविष्य में यदि कबूतर उसके बागीचे में दिखाई
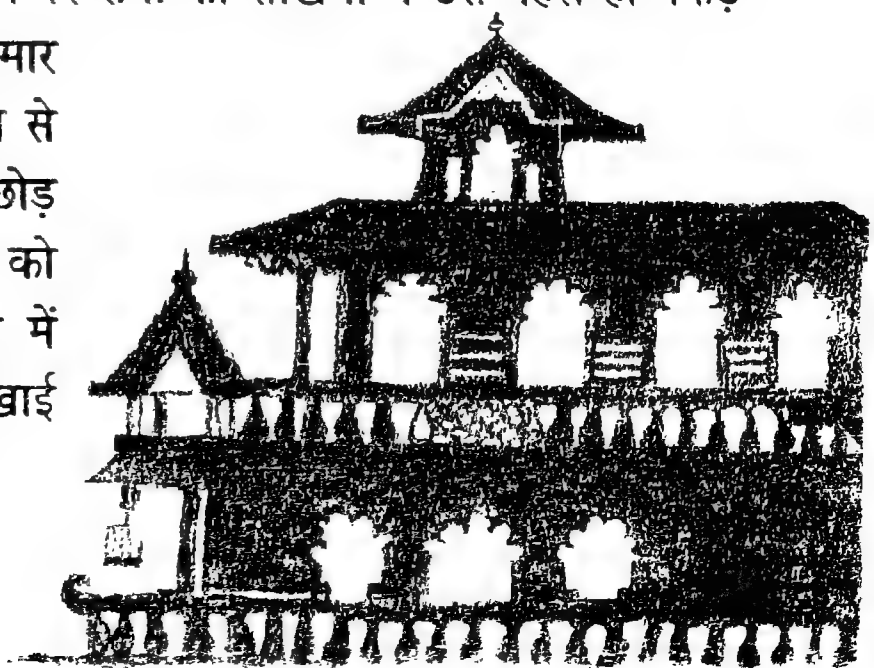
दिया तो उसे मारकर कौवों को खिला दिया जाएगा। दालिम कुमार ने रानी को धन्यवाद दिया। फिर उसके गले से लगकर वादा किया कि आगे ऐसा कभी नहीं होगा।

अब दालिम कुमार छोटी रानी को भी अपनी मां की तरह प्यार करने लगा। परंतु छोटी रानी को उससे घृणा थी। दरअसल उसके जन्म के बाद से ही राजा सिर्फ बड़ी रानी एवं दालिम कुमार का ध्यान रखते। छोटी रानी खुद को तिरस्कृत एवं परित्यक्त महसूस करने लगी थी। इतना ही नहीं, उसने गुप्तचरी में माहिर अपनी एक सखी से उस भिखारी की कहानी भी सुन चुकी थी। उसे पता था कि वह भिखारी खाना मांगने पहले उसी के महल में आया था। फिर वहां से निराश होकर वह बड़ी रानी के महल में गया जहां उसे खिलाया गया। बदले में उसने पत्तों में लिपटा एक जादुई सरसफल बड़ी रानी को दिया। उसने एक ऐसे बच्चे के जन्म की बात भी बताई जिसका प्राण उसके शरीर से बाहर होगा। पर वह सखी यह नहीं सुन सकी कि बच्चे का प्राण कहां होगा।

अगले दिन फिर दुर्भाग्यवश दालिम कुमार का कबूतर छोटी रानी के महल में जा पहुंचा। किंतु इस बार रानी ने उसे वापस करने से साफ मना कर दिया। वह मुस्कराते हुए बोली, "मैं तुम्हें कबूतर तब तक नहीं वापस दूंगी जब तक तुम मुझे एक बात नहीं बताओगे।"

"क्या बात...मां?" राजकुमार ने निश्छलता से पूछा।

इस पर रानी बोली, "कोई खास बात नहीं, मेरे लाल! मैं बस यह जानना चाहती हूं कि तुम्हारा प्राण कहां सुरक्षित है।"

"वह भला कहां हो सकता है, मेरे दिल के सिवा..." आश्चर्य से चौंक पड़ा राजकुमार।

परंतु रानी ने कहा, "मेरे भोले बच्चे! शायद तुम्हें नहीं पता है। तुम्हारी मां अवश्य जानती होगी।"

"परंतु, मेरी मां, मैंने आज तक ऐसा नहीं सुना है", यह कहते-कहते दालिम कुमार की आंखों में आंसू भर आए।

फिर रानी ने उससे कहा, "यदि तुम यह बात अपनी मां से पूछकर मुझे बताओगे तो मैं तुम्हारा कबूतर वापस दे दूंगी। हां, तुम्हें वादा भी करना होगा कि मां को नहीं बताओगे कि मैंने यह पूछा है। राजकुमार यह वादा कर अपने कबूतर के संग सहर्ष अपने महल पहुंच गया।

परंतु अगले दिन भी कबूतर छोटी रानी के बागीचे में जा पहुंचा। उसके
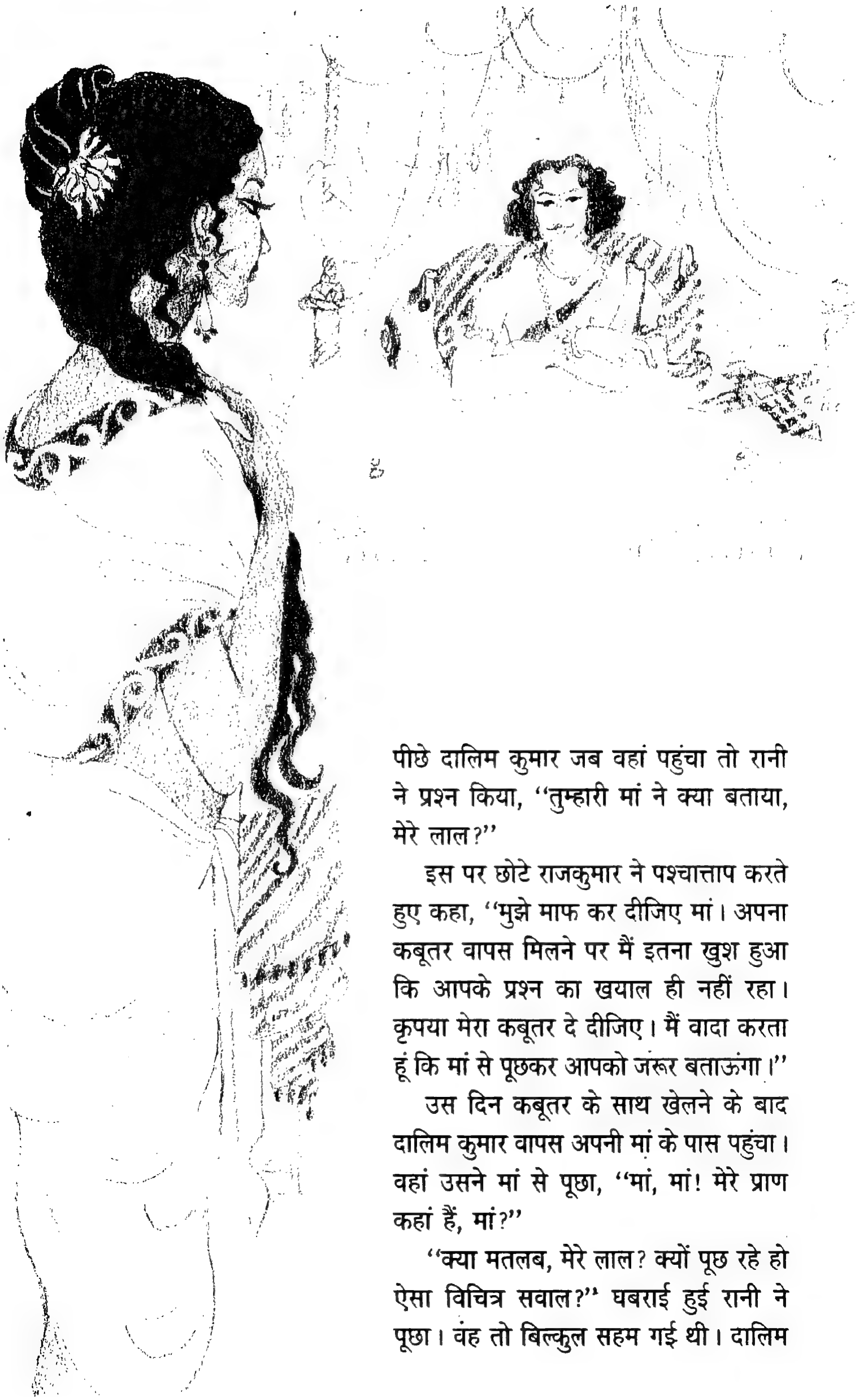
पीछे दालिम कुमार जब वहां पहुंचा तो रानी ने प्रश्न किया, "तुम्हारी मां ने क्या बताया, मेरे लाल?"

इस पर छोटे राजकुमार ने पश्चात्ताप करते हुए कहा, "मुझे माफ कर दीजिए मां। अपना कबूतर वापस मिलने पर मैं इतना खुश हुआ कि आपके प्रश्न का खयाल ही नहीं रहा। कृपया मेरा कबूतर दे दीजिए। मैं वादा करता हूं कि मां से पूछकर आपको जरूर बताऊंगा।"

उस दिन कबूतर के साथ खेलने के बाद दालिम कुमार वापस अपनी मां के पास पहुंचा। वहां उसने मां से पूछा, "मां, मां! मेरे प्राण कहां हैं, मां?"

"क्या मतलब, मेरे लाल? क्यों पूछ रहे हो ऐसा विचित्र सवाल?" घबराई हुई रानी ने पूछा। वंह तो बिल्कुल सहम गई थी। दालिम

कुमार याचना भरी आंखों से मां की ओर देखते हुए फिर से पूछा, "पर मां, मैंने तो सुना है कि आप मेरे प्राण का रहस्य जानती हैं। बताइए ना, वह कहां सुरक्षित है।"

रानी को तो मानो सांप सूंघ गया। वह अवाक् रह गई। उसे इस बात की हैरानी थी कि जिस राज को उसने राजा से भी छिपा लिया था, वह राजकुमार को किसने बताया। पहले तो उसने राज बताने से साफ मना कर दिया। परंतु राजकुमार कहां मानने वाला था। वह रोता रहा। उसने तो खाना-पीना भी छोड़ दिया। अंत में रानी ने हारकर अब तक छिपे इस राज को दालिम कुमार के सामने प्रकट कर दिया।

दालिम कुमार उसी दिन छोटी रानी के महल में पहुंचा और अपनी मां द्वारा बताए गए राज उसे बता दिया। छोटी रानी रहस्य समझते ही राजकुमार को जान से मारने की ठान ली। उसने तुरंत राजा को संदेश भेजा कि वह बहुत बीमार है। और वैद्य के अनुसार महल के तालाब के अंदर रहनेवाली रूपहली मछली का दिल खाने से ही उसकी बीमारी खत्म हो सकती है। राजा ने तुरंत मछुआरा को बुलवाया। मछुआरे ने पहली बार ही जाल फेंका था कि वह मछली फंस गई। उसे शीघ्र छोटी रानी के पास भेज दिया गया।

इधर, जैसे ही मछली पकड़ी गई दालिम कुमार की तबीयत बिगड़ गई। उसके काटे जाने पर वह गिरकर धराशायी हो गया। यह बुरी खबर जैसे ही बड़ी रानी के कानों में गई वह दुःख से बेहोश हो गई। राजा यह मानने के लिए तैयार नहीं था कि उसकी आंखों का तारा मर चुका है। उसने पार्थिव शरीर को ग्रीष्मकालीन महल में ऐसे रखवा दिया मानो दर्शनार्थियों के लिए रखा हो। वहां राजकुमार की सुविधा के लिए हर संभव इंतजाम किया गया। परंतु उस महल में दालिम कुमार के सबसे अच्छे दोस्त नंद के अलावा कोई नहीं जा सकता था। उसी के पास महल की चाबी रहती थी।

इस बीच मछली के हृदय से निकला सोने का डिब्बा छोटी रानी के कब्जे में आ गया। उसने शीघ्र ही सोने के हार को उसमें से निकाल अपने गले में डाल लिया। वह दिन भर उसे पहने रही। परंतु रात में बाहर निकालकर उसे अपने तकिए के नीचे छिपा दिया ताकि उसकी चोरी न हो जाए।

उसी रात दालिम कुमार का मित्र नंद ग्रीष्मकालीन महल में पहुंचा। दरवाजा खोलते ही उसकी नजर सुनहले भवन में टहलते उजली छाया पर गई।

पहले तो वह सकते में आ गया। उसे लगा कि कोई भूत है। परंतु नजदीक जाने पर तो वह दंग रह गया। वह भूत नहीं, खुद दालिम कुमार था। बिल्कुल हाड़-मांस का बना, दालिम कुमार।

"दालिम कुमार, क्या तुम सचमुच जीवित हो, या, मैं कोई भूत देख रहा हूं? कृपया बताओ। मैं चकरा गया हूं। घबरा गया हूं," चौंक कर नंद ने सवाल किया।

इस पर दालिम कुमार ने अजीब बात बताई। उसने कहा, "नंद, मैं दिन भर शव बना रहता हूं। पर रात आते ही मेरी जिंदगी लौट आती है। मैं तो खुद चकरा गया हूं। पता नहीं चलता कि मैं जीवित हूं या मर गया।"

नंद उस महल में हरेक रात जाने लगा। वहां दालिम कुमार उसके स्वागत में जीवित एवं जगा रहता। वे साथ-साथ खाते-पीते और खेलते थे। परंतु दालिम कुमार की जिंदगी उनके लिए पहेली बनी रही।

एक रात जब दालिम कुमार एवं नंद चौपड़ के खेल में मग्न थे, दरवाजे के ठोकने की धीमी आवाज आई। नंद तो उछल पड़ा। उसने जैसे ही दरवाजा खोला। एक अत्यंत रमणीय युवती अंदर आई।

दालिम कुमार ने पूछा, "सुंदरी, तुम कौन हो? जाड़े की इस ठंडी रात में यहां क्यों आई हो?"

"मेरा नाम नैना है। मैं एक प्रसिद्ध ज्योतिषी की बेटी हूं। मेरे पिता की भविष्यवाणी है कि मेरा विवाह एक मृत राजकुमार से होगा। अब चूंकि मैं विवाह योग्य हो गई हूं। अतएव मैं अपने घर एवं गांव से भाग आई हूं। मैं अपने ऊपर आने वाले विपत्ति से बचना चाहती हूं।" यह कहते-कहते उस सुंदरी की आंखें भर आईं।

"भाग्य के लेखे से कोई नहीं बच सकता", चकित राजकुमार बोल पड़ा। उसने कहा, "मैं ही मृत राजकुमार हूं। तुम मेरी दुलहन बनोगी?"

सुंदरी यह सुनकर दंग रह गई। उसने प्रश्न किया, "परंतु आप तो जीवित हैं। मुझसे बातें कर रहे हैं। फिर, आप मृत राजकुमार कैसे हो सकते हैं, जिससे मेरा विवाह होना तय है।"

"अंदर आओ। मैं तुम्हें अपनी कहानी सुनाता हूं। फिर तुम्हें सब पता चल जाएगा", यह कहते हुए राजकुमार उसे महल के अंदर ले गया।

दालिम कुमार पूरी रात आपबीती सुनाता रहा। और वह सुंदरी चुपचाप गंभीरतापूर्वक सुनती रही। परंतु, सूर्योदय होते ही राजकुमार तो मानो सदा के लिए

सो गया। संगमर्मर की मूर्ति की तरह ठंडा पड़ा उसका शरीर बिल्कुल निर्जीव हो गया था। अकेली नैना दिन भर डर के मारे रोती रही। रात होते ही दालिम कुमार पुनः जीवित हो गया। उन्होंने एक साथ खाना खाया और रात भर बातें करते रहे। परंतु रात का अंधेरा छंटते ही राजकुमार पुनः निर्जीव हो जाता। इस तरह दोनों जिंदगी एवं मौत के बीच लुकाछिपी के इस खेल को सात वर्षों तक देखते रहे। इस बीच नैना ने दो सुंदर बालकों को जन्म दिया। वे देखने में बिल्कुल अपने पिता की तरह थे।

नैना सात वर्षों की इस लंबी अवधि को धैर्यपूर्वक काट गई। लेकिन अब दालिम कुमार की जिंदगी में चल रही लुकाछिपी से वह तंग आ गई थी। उसे अपने बच्चों के भविष्य की चिंता भी सता रही थी। इसलिए एक दिन जब नंद वहां पहुंचा तो नैना ने उसे एकांत में पूछा, "हे नंद भैया, दालिम कुमार की इस अजीब जीवन शैली को हमें कब तक देखना पड़ेगा। इस रहस्यमय संकट से निकलने का कोई उपाय नहीं है क्या?"

दुःखी नंद ने जवाब दिया, "नैना बहन, मैं तुम्हारी मनोदशा समझ सकता हूं। मैंने इस रहस्यमयी समस्या पर गंभीरता से सोचा है। और अपनी समझ से हम इस समस्या का हल निकाल सकते है। लेकिन तुम्हें वह सब करना होगा जो मैं कहूंगा। इसलिए तुम एक स्त्री-नाई का वेश बनाकर अपने बच्चों के साथ महल में जाओ। वहां दोनों रानियों की सेवा में जुट जाओ। तब हम देखते हैं कि आगे क्या होता है।"

नैना को पहले से ही पता था कि दालिम कुमार की जिंदगी सोने के उस हार में थी जो सुनहले मछली के दिल में छिपे एक डिब्बी में था। दालिम कुमार ने उसके सामने अपनी मां द्वारा बताया गया राज खोल दिया था। इस बीच काफी गहराई से सोचने के बाद नंद इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि वही हार छोटी रानी के गले में दिन भर रहता था। रात में वह उसे उतार देती थी। शायद यही वजह थी कि दिन भर दालिम कुमार निर्जीव होता तथा रात में जैसे ही छोटी रानी हार उतारती वह सजीव हो उठता।

अगले दिन नंद ने स्त्री-नाई के उपयोग में आने वाले औजारों का एक डिब्बा नैना को दिया। नैना वेश बदलकर अपने दोनों लड़कों के साथ महल में गई। पहले वह बड़ी रानी के पास पहुंची और उनके बाल धोने एवं पैर रंगने की अनुमति मांगी। परंतु बालकों को देखकर रानी की आंखें भर आईं। दोनों लड़के हू-ब-हू बचपन के दालिम कुमार की तरह दिखते थे।
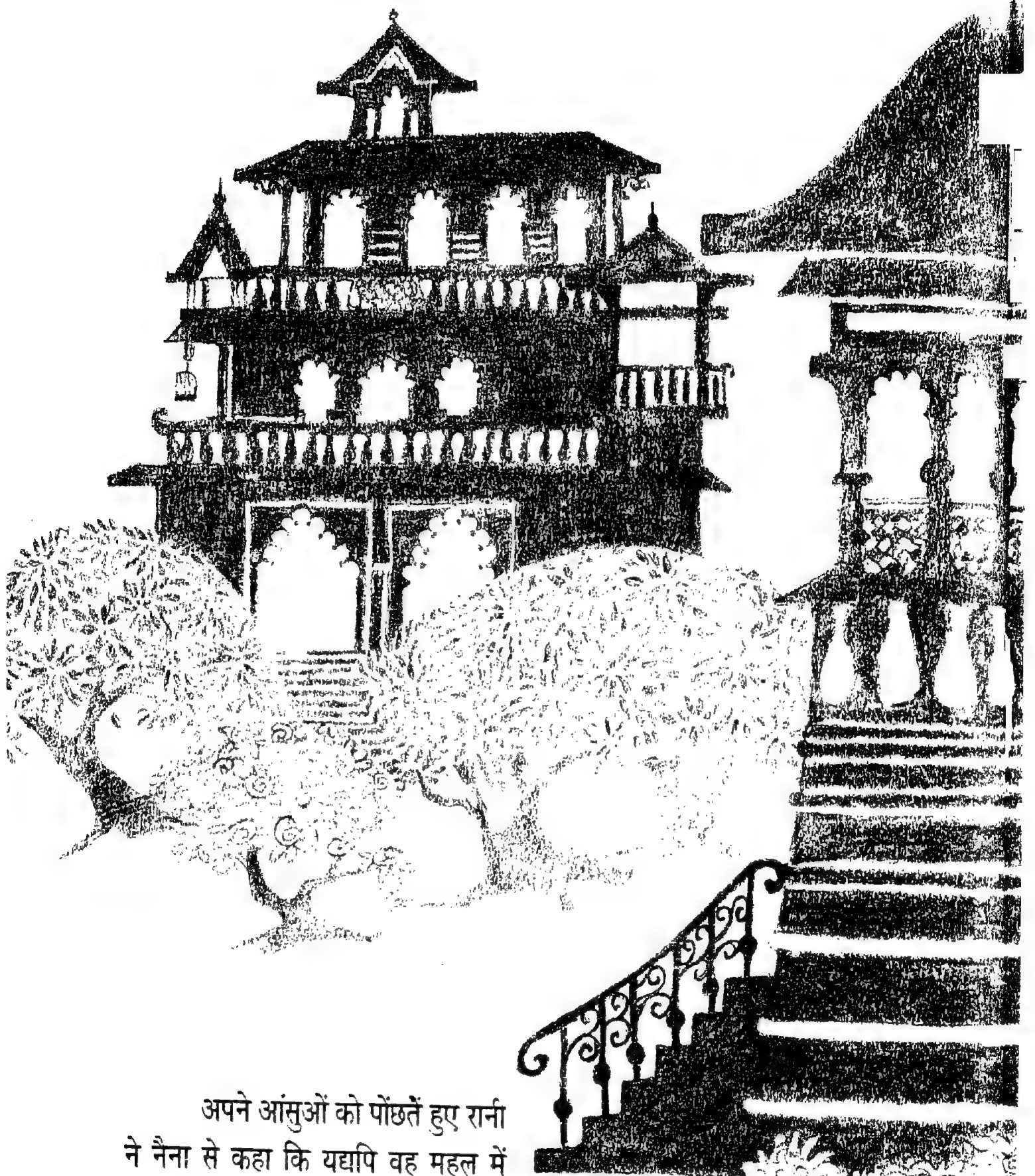
अपने आंसुओं को पोंछतें हुए रानी ने नैना से कहा कि यद्यपि वह महल में रहती है पर अपने पुत्र की मृत्यु के बाद स्त्रियोचित श्रृंगार से परहेज करती है। वह अब एक संन्यासिन की जिंदगी बिता रही है। फिर उसने दोनों बालकों को प्यार से सहलाया एवं चूमा और खाना एवं पैसा देकर विदा कर दिया।

नैना अब छोटी रानी के महल में गई। वहां भी उसने रानी से बाल धोने एवं पैर रंगने की अनुमति मांगी। नैना

रानी की सेवा में जुटी ही थी कि उसका छोटा लड़का चमकते हार को रानी की गरदन से झटक कर निकाल लिया। नैना ने लाख कोशिश की कि लड़का हार वापस कर दे, परंतु बेकार। लड़का रो-रोकर बेसुध हो गया परंतु हार वापस नहीं दिया। रानी को लड़के पर दया आ गई, उसने नैना से कहा, "बच्चे को अब मत रुलाओ, पहले से ही उसका गला बैठा जा रहा है। उसे वह हार घर ले जाने दो। उसके सो जाने के बाद हार वापस कर जाना।" दरअसल रानी हार के लिए बिल्कुल निश्चिंत थी। उसने तो दालिम कुमार को कब का मरा मान लिया था।

नैना मुस्कराते हुए अपने बच्चों एवं सुनहले हार के साथ वापस दौड़ पड़ी। खुशी से उसके पांव जमीन पर नहीं पड़ रहे थे।

ठीक उसी पल, सूर्योदय के उजाले ने दालिम कुमार की आंखें खोली। वह उठ बैठा और चारों तरफ चौंधियाई आंखों से देखने लगा। ऐसा लगता था मानो किसी अंधे को अचानक आंखों में रोशनी मिल गई हो। नैना कुछ ही क्षणों में दौड़ती हुई वहां पहुंची। उसने सुनहला हार राजकुमार के गले में डाल दिया। फिर उसने राजकुमार को यह भी बताया कि किस तरह उसके बच्चे ने रानी की गरदन से हार झटक लिया था।

अब दालिम कुमार की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। उसने अपनी पत्नी को गले से लगाया और बच्चों को चूमता हुआ कहने लगा, "जीवित एवं जाग्रतावस्था में साथ बिताए रातों ने हमें चांद एवं तारों की सुंदरता दिखाई। अब हम दिन का उजालापन एवं रात का सौंदर्य निश्चिंत एवं निर्भीक होकर देखेंगे।"

इस बीच वही भिखारी महल में फिर पहुंचा और उसने बड़ी रानी से कहा, "हे रानी मां, दालिम कुमार कभी मरा नहीं था। वह आज भी जीवित है। आप राजा के साथ ग्रीष्मकालीन महल में जाइए और दालिम कुमार, उसकी पत्नी एवं उनके बच्चों को वापस अपने महल में, अपने लोगों के बीच ले आइए।"

भिखारी को महल में घुसते हुए छोटी रानी के गुप्तचरों ने देख लिया था। रानी के साथ उसकी बातचीत सुनी जा चुकी थी। और इन सबका ब्यौरा छोटी रानी तक पहुंचा दिया गया था। छोटी रानी तो मारे डर के कांपने लगी थी। उसे जरा भी शक नहीं रहा कि उसकी पोल खुलने वाली है। और उसे किए गए करतूतों की सजा मिलेगी। वह भय एवं गुस्से से पागल महल के तालाब की ओर बेतहाशा भागी। उसने जैसे ही पानी में छलांग लगाई, भूखी मछलियों का झुंड उस पर टूट पड़ा। देखते-देखते उसका नामो-निशान मिट गया।

अगला दिन बहुत सुहावना था। अदृश्य दैवीय अंगुलियों ने आकाश में सतरंगी इंद्रधनुषी फैलाया। ओस की बूंदें फूलों की सुगंध में लिपट पूरे वातावरण को सुवासित कर रही थी। कुल मिलाकर माहौल में एक अजीब सम्मोहन व्याप्त था। महल के द्वार पर स्वागत करने के लिए लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी थी। राजा एवं रानी अपने लाडले पुत्र दालिम कुमार, उसकी सुंदर पत्नी एवं उनके छोटे-छोटे दोनों बच्चों के साथ अपने राज्य वापस आ गए थे।

बस हुई कहानी खतम यहीं
ढलता सूरज हो चला लाल
मुंद गईं फूल की पंखुड़ियां
चुपचाप शाम आ गई द्वार

धीरे-धीरे बढ़ रही शाम
सो गए नींद से पंछी दल
झिल-मिल तारे चमके नभ में
तिल-तिल, क्षण-क्षण, पल-पल, पल-पल

यह छिपा चांद भी आ पहुंचा
भर रात करेगा करामात
अब हो गई गहरी रात-रात,
सो जा बच्चे, बस हुई बात।

माथे पर चांद वाला लड़का

बहुत पहले की बात है। एक संपन्न नगर में एक गरीब बुढ़िया रहती थी। वह इधर-उधर घूम-घूमकर फटे-पुराने कपड़े एवं टूटा-फूटा सामान चुनती थी। उसका जीवन निर्वाह करने का एकमात्र जरिया यही था। इससे किसी तरह उसकी भूख शांत हो पाती थी।

बुढ़िया की एक अद्‌भुत सुंदर बेटी थी। उसके सौम्य चेहरे पर सुख-दुःख, आनंद-व्यथा, हंसी एवं आंसू की महीन लकीरें साफ झलक जाती थीं। परंतु उसके नसीब में गरीबी एवं भूख लिखा था। हां, उसके पास से गुजरने वाला हर व्यक्ति उसकी सुंदरता पर मोहित हुए बिना नहीं रह पाता। वह चाहे स्वर्ण देकर सुंदरता खरीदनेवाला राजा हो या, फिर प्यार भरी अंगुलियों से सहलाकर गीली मिट्टी को आकार देनेवाला, उसे सुंदर बनानेवाला साधारण कुम्हार हो।

अपूर्व सुंदरता की बदौलत उसकी दोस्ती तीन युवतियों से हो गई। वे सभी प्रतिष्ठा एवं हैसियत में उससे कहीं ऊंची थीं। उनमें से एक प्रधानमंत्री की बेटी थी तो दूसरी एक धनी व्यवसायी की। तीसरी राजपुरोहित की बेटी थी।

एक दिन महल के निकट ही एक झील में तीनों सखियां उस बुढ़िया की बेटी के साथ स्नान कर रही थीं। झील के ठंडे पानी में आनंदित होकर उनमें से प्रत्येक ने अपनी-अपनी विशेष प्रतिभा का बखान शुरू कर दिया।

प्रधानमंत्री की बेटी ने कहा, "सुनो सखियो, मुझसे विवाह करनेवाला व्यक्ति खुश रहेगा। उसे मेरे लिए कभी वस्त्र नहीं खरीदना पड़ेगा क्योंकि जो वस्त्र मैं पहनती हूं वह न तो कभी मैला होगा और न ही पुराना होकर फटेगा।"

व्यवसायी की बेटी ने कहा, "मुझसे विवाह करनेवाला व्यक्ति भी सदैव खुश रहेगा क्योंकि खाना पकाने के लिए जिस ईंधन का इस्तेमाल मैं करूंगी वह जलकर राख नहीं होगा। उसका उपयोग एक के बाद दूसरे दिन और इस तरह सालों-साल किया जा सकता है।"

"मेरा पति भी कोई भाग्यशाली ही होगा", राजपुरोहित की बेटी ने कहा। "मैं जो चावल पकाऊंगी वह कभी बासी नहीं होगा। और न ही खत्म होगा। हमारे खाने के बाद भी बर्तन भरा रहेगा", राजपुरोहित की बेटी ने गर्व से कहा।

अंत में गरीब बुढ़िया की बेटी बोली, "मुझसे विवाह करने वाला व्यक्ति भी नसीब वाला होगा। मैं जुड़वां बच्चों को जन्म दूंगी। एक लड़का होगा, एक लड़की। लड़की दिव्य सुंदरी होगी और लड़के के माथे पर चांद एवं उसके हाथों की तलहत्थी पर तारे होंगे।"

उन लड़कियों ने बोलना शुरू ही किया था कि राजा अपने विशाल सफेद घोड़े पर सवार उधर से गुजरा। उसने रुककर उनकी बातें सुन ली। वह मन ही मन बोला, "जिस लड़की के कपड़े मैले नहीं होते और न ही पुराने होकर फटते हैं वह जाए भाड़ में। मैं तो अपनी पत्नी को सोने के धागे से बुना एवं रत्नों से सजा अनगिनत पोशाक दे सकता हूं। उन्हें देखकर यहां की हर कुंवारियां ईष्यालु हो जाएंगी। मुझे तो उस लड़की में भी दिलचस्पी नहीं है जिसका ईंधन कभी जलकर राख नहीं होगा। मेरे शाही रसोईघर में तो इतना ईंधन है जो पूरी दुनिया को जला सकती है। मैं तीसरी कुंवारी की भी परवाह नहीं करता। मेरे शाही अन्नागार में इतना अन्न है जिससे पूरी दुनिया के राजाओं एवं समस्त जनता को खिलाया जा सकता है। परंतु चौथी लड़की! उसकी सुंदरता तो स्वर्ग की देवियों से बढ़कर है। वह एक दिव्य पुत्री को जन्म देगी। उसका एक बेटा भी होगा जिसके माथे पर चांद एवं तलहत्थी पर तारे अंकित होंगे। मैं ऐसी ही लड़की चाहता हूं। उसी से विवाह करूंगा।"

हालांकि राजा की चार रानियां थीं, पर किसी ने एक भी बच्चे का जन्म नहीं दिया था। इससे मंत्रीगण परेशान रहते थे। उनके अनुसार बिना उत्तराधिकारी का राजा, बिल्कुल ताप एवं रोशनी विहीन सूर्य की तरह था। इसलिए उन्होंने राजा को अनुनय-विनय से पांचवीं शादी के लिए राजी कर लिया। हो, न हो, पांचवीं रानी के भाग्य में लड़का होता जो राजा के विशाल राज्य को संभालता। और सुनहली राजगद्दी पर बैठता।

राजा का दिल भी बुढ़िया की सुंदर बेटी पर आ गया था। उसने अपने सेवकों को उस लड़की का परिवार एवं पता-ठिकाना मालूम करने के लिए भेजा। वापस आकर सेवकों ने दुःखी होते हुए कहा कि वह सुंदर लड़की तो निम्न कुल

की है। उसकी मां टूटा-फूटा एवं रद्दी चुनने वाली एक गरीब बुढ़िया है।

इस पर क्रुद्ध प्रधानमंत्री हठात् बोल पड़ा, "राजा भला कैसे निम्न कुल की उस लड़की से विवाह कर सकते हैं जो किसी तरह राजघराने के काबिल नहीं है?"

परंतु राजा ने कहा, "कोई बात नहीं है। मैं केवल उसी से विवाह करना चाहता हूं।"

उसी दिन राजा ने बुढ़िया को बुलावा भेजा। राजा के संदेशवाहकों को अपनी झोपड़ी के बाहर खड़े देख बुढ़िया डर से थर-थर कांपने लगी। उसने सोचा, शायद महल के इर्द-गिर्द वर्जित क्षेत्र में घूमने की सजा होगी। परंतु डर से कांपती हुई बुढ़िया संदेशवाहकों के पीछे चल पड़ी। उन्होंने बुढ़िया को राजा के व्यक्तिगत कक्ष में ले जाकर छोड़ दिया।

वहां राजा ने उससे पूछा, "क्या यह सच है कि तुम्हारी एक बेटी है जो प्रेम एवं सुंदरता की देवी से कहीं अधिक सुंदर है? और उसकी मित्रता मेरे प्रधानमंत्री एवं राजपुरोहित की बेटियों से है।"

गरीब बुढ़िया का शरीर डर से थर-थर करने लगा। उसके होंठ कांप रहे थे। और दिल बैठा जा रहा था। वह राजा के चरणों पर गिरकर दया की भीख मांगने लगी।

राजा ने झुककर उसे जमीन पर से उठाते हुए कहा, "हे भद्र महिला, मैं आपकी बेटी से विवाह कर उसे अपनी रानी बनाना चाहता हूं।"

गरीब बुढ़िया तो सुन्न पड़ गई थी। राजा को देखती उसकी आंखें आश्चर्य से फटी रह गई। वह तो बिल्कुल अवाक रह गई थी मानो बोलने के लिए उसके पास शब्द ही नहीं हों। परंतु उसके दिल की बेचैनी दूर करते हुए राजा दयाभाव से बोला, "अपने अंदर समाए भय एवं दुःख को दूर कीजिए। मैं वाकई आपकी बेटी से विवाह कर उसे अपनी रानी बनाना चाहता हूं।"

शीघ्र ही पूरे राज्य में यह खबर फैल गई कि राजा निम्न कुल की एक दिव्य सुंदरी से विवाह करने वाले हैं। यह सुनते ही चारों रानियों का दिमाग झन्ना गया। सबसे बड़ी रानी ने गुस्से से आगबबूला होते हुए पूछा, "हे सहृदय राजा, यह कैसा पागलपन आप पर सवार हो गया है? आप एक ऐसी लड़की से विवाह करना चाहते हैं जो हमारे नौकरानी होने के लायक भी नहीं है। और हमें उसे बराबरी का दर्जा देना होगा।" परंतु राजा अपने निर्णय पर अटल था।

अगले दिन ही राज-ज्योतिषी को बुलवाकर एक शुभ दिन निश्चित किया
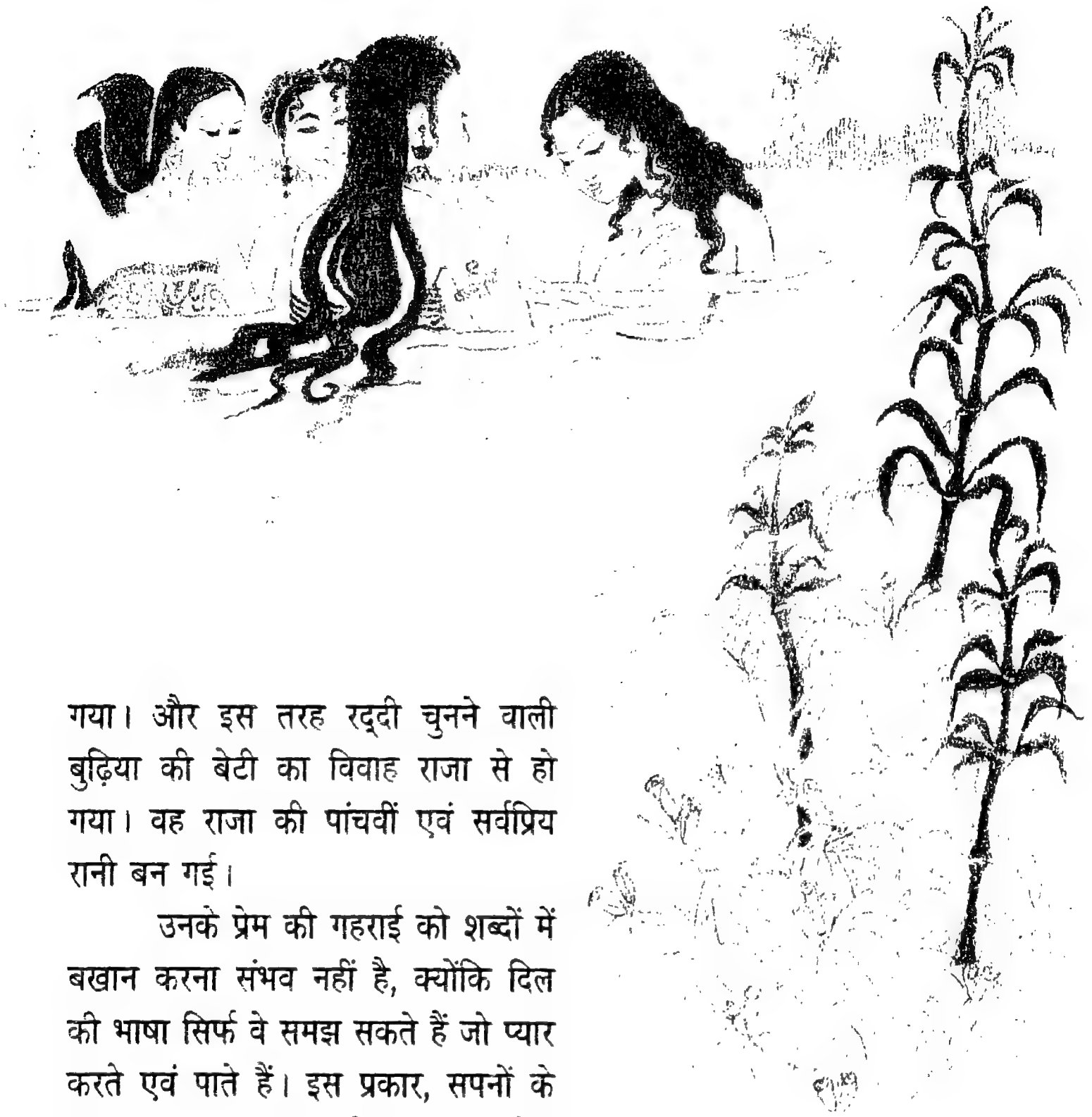
गया। और इस तरह रद्दी चुनने वाली बुढ़िया की बेटी का विवाह राजा से हो गया। वह राजा की पांचवीं एवं सर्वप्रिय रानी बन गई।

उनके प्रेम की गहराई को शब्दों में बखान करना संभव नहीं है, क्योंकि दिल की भाषा सिर्फ वे समझ सकते हैं जो प्यार करते एवं पाते हैं। इस प्रकार, सपनों के पंख पर सवार, समय उड़ने लगा। एक दिन राजा ने रानी से कहा, "प्रिये, एक राजा के कर्तव्य का पालन करने के लिए मुझे आपसे कुछ दिन अलग रहना होगा। मुझे इस विशाल राज्य के अन्य भागों की देखभाल भी करनी होगी। तुम इन दिनों गर्भवती हो और मैं बच्चे के जन्म के समय तुम्हारे नजदीक रहना पसंद करूंगा। दरअसल राजमहल का षड्यंत्र तुम्हारी समझ से परे है। इसलिए मैं तुम्हें यह सुनहला घंटी देता हूं। जैसे ही बच्चा जन्म लेने वाला हो, तुम इसे एक बार बजा देना, मैं पलक झपकते ही तुम्हारे नजदीक पहुंच जाऊंगा। परंतु ध्यान रहे, यह घंटी ठीक उसी पल बजाना जब बच्चा जन्म लेने वाला हो। एक क्षण पहले भी नहीं।

चारों रानियों ने चुपके से राजा की बात सुन ली थी। राजा के जाते ही वे छोटी रानी के कक्ष में आ धमकीं।

सबसे बड़ी रानी ने आते ही पूछा, "तुमने ऐसी सुंदर घंटी कहां से ली? इसे अपने बिस्तर के पास क्यों लटका रखी है?"

निर्दोष छोटी रानी का जवाब था, "राजा ने यह घंटी मुझे दी है। उन्होंने कहा है कि जब हमारा बच्चा जन्म लेने वाला हो तब इसे बजाना। उन्होंने यह भी कहा कि वे कहीं भी हों, घंटी की आवाज सुनकर पलक झपकते ही मेरे बगल में होंगे।"

"असंभव!" उनमें से एक रानी ने कहा। फिर उसने जोड़ देते हुए कहा, "राजा ने मजाक किया होगा। वे भला कैसे मीलों दूर से इसकी आवाज सुन सकते हैं? और, फिर पलक झपकते वे तुम्हारे निकट आ जाएंगे! अभी घंटी बजाकर देखो, तुम्हें पता चल जाएगा कि राजा ने झूठ कहा था या सच।"

पहले तो छोटी रानी घंटी बजाने से आनाकानी करती रही। परंतु अन्य रानियों ने उसे अंततः फुसला ही लिया। छोटी होने के लिहाज से पवित्र आत्मा वाली रानी ने धीरे से घंटी बजा ही दी। उस समय राजा अपने नियंत्रण में पड़ने वाले किसी अन्य राज्य की राजधानी के मार्ग में था। परंतु घंटी की आवाज सुनते ही वह पीछे मुड़ा और कुछ पलों में रानी के कक्ष में प्रकट हो गया। वहां छोटी रानी को अपने सहेलियों के संग मजे से बातें करते देख वह चौंक गया। उसने सीधे सवाल किया, "क्या मैंने नहीं कहा था कि ठीक प्रसव के वक्त घंटी बजाना, एक पल भी पहले नहीं?"

"बिल्कुल, मेरे स्वामी, आपने कहा था। मैंने यह जांचना चाहा कि आपने जो कहा वह सत्य है।" छोटी रानी ने यह नहीं कहा कि बड़ी रानियों ने ऐसा करने को उकसाया था।

यह सुनकर दुःखी होते हुए राजा ने पूछा, "प्रिये, तुम्हें मेरी बात पर शक कैसे हुआ? क्या तुम्हें मेरे प्रेम की गहराई में संदेह है?" परंतु जैसे ही राजा की नजर रानी के गालों पर लुढ़कते आंसुओं पर गई उसने अपने गुलुबंद से उसे पोंछ दिया, फिर रानी को गले लगाते हुए उसने कहा, "अब तो तुम्हें यकीन हो गया है कि जो मैंने कहा वह सच है। इसलिए ध्यान रखना कि प्रसव से पूर्व घंटी नहीं बजे।"

राजा के बिना छोटी रानी को एक-एक दिन भारी लग रहा था। इस बीच

एक भयंकर तूफानी रात में एक बार फिर चारों रानियां उसके कक्ष में आ धमकीं। सबसे बड़ी रानी ने गंभीरता से कहा, ''बच्चा के जन्म की घड़ी नजदीक आ रही है। पिछली बार तो घंटी की आवाज राजा तक गई थी क्योंकि वे महल से अधिक दूर नहीं थे। और हवा भी शांत थी। परंतु अभी तो वर्षा एवं आंधी का समय है। इसलिए मुझे डर है कि कहीं घंटी की आवाज राजा के कानों तक नहीं पहुंचे। तुम एक बार फिर घंटी बजाकर देख लो कि इसकी आवाज राजा के कानों तक पहुंचती है या नहीं, ताकि तुम दोनों के चिरप्रतीक्षित बच्चे के जन्म के समय वे तुम्हारे समीप रहें।''

छोटी रानी ने काफी देर तक इसका विरोध किया। परंतु बड़ी रानियां उस पर हावी हो गईं। और हारकर, छोटी रानी ने घंटी बजा ही दी। राजा उस समय राजधानी में अपने दरबार में फरियाद सुन रहा था। घंटी की आवाज सुनते ही उसने दरबार बर्खास्त कर दिया और तत्क्षण रानी के कक्ष में प्रकट हो गया। इस बार राजा अपने आपे से बाहर हो गया। गुस्से से बिफरते हुए उसने कहा, ''तुमने फिर मेरे प्रेम एवं वचन पर शक किया है। अब मैं तुम्हें भाग्य भरोसे छोड़ता हूं। आवश्यकता पड़ने पर भी यदि तुम घंटी बजाओगी, मैं नहीं आऊंगा। भले ही तुम जोर-जोर से घंटी बजाती रह जाओ।''

रानी ने इससे पहले राजा का गुस्सा नहीं देखा था। वह हताश होकर रोने लगी। फिर उसने कहा, ''हे स्वामी! मुझे माफ कर दीजिए। मेरे बच्चे का जन्म अब शीघ्र ही होने वाला है। और मैं आश्वस्त होना चाहती हूं कि उस क्षण घंटी की आवाज हमारे बीच के फासले को पार कर आप तक पहुंचे।'' परंतु इस बार भी उसने राजा को यह नहीं बताया कि बड़ी रानियों की जिद्द पर उसने घंटी बजाई थी। औरा राजा बिना कुछ बोले वहां से चला गया।

अंततः शुभ घड़ी आ ही गई। छोटी रानी बार-बार घंटी बजाती रही। हर चोट के साथ आवाज तेज होती गई। घंटी की गूंज पूरे राज्य में ही नहीं वरन जंगल के पार भी सुनाई दे रही थी। परंतु दुर्भाग्यवश, राजा वापस नहीं आया।

अब बड़ी रानियों को विश्वास हो गया कि राजा नहीं आएंगे। उन्होंने महल के धाई को बुलवाया और उसे सोने की मोहरों वाली थैली देकर नवजात शिशु को खत्म करने के लिए कह दिया। इतना ही नहीं उस बच्चे की जगह राजा के खास कुत्ते के नवजात बच्चों की जोड़ी रखने के लिए भी कह दिया। शीघ्र ही रानी ने जुड़वां बच्चों को जन्म दिया। उनमें एक लड़का था और दूसरी लड़की। लड़की काफी सुंदर थी। और लड़के के माथे पर छोटा सा चांद एवं हथेलियों पर तारे थे। परंतु हताश रानी के समक्ष उस धाय ने नवजात पिल्लों की एक जोड़ी रख दी और कहा उसने इन्हें ही जन्म दिया है।

राजा अगले दिन ही वापस आ गया क्योंकि क्रोध में होने के बावजूद उसे याद था कि रानी के जुड़वां बच्चों का जन्म होने वाला है। उनमें एक सुंदर लड़की और दूसरा माथे पर चांद एवं हथेलियों पर तारे वाला लड़का होगा। परंतु जब पिल्लों को उसके समक्ष पेश किया गया और मनगढ़ंत बातें बताई गईं तो उसके होश उड़ गए।

अब तो राजा के दुःख का ठिकाना नहीं रहा। लज्जा से वह मरा जा रहा था। भावावेश में उसने आदेश दिया कि छोटी रानी के राजसी परिधानों एवं आभूषणों को उतारकर उसे बाजार में कौवों को उड़ाते-भगाते रहने के काम पर लगा दिया जाए। इस बीच, रात के अंधेरे में महल की धाई ने नवजात बच्चों को एक टोकरी में रखकर घास-फूस से ढंक दिया। और उस टोकरी को गांव के बाहर एक कुम्हार की झोपड़ी के द्वार पर रख दिया।

सुबह में पौ फटने से पहले ही एक नवजात शिशु के रोने की आवाज से कुम्हार की पत्नी की आंखें खुल गईं। वह बिना कुछ सोचे-समझे झोपड़ी से बाहर निकली। दरवाजे पर टोकरी में दो सुंदर नवजात शिशुओं को इकट्ठे पाकर वह आश्चर्यचकित रह गई। पहले तो वह उन्हें आश्चर्य एवं ममता भरी आंखों से निहारती रही। फिर उन्हें सहेजकर अंदर ले गई और कुम्हार को उठा दिया। और खुशी से बोल पड़ी, "हमारा अपना बच्चा नहीं है। लेकिन देवताओं ने हमारे लिए एक सुंदर लड़की एवं एक लड़का भेज दिया है। इस लड़के के माथे पर तो चांद है और हथेलियों पर तारे हैं।" कुम्हार और उसकी पत्नी तो खुशी से फूले नहीं समा रहे थे। छोटी लड़की दिन-ब-दिन सुंदर हो रही थी। और लड़के के माथे का चांद निखर रहा था। कुछ ही दिनों में जुड़वां भाई-बहन कुम्हार की आंखों के तारे बन चुके थे। पर गांव के लोग उनसे जलने लगे थे। कुम्हार की पत्नी पूरी रात जागकर छोटी बच्ची के लिए रंग-बिरंगी पोशाक एवं लड़के के लिए इंद्रधनुषी रंगों
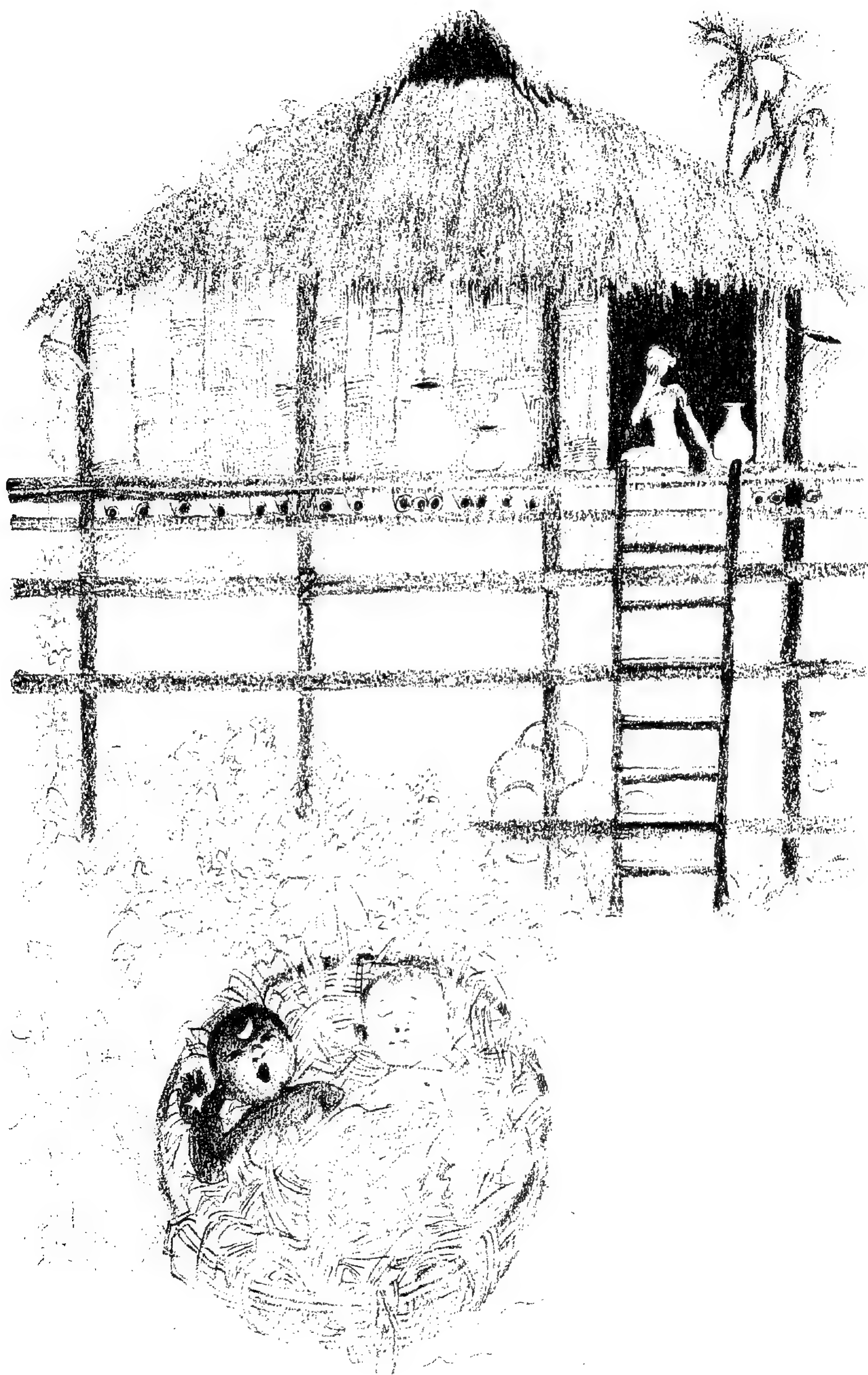
की पगड़ी बनाती। वह लड़के के माथे पर निखरते चांद को गांव वालों की ईर्ष्यालु नजर से बचाना चाहती थी।

समय गुजरता रहा। दोनों बच्चों ने माटी को सुंदर और अद्भुत आकार देने की कला सीख ली। उन्हें चाक पर बारीक काम करने में महारत हासिल हो गई। उनके बनाए बरतन खरीदने लोग दूर दराज से भी आते। अब कुम्हार और उसकी पत्नी कमजोर एवं बूढ़े हो चले थे। फिर एक के बाद एक, दोनों का देहांत हो गया।

भाई-बहन दोनों ने मिलकर कड़ी मेहनत करके एक-एक सिक्का जोड़ा। उनके पास जब एक हजार सिक्का जमा हो गया तो उन्होंने उससे गांव में एक छोटा सा घर खरीद लिया। फिर जंगल में घूमने के शौकीन उस लड़के ने एक घोड़ा और तीर-धनुष भी खरीद लिया। शाम को काम खत्म कर वह अक्सर शिकार पर निकल जाता था।

दीपों का पर्व आया। गांव में खुशी की लहर थी। सुंदर दीयों को खरीदने के लिए लोगों की भीड़ बाजार में उमड़ पड़ी। सौभाग्य की देवी लक्ष्मी के स्वागत में हरेक व्यक्ति अपने घर को उन दीयों से रौशन करने के लिए उतावले थे। लक्ष्मी उनके लिए सुख-शांति का संदेश लाती। त्योहार के दिन लाखों दीये जगमगा उठे। उनके एक-एक घर, गली-नुक्कड़ और समूचा गांव रौशन हो गया। ऐसा प्रतीत होता था मानो यह गांव परियों की जादुई नगरी बन गया हो।

उसी दिन चीथड़ों में लिपटी एक असहाय महिला जवान हो चली उस लड़की की दुकान पर सिर्फ एक दीया मांगने आई। लड़की ने चौंककर उससे पूछा, "सिर्फ एक दीया! आज के दिन तो घरों को रौशन करने के लिए सैकड़ों दीयों की जरूरत पड़ती है। आपको भी लक्ष्मी के स्वागत की ऐसी ही तैयारी करनी चाहिए ताकि देवी लक्ष्मी पधारकर आपको आशीर्वाद दे सके।"

इस पर उस निरीह महिला ने आह भरते हुए कहा, "मेरा तो कोई घर-द्वार नहीं है। मैं तो उस विशाल वृक्ष की जड़ में दीया जलाऊंगी जो मुझे सूर्य की तेज धूप और बरसात के पानी से बचाता है।"

लड़की ने सिर उठाकर ऊपर देखा। उस महिला की सुंदर काली आंखों में दुःख की रेखा स्पष्ट झलक रही थी। लड़की ने उदास होते हुए कहा, "आपकी बातों से मेरा दिल भर आया है। मैं अपने भाई के साथ पास के एक घर में रहती हूं। हमने अपना माता-पिता खो दिया है और एक सूनापन महसूस कर रहे हैं।

क्या आप हमारे साथ रहेंगी?" वह महिला दिल थामे सब कुछ सुनती रही। फिर उसने अपने आंसू पोंछ लिए और लड़की के साथ चल पड़ी।

दोनों भाई-बहनों के लिए तो वह महिला मानो लक्ष्मी का अवतार थीं। उनका घर प्रेम एवं प्रकाश से भर गया। उन दोनों की जिंदगी से खालीपन जाता रहा। शीघ्र ही उनके बीच मां-बच्चों का एक अटूट बंधन बन गया।

पूरी रात जगकर गांव के लोगों ने मां लक्ष्मी की प्रार्थना की और आने वाले वर्षों में सुख-शांति की कामना करते रहे। इस प्रकार रात के जगे लोग सुबह देर तक सोते रहे। परंतु माथे पर चंद्र वाला वह लड़का इंद्रधनुषी रंगों वाली पगड़ी बांधकर घोड़े पर सवार जंगल की ओर चला गया।

जंगल में कलकल करती एक सरिता के किनारे एक पेड़ के नीचे वह लेटा रहा। वह पेड़ इस तरह झुका हुआ था मानो निर्मल धारा को स्पर्श करने के लिए आतुर हो। वह लड़का शांत जंगल की गहराई को दिल में उतारने के लिए आंखें मूंद कर लेटा रहा। फूलों की खुशबू उसकी सांसों में समा रही थी। सुबह की शांत हवा उसके कानों में गा रही थी। उसे लग रहा था जैसे पूरे जंगल की शांति और सुंदरता उसके दिल में उतर रही थी। और वह धीरे-धीरे मीठी नींद की आगोश में डूब गया।

एक उड़ते तीर की सनसनाहट सुनकर अचानक उसका सपना टूट गया। तीर सीधे लड़के की पगड़ी में घुसा और उसे चीरकर गिरा दिया। वह लड़का भौंचक्का देखता रहा। उसके सामने उसके माथे पर नजर गड़ाए एक अपरिचित लंबा आदमी खड़ा था।

लड़के ने क्रोधित होते हुए उससे पूछा, "आप कौन हैं? आपने हवा में क्यों तीर चलाई? उसी तीर से मेरे माथे पर बंधी पगड़ी फट गई।"

"मैं यहां का राजा हूं। पर तुम कौन हो? कहां रहते हो? और तुम्हारी मां कौन है?" राजा ने जवाब देते हुए पूछा।

लड़का उठकर खड़ा हो गया। अपनी फटी पगड़ी को देख दुःखी होते हुए उसने कहा, "मैं एक कुम्हार का बेटा हूं। अपनी जुड़वां बहन एवं मुंहबोली मां के साथ बाजार के समीप एक घर में रहता हूं।"

राजा ने शीघ्र आदेश दिया, "मुझे अपने घर ले चलो।" दोनों किसी सोच में मग्न जंगल एवं गांव को पारकर बाजार के निकट उस घर के पास पहुंचे। दरवाजे पर एक सुंदर लड़की थी। अपने भाई के साथ एक अपरिचित व्यक्ति को

देखकर उसने मां को बाहर आने के लिए कहा।

रानी की नजर जैसे ही राजा से मिली दोनों रोमांचित हो गए। रानी के दिल की गहराई से एक आह निकली और उसके छलकते आंसुओं में घुल गई। राजा, रानी एवं दोनों बच्चे कुछ पल के लिए मंत्रमुग्ध हो चुपचाप खड़े रहे। परंतु राजा को उस घर के निकट जाते देख महल की धाई के होश उड़ गए। वह बेतहाशा भागी उनके पास पहुंची। फिर राजा के पैर पर गिरकर उसने अपना अपराध स्वीकार कर लिया। उसने सुनहली घंटी को बजाने से लेकर नवजात शिशुओं को मारने के लिए मिले सोने की मोहरों की सारी कहानी सुना दिया। चारों बड़ी रानियों की काली करतूतों पर से पर्दा हट गया था। धाई ने यह भी बताया कि किस तरह दयालु होकर उसने राज परिवार के नवजात बच्चों को एक टोकरी में रखकर कुम्हार के दरवाजे पर छोड़ गई थी।

भाव-विह्वल राजा ने जुड़वां बच्चों को गले से लगा लिया। उसने रानी के हाथों को चूमते हुए कहा, "दुनिया सचमुच रहस्यों से भरी है। और उससे भी निराला है जीवन एवं प्रेम का यह खेल। परंतु सत्य अंततः विजयी होता है। और प्रेम अमर है।" फिर वे सभी बाकी के दिन सुख-शांति से बिताने अपने राज्य की ओर वापस चल पड़े।

बस हुई कहानी खतम यहीं
ढलता सूरज हो चला लाल
मुंद गईं फूल की पंखुड़ियां
चुपचाप शाम आ गई द्वार

धीरे-धीरे बढ़ रही शाम
सो गए नींद से पंछी दल
झिल-मिल तारे चमके नभ में
तिल-तिल, क्षण-क्षण, पल-पल, पल-पल

यह छिपा चांद भी आ पहुंचा
भर रात करेगा करामात
अब हो गई गहरी रात-रात,
सो जा बच्चे, बस हुई बात।

न्याय की तलवार

सूर्यनगर अपने रत्नजड़ित महलों से सदैव चमकता रहता। उसके अंदर मंदिरों की गगनचुंबी मीनारें सूरज की रोशनी में नहाए बादलों को छूने के लिए लालायित रहते। नगर की सड़कों का फर्श सोने की ईंटों से बना था। दीवारों पर चमकते हीरों की सजावट थी। असंख्य तारों की तरह चमकते ये हीरे रातों को रौशन कर देते थे।

वहां का राजा एवं प्रजा प्रकाश के देवता सूर्य की पूजा करते थे। उन्हें पता था कि सूर्य की जीवनदायी रोशनी के अभाव में न तो धरती पर जीवन संभव था और न ही स्वर्ग में प्रकाश।

राजा के तीन पुत्र एवं लाखों की संख्या में प्रजा थीं। वे सभी राजा को अपनी जान एवं संपत्ति का रक्षक मानते थे। एक दिन राजा के पास पहुंचकर उन्होंने गुहार लगाई, "हे राजन्, शायद आपको पता नहीं है कि आपके विशाल राज्य में चोर एवं डाकुओं का प्रकोप बढ़ गया है। हमारे पास संपत्ति तो है परंतु हमारी जिंदगी एवं धन पूर्णतया असुरक्षित है। इसलिए हमारी विनती है कि चोरों एवं डाकुओं को पकड़वा कर हमारी सुरक्षा का प्रबंध कीजिए।"

राजा ने उनकी बात गंभीरता से सुन ली। परंतु उनके जाने के तुरंत बाद उसने अपने बेटों को बुलवाकर कहा, "हमारे राज्य में चोरों एवं डाकुओं का प्रवेश कैसे संभव हुआ? जबकि राज्य एवं प्रजा की रक्षा के लिए हमारे तीन बलशाली बेटे हैं? मैं तो बूढ़ा हूं और उनसे नहीं लड़ सकता। परंतु मुझे उम्मीद है कि तुमलोग उन्हें पकड़कर सजा दोगे और इस प्रकार उनके आतंक को खत्म करोगे।" तीनों राजकुमार राज्य एवं प्रजा की रक्षा के लिए अब कटिबद्ध थे। नगर के बाहरी सीमा पर एक चौकी बनाकर वे अपने घोड़ों के साथ उसमें रहने लगे। रात के पहले पहर सबसे बड़ा राजकुमार अपने घोड़े पर सवार पूरे नगर का चक्कर लगाता रहा। परंतु उसे किसी चोर-डाकू से पाला नहीं पड़ा और वह वापस चौकी पर आकर गहरी

नींद में सो गया। मध्य रात्रि में मझले राजकुमार की बारी थी। वह घोड़े पर सवार होकर नगर का चप्पा-चप्पा छानता रहा। उसने गलियों एवं नुक्कड़ों में भी चक्कर लगाया, परंतु चोर या डाकू का दरस भी नहीं मिला। वह भी चौकी पर वापस आकर सो गया। मध्य रात्रि के कुछ घंटों बाद सबसे छोटा राजकुमार पहरा देने निकला। वह राजमहल के पास पहुंचते ही ठिठक गया। महल के दरवाजे से बाहर एक दिव्य सुंदरी निकल रही थी।

राजकुमार ने उससे पूछा, "आप कौन हैं? इतनी रात गए आप राजमहल में क्यों आई थीं?"

"मैं राजलक्ष्मी हूं—एक परी। अब तक मैं इस महल की रक्षा कर रही थी। परंतु आज रात राजा की मृत्यु निश्चित है। इसलिए यहां मेरी आवश्यकता नहीं रही। और मैं महल छोड़कर जा रही हूं।" इस पर राजकुमार ने विनती करते हुए कहा, "हे सुंदर परी, राजलक्ष्मी! कृपया यहीं रहकर महल की रक्षा कीजिए। मैं वादा करता हूं कि आज रात राजा की मृत्यु नहीं होने दूंगा।" इस पर राजलक्ष्मी का उत्तर था, "मैं वापस आने का वचन देती हूं। पर यह तभी संभव है यदि आज की रात राजा की मृत्यु नहीं होती है। फिर भी अभी तो मुझे जाना ही होगा।" यह कहते ही वह रात के अंधेरे में विलीन हो गई।

राजकुमार तुरंत राजा के शयनकक्ष में दाखिल हुआ। वहां एक सोने के कोच पर राजा सोया हुआ था। बगल में ही एक अन्य बिस्तर पर उसकी दूसरी रानी सोई थी। मोमबत्ती की मद्धिम रोशनी पूरे कक्ष में फैली थी। उसके धुंधलके प्रकाश में राजकुमार ने राजा के बिस्तर के गिर्द कुंडली मारे एक विशाल सांप को देखा। चौकन्ना होकर उसने अपनी तलवार निकाली और उसे मार डाला। फिर देखते-देखते सांप के छटपटाते शरीर को सैकड़ों टुकड़ों में काट डाला। अब वह निश्चिंत था कि सांप मर चुका है। सारे टुकड़ों को एक तश्तरी में रखकर उसने तश्तरी को राजा के बिस्तर के पास रख दिया। परंतु सांप मारते वक्त उसके खून का एक बूंद रानी के हाथ पर जा गिरा जिसे राजकुमार ने सावधानीपूर्वक अपने रेशमी गुलुबंद से पोछ दिया।

राजकुमार वहां से निकल ही रहा था कि रानी ने अपने नर्म तकिये पर सिर हिलाया और उसकी आंखें खुल गई। कक्ष से बाहर निकलता राजकुमार उसे स्पष्ट दिख गया।

रानी तो बिल्कुल चिल्ला पड़ी, "हे महाराज, मेरे स्वामी! उठिए। जिस छोटे बेटे की आप इतनी तारीफ करते हैं, वह रात में हमारे कक्ष में आया था। और

जाते-जाते तो उसने मेरा हाथ चूम लिया। मैंने उसे देखा है। वह एक नालायक बेटा है, जो पिता के शयनकक्ष में दबे पांव आता है और अपने सौतेली मां का हाथ चूमता है।"

अगले दिन सुबह में राजा ने अपने बड़े बेटे को बुलवाकर पूछा, "उस व्यक्ति को क्या सजा हो जिसे मैंने अपने मान एवं प्राण का रक्षक माना हो और वह विश्वासघात करे।"

राजकुमार ने सहजता से कहा, "निस्संदेह उसका सर कलम कर दिया जाए। परंतु इससे पहले आप यह तय कर लें कि वह वाकई दोषी है।"

इस पर चौंककर राजा ने पूछा, "क्या मतलब है तुम्हारा? क्या वह मेरे विश्वासघात का दोषी नहीं है?"

महाराज यदि सुनना पसंद करेंगे तो मैं एक कहानी सुनाता हूं जिससे मेरे कहने का आशय स्पष्ट हो जाएगा :

"बहुत पहले की बात है। एक सुनार था जिसकी एक सुंदर पत्नी थी। वह न केवल सुंदर थी बल्कि उसमें चिड़ियों एवं जानवरों की भाषा समझने की भी अद्भुत क्षमता थी। परंतु उसके पिता एवं भाई को भी इसकी भनक नहीं थी। एक रात जब वह अपने घर में पति के बगल में लेटी थी तो एक गीदड़ ने हुंआं-हुंआं करते हुए कहा, 'पास से गुजरती नदी में एक लाश बह रही है। यहां

कोई है जो उसकी अंगुली में से हीरे की अंगूठी निकाल ले एवं लाश मुझे खाने के लिए दे दे।'

सुनार की पत्नी गीदड़ की बात सुनते ही बिस्तर से उठकर नदी किनारे पहुंच गई। उसका पति अब तक जगा ही हुआ था। वह एक खास दूरी बनाए अपनी पत्नी का पीछा करने लगा। वह नहीं चाहता था कि उसकी पत्नी समझे कि उसका पीछा किया जा रहा है।

उस महिला ने मृत शरीर को घसीटकर किनारे कर लिया। परंतु लाश के फूल जाने की वजह से वह उसकी अंगुली से अंगूठी नहीं निकाल पा रही थी। इसलिए उसने दांत से काटकर अंगूठी निकाली और लाश को गीदड़ के सामने फेंक दिया।

अपनी पत्नी को लाश की अंगुली काटते देख सुनार तो भय से सिहर उठा। उसे अब पक्का विश्वास हो गया कि उसकी पत्नी डायन है। वापस आकर सुनार ने अपने पिता को आंखों-देखी घटना सुनाई। इस तरह बाप-बेटे दोनों ने उसे एक डायन घोषित कर दिया। सुनार ने कहा, 'पिताजी मैं एक डायन के साथ नहीं रह सकता हूं, भले ही वह सुंदर क्यों न हो। मैं उसे दूर जंगल में ले जाकर वहीं जानवरों के साथ रहने के लिए छोड़ दूंगा।'

अगले दिन सुनार ने अपनी पत्नी को बुलाकर कहा, 'प्रिये, आज मैं तुम्हें मैके ले जाऊंगा। तुमने बहुत दिनों से अपने माता-पिता को नहीं देखा है। वे भी तुम्हें देखने के लिए व्यग्र होंगे।'

उसके मैके का रास्ता घने जंगल के बीच से गुजरता था। वे जैसे ही जंगल से गुजर रहे थे सुनार की पत्नी ने एक सांप की बात सुनी, 'ऐ बटोही, मैं आपका बहुत ही आभारी रहूंगा यदि पास के बिल में टर्राते मेढ़कराज को पकड़कर मुझे निगलने के लिए दे दें। और बदले में उसी बिल को खोदकर अंदर से छिपा खजाना निकाल लें।'

सांप की फुफकार का अर्थ समझते ही सुनार की पत्नी ने मेंढक पकड़कर सांप के सामने फेंक दिया और एक छड़ी से उस बिल की गहरी खुदाई करने लगी। बिल के अंदर स्वर्ण मोहरों एवं अनमोल आभूषणों को देखकर तो वह आश्चर्य चकित रह गई। उसने अपने पति को वहां बुलाया और खजाने की थैली अपने ससुर के पास ले जाने के लिए दे दिया। फिर वह अपने पिता के घर की ओर चल पड़ी।

खजाने की थैली देखकर तो सुनार को अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हो
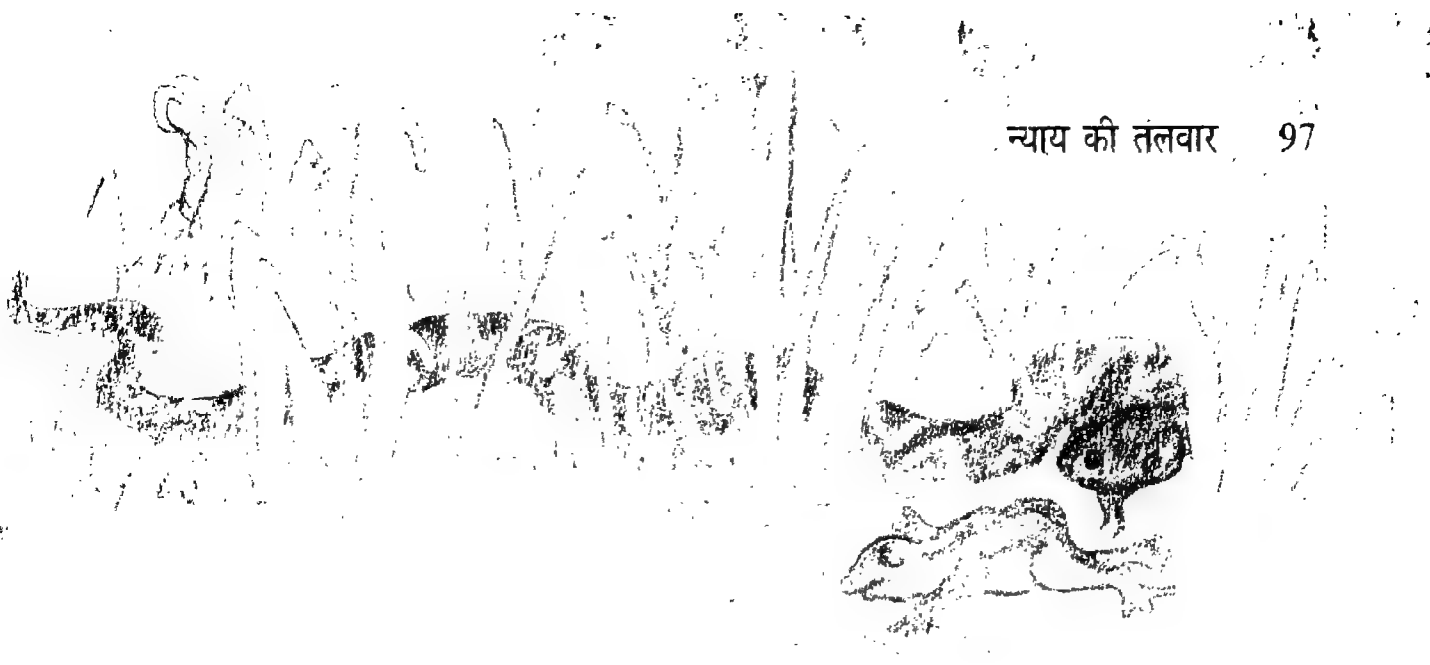
रहा था। एक सुनार होने की वजह से वह उसकी कीमत समझ रहा था। उसने पत्नी से पूछा, 'तुम्हें कैसे पता चला कि खजाना वहां छिपा था?' पत्नी ने राज खोलते हुए कहा, 'कोई नहीं जानता, मेरे माता-पिता भी नहीं, कि मैं पंछियों एवं जानवरों की भाषा समझती हूं। अभी सांप ने फुफकार कर मुझसे कहा था कि मैं मेंढकराज को पकड़ कर उसे निगलने के लिए दे दूं और उस बिल के नीचे छिपे खजाने को निकाल लूं।'

यह सुनते ही सुनार की आंखें खुल गईं। उसे एहसास हुआ कि उसकी पत्नी तो दिव्य गुणों वाली है। इसलिए उसने अपनी पत्नी को योजनानुसार जंगल में छोड़ने की बजाय वापस अपने घर ले जाने का मन बना लिया।

घर वापस पहुंचते ही उसने अपनी पत्नी से कहा, 'प्रिये, तुम पिछवाड़े से प्रवेश करो। मैं अगले दरवाजे से अपने पिता की दुकान जाता हूं और तुम्हारे द्वारा प्राप्त खजाने को उन्हें दिखाता हूं।'

परंतु दुर्भाग्यवश अंदर घुसते ही सुनार

की पत्नी के सामने दरवाजे पर उसके ससुर खड़े थे। उसे अकेली वापस आया देख उनका माथा ठनका। अब चूंकि उन्हें पहले से पक्का विश्वास था कि वह एक डायन है सो उन्होंने सोचा कि उनके पुत्र को मारकर वह खा गई। आवेग में आकर उन्होंने हथौड़ा निकाला और दे मारा उसके सिर पर। निर्दोष महिला धड़ाम से धरती पर गिरी और शिथिल पड़ गई।

उसी क्षण खजाने का थैला लिए उसका पति अंदर आया। पर अफसोस! बहुत देर हो चुकी थी। बाप-बेटा दोनों फूट-फूटकर रोते रहे। उन्हें जीवन भर इसका पश्चाताप रहा कि जिस महिला ने उन्हें अनमोल खजाना दिया था, उन्होंने उसी निर्दोष को मार डाला—'इसलिए हे महाराज! किसी को सजा देने या मृत्युदंड देने से पूर्व यह निश्चित कर लीजिए कि वह वस्तुतः अपराधी है।'

अब राजा ने अपने दूसरे बेटे को बुलवाकर वही प्रश्न उससे भी पूछा। मझले राजकुमार का उत्तर था, "महाराज! एक व्यक्ति, जिसे आपने अपने सम्मान एवं जीवन का रक्षक बनाया, यदि विश्वासघात करे तो निस्संदेह उसका सर धड़ से अलग कर दिया जाए। लेकिन ऐसा करने से पहले आप निश्चित कर लें कि वह सही में अपराधी है।"

"तुम क्या कहना चाहते हो," राजा ने पूछा, "क्या वह मेरे विश्वासघात का अपराधी नहीं है?" इस पर राजकुमार ने कहा, "महाराज! यदि आप आज्ञा दें तो मैं एक कहानी सुनाता हूं। उससे मेरे कहने का अर्थ स्पष्ट हो जाएगा :

बहुतों दिन पहले एक राजा था। उसे जंगल में शिकार करने का बहुत शौक था। एक दिन वह अकेले दूर जंगल में निकल गया। वहां उसे प्यास सताने लगी। उसने पानी की तलाश में इधर-उधर, सब तरफ देखा। परंतु आसपास झील-तालाब तो क्या एक छोटी नाली भी नहीं थी। वह व्याकुल होकर एक पेड़ के नीचे बैठ गया। वहां उसने ऊपर से टप, टप की आवाज सुनी। राजा ने सोचा कि पेड़ की शाखाओं से बरसात का पानी टप-टप कर गिर रहा है। उसने एक प्याले में बूंद-बूंद कर उसे इकट्ठा कर लिया। अब वह उसे पीने वाला ही था कि उसका घोड़ा अपने पिछले टांगों पर खड़ा होकर प्याले को गिरा दिया। घोड़ा को खतरे का अहसास पहले से था। परंतु प्यास से परेशान राजा के गुस्से का ठिकाना नहीं रहा। उसने अपनी तलवार निकाली और एक झटके में अपने वफादार घोड़े को मार गिराया। परंतु जैसे ही राजा वहां से चला उसे पेड़ के ऊपर सांप की फुफकार सुनाई पड़ी। ऊपर देखते ही वह तो सन्न रह गया। वहां एक काला

भुजंग था जिसके विषदंत से जहर टपक रहा था। राजा के पास तो बस पछतावा बचा था। उसने तो अपने वफादार घोड़े को मार डाला था। यद्यपि उसी घोड़े ने राजा की जान बचाई थी। राजा वहां खड़ा हृदय पर हाथ रखे रोता रहा। उसे पता था कि इतना वफादार घोड़ा उसे फिर नहीं मिलने वाला है।'

इसलिए यह कहा जाता है कि किसी को सजा देने या मारने से पहले उसके अपराध को भली-भांति जांच लेना चाहिए।''

इसके बाद राजा ने अपने सबसे छोटे बेटे को बुलवाया। और उससे भी वही प्रश्न किया जो अन्य राजकुमारों से उसने पूछा था। तीसरे राजकुमार का भी जवाब था, ''हे महाराज, आपका विश्वास तोड़ने वाले की तो गरदन काट ली जानी चाहिए। परंतु पहले आप सुनिश्चित कर लें कि वह सही में दोषी है या नहीं।''

इस पर राजा ने पूछा, ''क्या कहना चाहते हो तुम? क्या वह मेरे विश्वासघात का दोषी नहीं है?''

अब राजकुमार ने विनीत के स्वर में कहा, ''महाराज, कृपया इस कहानी को सुनिए। इसमें मेरे कहने का तात्पर्य स्पष्ट होता है :

एक राजा था। उसके पास शुक नाम का एक अद्भुत, बोलने वाला तोता था। एक दिन वह उड़कर जंगल पहुंचा और वहां संयोगवश अपने माता-पिता से मिला। वे बहुत दिनों के बाद इकट्ठे हुए थे। इसलिए शुक की मां ने उसे दूर पेड़ की फुनगी पर बने उनके घोंसले में आकर कुछ दिन साथ रहने के लिए कहा। इस पर शुक बहुत खुश हुआ लेकिन उसने कहा कि राजा की अनुमति के बिना वह जा सकता, फिर भी अगली सुबह वह उनके साथ जाने के लिए तैयार रहेगा।

वापस आकर शुक ने राजा से कहा कि वह कुछ दिन अपने माता-पिता के साथ रहना चाहता है। राजा ने आधे मन से उसे जाने की आज्ञा दे दी। परंतु शुक सिर्फ दस दिन वहां रह सकता था, क्योंकि राजा उसे बेहद चाहता था। और शुक की लंबी जुदाई की बात वह सोच भी नहीं सकता था।

अगले दिन सुबह सवेरे शुक अपने माता-पिता के साथ पैतृक घोंसले की ओर उड़ चला। वहां तीनों पंछी एक साथ मजे में थे। वे दोस्तों एवं रिश्तेदारों के बीच भी जाते। लेकिन एक दिन शुक ने कहा, 'मेरे प्रिय मां और पिताजी, अपने घोंसले में आप लोगों के साथ रहने में बहुत मजा आया। लेकिन अब मुझे आपसे विदा लेना होगा क्योंकि राजा ने मुझे सिर्फ दस दिन की अनुमति दी थी। और आज दसवां दिन है।' हालांकि बच्चा से बिछुड़ने का गम शुक के माता-पिता को सताने लगा था, उन्होंने आपस में चोंच सटाकर राजा को एक उपहार देने का निर्णय लिया।

वे मीलों उड़कर फूल से भरे उद्यानों एवं हरे-भरे खेतों के पार पहुंचे। वहां से वे अमरत्व के पेड़ का एक फल ले आए। शुक को वह फल देते हुए उसकी मां ने कहा, 'शुक, इस फल को सावधानी पूर्वक ले जाकर राजा को देना। यह अमरत्व के पेड़ का फल है। राजा यदि इसे खा लेगा तो वह कभी नहीं मरेगा।'

अगले दिन सवेरे जब पंछियों ने प्रातः गीत गाना प्रारंभ किया तो शुक वापस महल की ओर उड़ चला। लेकिन फल के भारी होने की वजह से शुक रास्ते में ही थक गया। और एक पेड़ की शाखा में रैन बसेरा कर लिया। उस फल को कहां रखा जाए, वह नहीं समझ पा रहा था। यदि वह फल को चोंच में दबाकर रखता तो उसे डर था कि नींद आते ही फल गिर जाता। शुक फल रखने की जगह तलाश रहा था कि उसकी नजर पेड़ के तने में बनी एक बिल पर पड़ी। उसने वहीं उस फल को छिपा दिया। लेकिन शुक को इस बात की भनक भी नहीं थी कि वह एक जहरीले सांप का बिल था। सांप फल को देखते ही उस पर लपका और अपने विषदंत गाड़कर पूरे फल को जहरीला बना दिया।
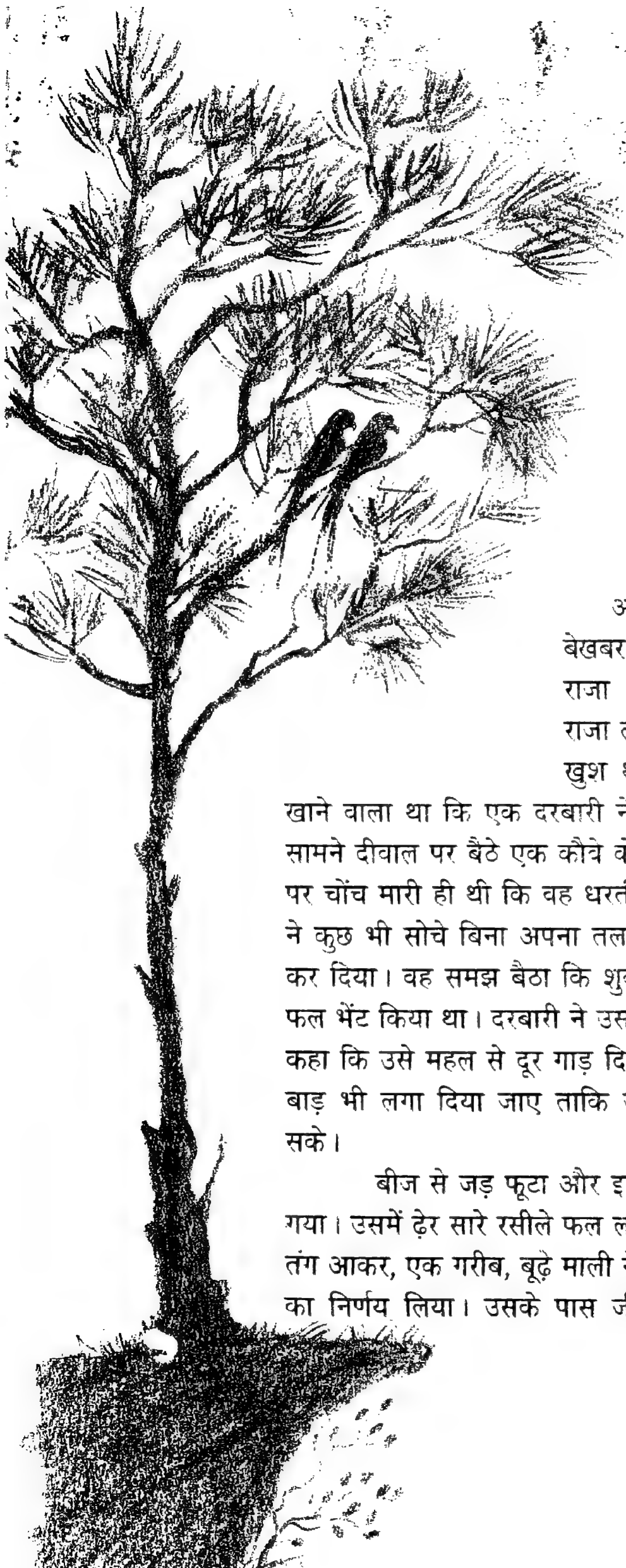
अगले दिन सुबह इन बातों से बेखबर शुक वापस राजमहल पहुंचा। और राजा को वह फल भेंट कर दिया। राजा तो शुक के वापस आने पर बहुत खुश था। वह जैसे ही उस फल को खाने वाला था कि एक दरबारी ने राजा के हाथ से उसे छीनकर सामने दीवाल पर बैठे एक कौवे के पास फेंक दिया। कौवे ने फल पर चोंच मारी ही थी कि वह धरती पर गिरा और मर गया। राजा ने कुछ भी सोचे बिना अपना तलवार निकाला और शुक का वध कर दिया। वह समझ बैठा कि शुक ने उसे मारने के लिए ही यह फल भेंट किया था। दरबारी ने उस फल के बीज माली को देते हुए कहा कि उसे महल से दूर गाड़ दिया जाए। और उसके चारों ओर बाड़ भी लगा दिया जाए ताकि जहरीले फल को कोई नहीं खा सके।

बीज से जड़ फूटा और इस प्रकार एक सुंदर पेड़ खड़ा हो गया। उसमें ढेर सारे रसीले फल लगे। एक दिन बदहाल जिंदगी से तंग आकर, एक गरीब, बूढ़े माली ने उस पेड़ के एक फल को खाने का निर्णय लिया। उसके पास जीने का कोई साधन नहीं था।

इसलिए वह मर जाना चाहता था। उस रात वह एक फल खाकर इस विश्वास से सो गया कि अगला दिन देखने के लिए वह कभी नहीं उठेगा। लेकिन सुबह जब उसकी आंखें खुलीं तो उसके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। वह एक तंदुरुस्त जवान आदमी की तरह दिख रहा था और महसूस कर रहा था। उसकी झुर्रियां गायब थीं। उसके भूरे बाल काले हो गए थे। काले कौवे के पंखों से अधिक काले।

उसी दिन शाम को राजा बागीचे में सैर के लिए गया। वहां उसने एक सुंदर नौजवान को पानी पटाते देखा। राजा ने अचंभित होकर उससे पूछा कि वह कौन है। इस पर नौजवान ने कहा, 'महाराज, मैं आपका वही पुराना माली हूं जिसने वर्षों से आपकी सेवा की है। अपनी जिंदगी से तंग आकर मैंने एक निषिद्ध फल खा लिया ताकि इससे छुटकारा मिले। परंतु मुझे अचंभा तो तब हुआ जब जगने पर मैंने खुद को एक तंदुरुस्त नौजवान की तरह पाया।'

इतना सुनते ही राजा दुःख से मूर्च्छित हो गया। उसने तो प्यारे शुक को मार दिया था। वही शुक जो राजा का मनवांछित उपहार—अमरत्व का उपहार, लेकर आया था।''

यह कहानी सुनाने के बाद छोटे राजकुमार ने बात इस प्रकार आगे बढ़ाई, ''महाराज, मैंने जो किया है वह अब कबूल करूंगा। रात में पहरा देते समय मैंने महल के दरवाजे से एक दिव्य सुंदरी को बाहर जाते देखा। मैंने उसका परिचय पूछा। उसने कहा कि वह राजलक्ष्मी है—इस महल की रक्षा करने वाली परी। और वह महल छोड़कर जा रही थी क्योंकि उसी रात राजा का देहांत होना लिखा था। मैंने उसे रुक जाने की विनती की और वादा किया कि राजा को मरने से बचा लूंगा। परंतु वह अंतर्धान हो गई। मैं तुरंत आपके कक्ष में पहुंचा। वहां एक विशाल सांप आपके बिस्तर के पास कुंडली मारकर बैठा था। मैंने उसे मार दिया और उसके शरीर के सैकड़ों टुकड़े कर डाला। सांप को मार डालने के बाद मैं निश्चिंत हो गया था। फिर उसके टुकड़ों को सोने की थाल में रखकर आपके बिस्तर के स रख दिया। परंतु सांप पर वार करते समय उसका एक बूंद खून रानी के हाथ पड़ा, जिसे मैंने अपने रेशमी गुलुबंद से पोछ दिया। उसके बाद जैसे ही मैं चलने हुआ कि रानी की आंखें खुल गई और उन्होंने मुझे देख लिया। शायद यही नह है कि महाराज समझते हैं कि मैंने विश्वासघात किया है। और यदि ऐसा है मुझे महाराज अपने तलवार से मार डालें। लेकिन महाराज की तलवार न्याय ो तलवार हो क्योंकि अपराध कभी भी सुकर्म नहीं हो सकता और असत्य की परिणति सत्य में कभी नहीं हो सकती है।''

राजा कृतज्ञ होकर अपने बेटे को गले लगाया। और अपना राज्य सौंपकर उसे मुकुट पहनाते हुए कहा, "मैं तुम्हें अपना राज्य और राजमुकुट सौंपता हूं। परंतु ध्यान रहे कि सूर्यनगर का राजा बनकर तुम्हें मेरे राज्य एवं प्रजा को सुरक्षित रखना होगा। इससे तुम्हारा मान-सम्मान बना रहेगा। तुम जब भी अपनी तलवार का इस्तेमाल करना वह न्याय की तलवार ही हो।"

बस हुई कहानी खतम यहीं
ढलता सूरज हो चला लाल
मुंद गईं फूल की पंखुड़ियां
चुपचाप शाम आ गई द्वार

धीरे-धीरे बढ़ रही शाम
सो गए नींद से पंछी दल
झिल-मिल तारे चमके नभ में
तिल-तिल, क्षण-क्षण, पल-पल, पल-पल

यह छिपा चांद भी आ पहुंचा
भर रात करेगा करामात
अब हो गई गहरी रात-रात,
सो जा बच्चे, बस हुई बात।
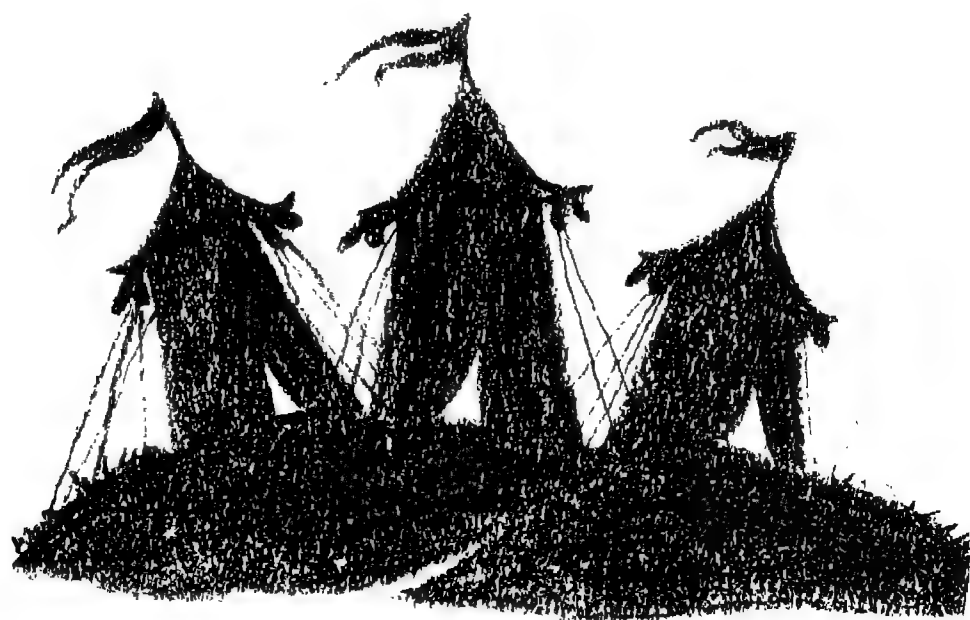
attitudes towards these aspects and therefore the present study has been taken up. Education is an act of faith in humanity and in the future. It is essential for the promotion of human dignity, for the development of prosperous economies and viable societies. Education can strengthen, mobilize and prepare the child to meet the challenges and surprises of the future. This signifies the importance of "*Developing a model for primary education for the twenty first century*".

Statement of the Title of the Project:

Future oriented education was the major domain that was considered by the researcher. The specific aspect of the present study is **the development of a model having curricular activities for instilling the essential capabilities in young children to survive futuristic situations.** Hence, the project has been worded as "*Developing a model for primary education for the twenty-first century*".

Operational definitions:

Operationalzing variables means stating them in an observable and measurable form, making them available for manipulation, control and examination. For the present study operational definition of the terms used in the title of the study have been provided below.

Primary education:

For the purpose of the present study the term 'primary education' has been taken as the classes from I-III or the grades that commensurate the age group of 5½ to 8 years with '+' or '-' three months for both boys and girls.

Model:

The operational definition of 'Model' is based on the lines of the definition of model given by N.A. Flanders (1987) as described on page 30. The present model answers questions regarding the scope of the model i.e. it has certain objectives in the form of capabilities that are to be nurtured in the child, secondly it develops certain activities, games and content material that are specific to the capabilities; thirdly it also provides for the time periods for conducting the activities in the form of content analysis and also provides slots for conducting the activities and finally it has one limitation that it can be used only for the primary classes. Thus the operational definition for 'Model' is treated as development of a teaching-learning model where objectives, approach, time period and limitation are taken care.

Twenty-first century:

'Twenty-first century' means the first hundred years of the third millennium. For research purposes the meaning of 'Twenty-first century' has been taken in a holistic view. Here 'Twenty-first century' does not mean only the first hundred years of the third millennium but it also considers the changes that are likely to occur over the next hundred years in various fields like information technology, work etc. It further considers the aspects of enabling the child to fit into and survive the challenges in these fields and sustain the essentials that need to be passed on to the subsequent generations.

Objectives / research questions:

In a research project, the function of the research questions is to explain specifically what the study will attempt to learn or understand. In the research design, the research questions serve two other vital functions: to help focus on the study (the questions relationship to the purposes and conceptual context) and to give guidance on how to conduct it (the relationships to methods and validity) (Miles and Huberman, 1994). Hence the present study was taken up to realize the following objectives:

(1) to determine the 'areas' where changes would take place prominently.("In how many areas changes are likely to occur prominently?")

(2) to determine the characteristics in those 'areas' ("What kind of characteristics the identifiable areas will possess?")

(3) to determine the capabilities that will be required by the child to survive these characteristics.("What kind of capabilities are required to be possessed by the individuals for each of the characteristic?")

(4) to develop activities, games and content to bring about these capabilities in the child. ("How can these capabilities be inculcated, nurtured and developed through curricula by organizing activities, games and content?")

(5) to incorporate these activities games and content material into the existing curriculum.("In order to obtain a compact curriculum not much deviant from the existing, how to fuse the above, (4), into the existing curriculum?")

Review of related literature:

In order to avoid unnecessary duplication and provide an insight that is essential to frame the hypotheses for the objectives outlined for the study the review of the related literature has been taken up. The topic for the study is a fervent one and has paramount importance for the present day. But the challenges that are to be faced in the twenty-first century have been addressed only by quite a few. UNESCO being one of the prime organizations has produced some major works. However the review made consists of varied literature in the form of documents, articles and books as detailed below.

(A) The Inter Parliamentary conference on Education, Science, Culture &Communication on the eve of the 21st century -UNESCO, 1996.

(B) "Learning for the 21st century"- Report submitted by the National Advisory Group for Continuing Education and Lifelong Learning in November, 1997 under the chairmanship of Prof. R.H. Fryer.

(C) "An innovative Social Studies Curriculum in Canada: An Experiment" - paper submitted by Dr. Harry Dhand and Dr. John Lyons at the Second Regional Conference on "Curriculum Innovations For 2000 A.D".

(D) "Education in 2001A.D." - paper presented by Dr.(Mrs.) J.K.Pillai former Vice Chancellor of Mother Teresa Women University Kodai Canal at the Second Regional Conference on "Curriculum Innovations For 2000 A.D".

(E) "Towards An International Education for the 21st century" -paper submitted by Dr. Prem Kirpal (Former Education Secretary, Ministry of Education, (GOI) at the Second Regional Conference on "Curriculum Innovations For 2000 A.D".

(F) "Preparing for the twenty-first century" - by Paul Kennedy, 1993.

(G) "Education today for Tomorrow's world"- paper submitted by Helmut Klein at the Congress on "Towards a renaissance of humanity- Rethinking and Reorienting Curriculum and Instruction", 1993.

(H) "Education and the future – A Vision"- "Encyclopedia of Educational Development and Planning", Vol. I, 1996.

(I) "How to plan education for the future" - "Encyclopedia of Educational Development and Planning", Vol. IV, 1996.

(J) "Education for development in the twenty-first century"- P.V. Indiresan ,1996 .

(K) "Education 2000: A consultative document on hypotheses for education in A.D.2000" (1983), under the co- chairmanship of Bryan Thwaites and Christopher Wysock Wright.

(L) "Education for the Twenty-first Century", Hedley Beare and Richard Slaughter, 1993.

(M) "Learning the Treasure Within: Report to UNESCO of the International Commission on Education for the Twenty-first century –1996", UNESCO.

(N) "One World Concept Through Education During Twenty-First Century" –C.P.Khanna, 1992.

All the studies have tried to provide certain directions for the education in the twenty-first century. Those studies, which have given curricular solutions, were presented very briefly and without explaining about their integration with the existing curriculum. More so is the case with primary level in the twenty-first century.

Hypotheses:

For ease, comprehension and non-distractibility from the main theme, guiding hypotheses are necessary for a research study.

Guiding Hypotheses:

The guiding hypotheses framed for the present study are:

1. A great impact will be felt on the common life of the human beings in future in the areas of information technology, changes in work scenarios, demography, environmental influences and due to cultural inflections.
   (2) Depending upon the growth in the existing speed in all five areas mentioned above, it is possible to estimate the likely changes that will occur in these areas in future.
   (3) Different capabilities are required for various functions to be performed in each of the area. "What kind of capability is required for which function" could be established through a common opinion and the same could be considered.
   (4) Imparting education mainly refers to the context of content, which in turn is dependent on age factor of the life span in which it is utilized. For an envisaged capability, developing the relevant content material, activities and games is feasible at the primary stage from the futuristic point of view.
   (5) The activities, games and content material developed, for nurturance of the capability envisaged, can find a place conveniently into the primary curriculum i.e., for classes I, II, III.

Limitation of the study:

The limitation of the present study is that it can be used only for the primary classes or on the children in the age group of 5 ½ to 8 years.

In order to verify whether these hypotheses will hold good, which in turn will fulfill the objectives framed, a research method was implemented and conducted. The details are provided in the following paragraphs.

Research design:

In order to achieve the objectives, the investigator proceeded in the following manner, which is given as steps of the research design.

1. Determining the 'areas', where major changes will take place through survey of resource material and opinions of experts from various fields.
2. Determining the characteristics of these areas through in-depth reading of literature as well the opinions of specialists and senior educationists.

3 Determining the capabilities that are essential for a child to survive these characteristics through brainstorming sessions and interviews with curriculum experts.
4 Development of curricular activities to inculcate the essential capabilities in the child.
5. Integration of the activities into the existing primary curriculum.

Area considered for the study:
Two areas are considered for the present study.

Physical Area: The physical area refers to the geographical area, where the checklist and questionnaire were administered, to know the happenings in the future. With regard to this the opinion of experts from all over the world was obtained.
Yet, the consideration was only for Andhra Pradesh state of India because of the restricted curricular interventions that are being planned.
Socio-Psychological Area: This area mainly refers to the individual in society. In the present study, children of Andhra Pradesh aged in between 5½ and 8 years were considered. Hence, the curriculum pertaining to the primary sections i.e., classes I, II, III of the state of Andhra Pradesh was taken into consideration for the development of the model. Thus, the level of functioning about whom the development of the model was considered were the children belonging to the culture and behavioral style of Andhra Pradesh customs and norms only. However due to the general nature of the model it could be used for the children of the same age group, all over India as well as in almost all other developing countries.

Sample selected for the study:
A. The sample selected for administration of the checklist that was developed to determine the 'areas', where major changes would take place in future, were 200 experts drawn from all the available fields. Care was taken to include the sample from non-governmental organizations, futurologists and academicians, having a stand of not less than 10 years in their fields of functioning. The sample was selected randomly and the names of experts were drawn from Journals, Theses and Encyclopedia and thus covered to places from all over the world.
B. The sample selected for administering the questionnaire that was developed for determining the essential characteristics of each 'area', constituted specialists from the areas determined and senior educationists having more than twenty years of experience. In all, a group of 150 specialists and educationists were listed from various Journals, Theses, Encyclopedia, other resource books from the ICSSR library of Osmania University, the Blackwell Handbook of Education and the internet.
C. To determine the essential capabilities required to be developed in the children for personifying these characteristics, information was obtained through interview and discussion method. For this purpose five curriculum experts, one each from the areas determined, were contacted.

Tools developed for the study:
Three tools were developed in order to check the first three objectives of the present study.
1. A checklist was developed to determine the 'areas' that would undergo changes and that need to be essentially considered for the study.
2. After the first objective was achieved the second objective, i e., to determine the characteristics in those 'areas' was considered. A questionnaire was developed, to ascertain the characteristics of those 'areas'.
3. Interview and discussion method was adopted to determine the capabilities that would be required for the child to develop and possess ultimately.

The details of the development of these tools are provided in the successive paragraphs.

Development of the checklist:

For realizing the first objective i.e. *to determine the 'areas' where changes would take place prominently,* the researcher read extensively from various resource material related to futurology. This was done to obtain a clear idea regarding the major areas that would face stupendous changes and will pose a challenge for the citizens of the future and which are necessarily to be taken for the study. This material has paved way for the development of the checklist.

After the areas were identified, a checklist was prepared, which included all the above areas. Twelve items were listed in such form and the last item was a open ended item asking for the respondents' opinion regarding any other area they feel that should be taken up for the study other than those mentioned in the checklist. In order to avoid any direction from the researcher's side, no explanation was provided for the areas and only the heading/title of the area was mentioned.

Development of the questionnaire:

For realizing the second objective i.e., *to determine the characteristics in the 'areas',* literature on futurology in that specific area (that were determined from the checklist) was read in order to have comprehension about the characteristics. Review of resource material was conducted in each 'area'.

After scrutinizing the available resource literature, the characteristics in each area were listed. In all, 33 characteristics were identified as the most probable ones. A Questionnaire was prepared to ascertain and validate these characteristics. For each characteristic, three questions were developed to validate and cross check with the opinion of experts. In the case of one characteristic i.e., in the area of Information technology, four questions were developed (i.e., two questions were developed for information storage and two questions for information retrieval). Thus, in all, there were 100 questions in the questionnaire.

(32 x 3 + 4 = 96+4 = 100)

Each question prepared as mentioned above was provided with three alternatives. One alternative was of a positive nature "reinforcing the characteristic", another alternative was of a neutral nature, "which neither agrees nor disagrees with the characteristic" and the remaining alternative was of a negative nature, "which disagrees with the characteristic". These aspects are explained below with an example.

Example: To validate the characteristic "Women will record advances in tomorrow's work organization" three questions were developed. One of the questions is

- The rate of entry of women in organizations of the future will be
    a. more than the existing levels.
    b. lesser than the existing levels.
    c. same as the present levels.

In the above question, the alternative (a). was of positive nature, reinforcing the characteristic, (b) was of negative nature, which disagrees with the characteristic and (c) was of neutral nature, which neither agrees nor disagrees with the characteristic

Similarly all other questions were developed.

Development of capabilities:

After the characteristics were determined, using the tool developed (i.e. the questionnaire) the third objective, i.e., to determine the capabilities that will be required by the child to survive

the futuristic characteristics, was taken up. A series of brainstorming sessions involving the investigator, staff of the IASE and other researchers were conducted to identify the capabilities that would be required by the child in the future to adjust and accommodate with the determined characteristics. Three capabilities were finally identified for each characteristic. It worked out as, for example; for the characteristic "The varied qualities of information technology will significantly alter the way we learn and teach." the following three capabilities were identified.

a. locate the resources of self learning material
b. pick up the changing methodologies for better learning
c. assess for the best methodology and improve the same in accordance with the changing demands

Administration of the tools developed:-

(I) The first tool that was developed was a checklist to determine the various 'areas' that would undergo changes. This tool was administered on a sample of 200 experts using the mailing procedure and self addressed envelopes along with stamps were provided to facilitate easy and quick response. Later, reminder letters were sent to those who did not reply, even after considerable time. In all, the researcher received back 165 answered checklists finally. The researcher analyzed the data obtained from the checklists and interpreted the findings. The details of these are given in the following paragraphs.

(II) The second tool developed was a questionnaire to determine the characteristics of those 'areas' in future. Before administering the questionnaire the questions in the questionnaire were shuffled so as to eliminate any bias or continuum effect in the answering style by the respondents. The originally formed questionnaire is referred to as the *original questionnaire* and the shuffled questionnaire is referred to as the *jumbled questionnaire* for convenience of discussion. The jumbled questionnaire was administered on a sample of 150 specialists and educationists. The questionnaire was administered on the sample using the mailing technique and to obtain an early response, self addressed stamped envelopes were also provided. Later, reminder letters were sent to those who did not answer back even after a considerable period of time. In all, the investigator received 36 answered questionnaires. The researcher analyzed the data obtained from the questionnaire and drawn inferences.

(III) After the capabilities were identified (through brainstorming sessions), interview and discussions with five curriculum experts, one each from the 'areas' determined, were conducted and then the capabilities that are essential were finalized. The interviews were in a broadly structured manner i.e., the basis or the objective was the same, but there was flexibility while asking the questions. Personal interaction of the researcher with the five experts was cautiously planned for conducting the interview and discussion.

Analysis of data:

Analysis of the checklist:

The data obtained from the checklist that was developed to determine the 'areas', that would undergo change prominently was analyzed to ascertain the 'areas', which need to be considered for further study. As mentioned earlier it was done as follows:

Sample selected for administering the checklist were a group of 200 experts, randomly selected. Out of the 200 experts 165 responded back. The checklist was scored in the form of agreements and disagreements, where an agreement corresponds to a tick mark (✓) against the area given in the checklist and a disagreement for a blank or a cross (X). The data obtained from the 165 checklists was analyzed and classified as the number of agreements and number of disagreements for each area. Then the percentage of agreements and the

percentage of disagreements for each area were calculated. An agreement percentage of 75 was set up as the cutoff point for inclusion of an area in the study, since 75% agreement accounts for an agreement by three-fourth's of the sample.
Analysis showed that the areas information technology, cultural inflections, work conditions, demographic factors and environmental factors had an agreement percentage of 93.93, 80.6, 84.84, 96.96 and 76.96 respectively. The agreement percentage of these areas was above 75% implying that more than ¾ of the sample had vouched for their acceptance into the study and as such they were included in the study.
<u>The above discussions proved the hypothesis 1, i.e., A great impact will be felt on the common life of the human beings in future in the areas of information technology, changes in work scenarios, demography, environmental influences and due to cultural inflections.</u>

<u>*Analysis of the data from the Questionnaire:*</u>
The data obtained from the questionnaire, that was developed to determine the characteristics of the 'areas', was analyzed. In all, the researcher identified 33 characteristics and validated the same. During the process of validation two were dropped and finally the following 31 characteristics were accepted.

1. "Global warming will occur due to rise in the levels of greenhouse gases."
2. **Rejected by experts** (Due to global warming there will be a rise in the sea levels)
3. "Climatic conditions will alter bringing a change in the ecosystem."
4. "Depletion of ozone layer will cause serious risks to humanity and ocean life."
5. "Due to modern atmospheric pollution rise in acid levels of rains will result in serious ecological damage"
6. "Nuclear winter" will occur due to continuous multiple nuclear explosions affecting every aspect of human and natural life."
7. "Pollution of water resources will exist."
8. "Land degradation will occur at unprecedented scales."
9. "Future culture will be having more of 'techno-culture', in which religious, national and racial differences would scarcely figure"
10. "Future culture would lead to an awareness of finitude and bounded-ness of the planet and humanity"
11. "There will be fused intercultural communications"
12. "Future culture is dominated by competition between nations and states"
13. **Rejected by experts** ("Possess extensive global connectivity")
14. "In the future culture, there is no 'outside' from where one can be an 'innocent observer' and every person is responsible for the event"
15. "Future culture compels the individual to think in global terms"
16. "The information age will be knowledge centered"
17. "In future the computer will as ubiquitous as the pen"
18. "Information technology will provide for easy (a). information storage and (b) information retrieval."
19. "The varied qualities of information technology will significantly alter the way we learn and teach "
20. "Information technology will affect the work culture."
21. "Information technology will lead towards the displacement of nationhood and nation cultures– a common culture will be developed"
22. "The home will become the center of economic and cultural life."
23. "There will be an unprecedented rise in the population."
24. "Depletion of Natural Resources will result as a rise of human numbers"
25. "Important health problems will be cause due to high populations"
26. "Unemployment will result due to an increase in the working populations"

27. "Increase in population will lead to problems of transportation"
28 "Automation will bring a change in the composition of the workforce"
29. "Numerical flexibility will be an established feature of tomorrow's organization
30. "New forms of work organizations like home/tele/networking will emerge"
31. "Employee versatility such as multi-skills / continuous learning and development / team working will become increasingly important"
32. "There will be fragmentation in the working lives of people"
33. "Women will record advances in tomorrow's work organization"

The analysis of the questionnaire and the above discussion prove the hypothesis number 2, i.e., Depending upon the growth in the existing speed in all five areas mentioned above, it is possible to estimate the likely changes that will occur in these areas in future.

Analysis of the interview and discussion method:

After the characteristics were determined, three capabilities for each characteristic were identified. Thus, in all, the researcher for the 31 characteristics that were determined identified 93 capabilities. These capabilities were then subjected to scrutiny, by five experts, by adopting the method of interview and discussions. During these discussions '91'capabilities were accepted by the experts and two capabilities, which are stated as 'be able to locate, use and improve the required constructs available on the globe' and 'meet the psychological demands of survival in order to equate between spouses.' were rejected. They rejected these on the basis that the child at this early stage cannot think in terms of global constructs and will not be able to grasp the need for meeting psychological demands of survival. Hence, it should be retained for an older age group and not for the primary levels. Thus, the capabilities that are determined as essential for the future, by the experts are:

A.Capabilities for surviving the characteristics in the area of 'Environmental factors'

For characteristic 1 i.e., "Global warming will occur due to rise in the levels of greenhouse gases", the following three capabilities were determined.

a. understand the importance of using alternative means which do not release carbon dioxide
b. understand the importance of using new technology which minimizes the release of chlorofluorocarbons.
c. think in terms of utilizing the carbon dioxide which is unused in the environment for better purposes.

Characteristic 2 "Due to global warming there will be a rise in the sea levels." was rejected by experts and hence was not considered for developing the capabilities.

For characteristic 3 "Climatic conditions will alter bringing a change in the ecosystem" the following three capabilities were determined.

a. preserve the eco-system
b. adapt to change in food and living habits
c take all the possible measures managing the inevitable disasters

For characteristic 4 "Depletion of ozone layer will cause serious risks to humanity and ocean life." the following three capabilities were determined.

a. use material that is ozone friendly
b. develop new techniques that multiplies ozone
c. alternative substitutes should be developed in place of the harmful ingredients that promote ozone depletion

For characteristic 5"Due to modern atmospheric pollution rise in acid levels of rains will result in serious ecological damage" the following three capabilities were determined.

a. develop substitute material which curbs the release of sulphur dioxide and nitrous oxide.
b. to multiply the existence in food, shelter and clothing - alternative systems that nullify the effect of acid rain
c. use approaches that protect the living things from the effects of acid rain.

For characteristic 6 "Nuclear winter" will occur due to continuous multiple nuclear explosions affecting every aspect of human and natural life." the following three capabilities were determined.

a. negotiate for peaceful living on earth
b. getting prepared to live in "nuclear winter" while having to promote harmony among the existing
c. to multiply the value of sharing among the individuals because all resource s will be scarce both qualitatively and quantitatively

For characteristic 7 "Pollution of water resources will exist." the following three capabilities were determined.

a. developing an attitude of prevention than cure for pollution of water like producing less waste as well as managing the remaining in a proper way
b. refine /purify water by adopting new technology which are cheaper and indigenously available
c. to innovate or investigate new methods for preserving the essential potable /pure water

For characteristic 8 "Land degradation will occur at unprecedented scales" the following three capabilities were determined.

a. arresting land degradation
b. develop technology to produce yields even in a degraded land
c. innovate new methods of farming which require no land

B.Capabilities for surviving the characteristics in the area of "Cultural inflections"

For characteristic 9 i.e , "Future culture will be having more of 'techno-culture', in which religious, national and racial differences would scarcely figure" the following three capabilities were determined.

a. develop a philosophy of more production, less consumption and less expenditure
b. more innovative to meet the competition in the area of study and work
c. withstand all along the stresses and burnout's that are usually shared by fellow human beings at present

For characteristic 10 i.e., "Future culture would lead to an awareness of finitude and bounded-ness of the planet and humanity" the following three capabilities were determined

a. child will be able to comprehend the necessity for the protection of human race
b. understand the importance of every persons role in maintaining the integrity of the globe
c. understand the seriousness of a small error in technical knowledge which may eradicate the planetary structure.

For characteristic 11 i.e., "There will be fused intercultural communications", the following three capabilities were determined.

a. realize and appreciate the necessity for the uni-culture
b. fuse the existing multicultural structure into a monoculture

c. will be able to adapt to the novel uni-culture and contribute for furthering the same

For characteristic 12 i.e., "Future culture is dominated by competition between nations and states" the following three capabilities were determined.

a. while appreciating the survival axiom the individual tries to become a successful competitor in a constructive manner.
b. the individual competition that is contributory to the state wise or national spirit has to be multiplied
c. healthy competition with the past achievement of the self / state/ nation has to be inculcated

The characteristic 13 i.e., "Possess extensive global connectivity" was rejected by the experts and as such has not been considered for the development of capabilities.

For characteristic 14 i.e., "In the future culture, there is no 'outside' from where one can be an 'innocent observer' and every person is responsible for the event" the following three capabilities were determined.

a. appreciate the social dependency of social milieu
b. possess the sense of accountability and feels the responsibility
c should be able to exist with diversity in unity

For characteristic 15 i.e., "Future culture compels the individual to think in global terms" the following three capabilities were determined.

a. will be able to visualize the relation between the macro implications of a micro activity.
b. will be able to specialize in a micro-manner and capable of relating it to macro level
c. rejected by experts.

<u>*C.Capabilities for surviving the characteristics in the area of "information technology"*</u>

For characteristic 16 i.e., "The information age will be knowledge centered" the following three capabilities were determined.

a. Information handling –obtain and use knowledge
b. presenting information
c analyze and synthesis the available information

For characteristic 17 i.e., "In future the computer will as ubiquitous as the pen" the following three capabilities were determined.

a. be aware of the sources where the computer components are available
b. be able to use, repair and maintain computer with an extreme ease
c. be able to read visual images conveying matter of no of pages (in a single image)

For characteristic 18 i.e., "Information technology will provide for easy (a) .information storage and (b) information retrieval " the following three capabilities were determined.

a search for the appropriate resources where information is stored.
b. techniques of storing information should be learnt and updating skills should be possessed
c. able to search, select and sort out the required information.

For characteristic 19 i.e., "The varied qualities of information technology will significantly alter the way we learn and teach." the following three capabilities were determined.

a locate the resources of self learning material
b. pick up the changing methodologies for better learning

c. assess for the best methodology and improve the same in accordance with the changing demands

For characteristic 20 i.e., "Information technology will affect the work culture." the following three capabilities were determined.

a develop flexibility for adapting to the changing time and work schedule resulting from the application of IT.

b. use the spare time, resulting due to application of It, in an effective manner.

c innovate new connections and contacts as per the changing requirements of IT.

For characteristic 21 i.e., "Information technology will lead towards the displacement of nationhood and nation cultures– a common culture will be developed" the following three capabilities were determined

a. able to accommodate the ideologies of people of different cultures.

b. able to give rise to an integrated comprehensive global outlook for further generations

c able to have self control from initiation of action that is harmful for others

For characteristic 22 i.e., "The home will become the center of economic and cultural life." the following three capabilities were determined.

a. get acquainted with time management

b. get acquainted with material and distance management

c. get acquainted with human management

D.Capabilities for surviving the characteristics in the area of "demographic factors"

For characteristic 23 i.e., "There will be an unprecedented rise in the population." the following three capabilities were determined.

a. importance of having less population growth

b utilize the available resources in an effective manner like space, food etc.

c. able to innovate new means of survival

For characteristic 24 i.e., "Depletion of Natural Resources will result as a rise of human numbers" the following three capabilities were determined.

a. importance of the resources available in nature

b. use alternative measures to sustain himself

c. develop technology to produce maximum benefit from the existing resource

For characteristic 25 i.e., "Important health problems will be cause due to high populations" the following three capabilities were determined.

a. aware/understands the importance of health of a person

b. importance of universal antidotes (vaccines) that can be given to the infant as soon as he is born to make him immune to the diseases.

c. supplement for calories deficiency by developing certain crops which grow even in inadequate conditions but yet are highly nutritious and can be easily available to every person

For characteristic 26 i.e., "Unemployment will result due to an increase in the working populations" the following three capabilities were determined

a. take up family vocations

b. able to sell himself – put his positive points forwards

c innovate novel activities that create employment not only for him but for others too

For characteristic 27 i.e., "Increase in population will lead to problems of transportation" the following three capabilities were determined.

a minimize transiting by using alternative means of communications

b. develop a new mode of transport which has a larger carrying capacity/ accommodate many people at a time and is also cost effective

c. use of alternative methods for overcoming a problem.

E.Capabilities for surviving the characteristics in the area of "work conditions"

For characteristic 28 i.e., "Automation will bring a change in the composition of the workforce" the following three capabilities were determined.

a. accept new ways of thinking

b. update knowledge each day

c. seeking sources that contribute for knowledge updating

For characteristic 29 i.e., "Numerical flexibility will be an established feature of tomorrow's organization" the following three capabilities were determined.

a sell his talents in the best possible manner

b. seeking information regarding the avenues for selling his capacities/talents

c. complete the work effectively in the given time –time management

For characteristic 30 i.e., "New forms of work organizations like home/tele/networking will emerge" the following three capabilities were determined.

a. developing styles of functioning with different types of organizations

b. keeping abreast of skills required for changing work conditions

c. developing/generating new work by himself

For characteristic 31 i.e., "Employee versatility such as multi-skills / continuous learning and development / team working will become increasingly important" the following three capabilities were determined.

a. he needs to be –communicative, interactive and have perfect social cognition (Social cognition is defined as empathy and sympathy. Empathy means to be able to read somebody else's feeling and match the observers own feelings and sympathy means the ability to share another's emotions or sensations. Social cognition therefore culminates to the point where one thinks and becomes concerned about other people's actions and feelings. This can be developed through co-operative interaction.)

b. continuously innovate new things basing over past experiences

c. handle/manage multi/complex situations

For characteristic 32 i.e., "There will be fragmentation in the working lives of people" the following three capabilities were determined.

a. plan to take meaningful gaps from work

b. utilize these gaps for improvement of knowledge as well as self-growth

c. arrange the work tasks in related smaller fragments for easy completion

For characteristic 33 i.e., "Women will record advances in tomorrow's work organization" the following three capabilities were determined.

a. become capable of executing all tasks in a uniform manner

b capable of innovating novel activities for survival

c. rejected by experts.

The above discussions showed that the capabilities that are required for inculcating and nurturing in the children in order to enable them to develop the characteristics for the future generations.Different capabilities are required for various functions to be performed in each

of the area, and which kind of capability is required for what kind of function" could also be established through a common opinion. The same has been considered and the hypothesis number 3 was retained.

Development of the activities and their integration into the existing curriculum:

After the capabilities that are necessary for the child of the future were determined through discussions with the experts, the fourth objective i.e., *to develop activities, games and content to bring about these capabilities in the child* was taken up.
Keeping in view the above necessities of the future and to develop and nurture the essential capabilities in a child to become competent to face the future challenges, the researcher has developed activities, games and content material to be incorporated in the existing curriculum. While developing the activities, the comprehension level of students, the maintenance capacity of interest of the activities, local availability of material required for the activity, relation of the activity to the immediate environment of the child and finally the ability of the activity to reflect the capability that needs to be instilled, were focused. An example is given for better comprehension
For developing the capability "Able to search, select and sort out the required information" the following activity was developed.
Activity:

Take the students to a room where a heap of material (could contain anything like vegetables, fruits, flowers, leaves etc.,) is kept. Empty boxes with labels written on them are also placed. As the name of a category is called out by the teacher, for example-- say flower – the child has to search for a flower from the heap and then put it in the box containing the label 'FLOWER'. In this activity the child first searches for the flower and selects it and sorts it out by placing it in the box meant for it. This activity enhances the capability 'able to search, select and sort out the required information'.
Similarly various curricular activities were developed for all the remaining capabilities.

The development of activities for the inculcation of the envisaged capabilities proved the hypothesis number 4 which is stated as "Imparting education mainly refers to the context of content which in turn is dependent on age factor of the life span in which it is utilized. For an envisaged capability, developing the relevant content material, activities and games is feasible at the primary stage from the futuristic point of view".
After the activities were developed, the fifth objective i.e., *to incorporate these activities games and content material into the existing curriculum* was taken up.
Content analysis was done so as to identify the appropriate slots to place the curricular activity developed as explained above. The term 'Content Analysis has been used only to the extent of finding slots alone The investigator has preferred to fuse these activities into the existing curriculum; instead of giving a separate curriculum or addendum, in order to avert friction with the teachers in convincing them to accept this seemingly additional work. For the content analysis that was done, the textbooks of classes I, II, III were considered. The researcher has taken all the prescribed government text books for analysis except for Environmental studies –1, Environmental studies –2 and Mathematics of classes I and II as these text books are not prescribed by the government of Andhra Pradesh for classes one and two. However it was found that for these subjects there are many private publishers who publish these textbooks as per the syllabus prepared by the government. Out of all such publishers Sree Rama Publishers were selected at random and the textbooks published by them for the three subjects namely Environmental studies –1, Environmental studies –2 and Mathematics of classes I and II were taken into consideration.

Content analysis helped in identifying appropriate slots to fuse the activities developed as explained, in the present curriculum. To show an example, again referring to the above explained example, the content analysis and adding up of the developed activity are shown below:

Table showing the content analysis of the activity developed for the capability "Able to search, select and sort out the required information"

Cl	Subj	Pg No.	Existing content	Link sentence	Comments
II	ES I	43	In the post office letters are sorted out according to their address	Let us sort some material according to their categories.	The activity should be taken up in continuation to the link sentence..
II	EW B	9	One word in each of the following groups is a 'stranger'. Find it and put a box round it.	Let us also play a game where we have to pick up the object belongs to a particular category and put it in the respective box.	-do-

In the similar manner, content analysis was done for all activities that were developed. Most of these activities were successfully fused into the existing curriculum, but it was notpossible to do so for some of the activities. It is therefore suggested to the teachers to take up such activities as general activities and to conduct them as and when it is feasible for them todo so. Appropriate suggestions are given for completing the work.
Hence the hypothesis number 5 i.e., "The activities, games and content material developed, for nurturance of the capability envisaged, can find a place conveniently into the primary curriculum i e., for classes I, II, III", is considered as partially proved.

Finally, the activities and content analysis was discussed with the five curriculum experts at length for establishing its face validity, content validity and construct validity. The present model has been given to the school at Andhra Mahila Sabha, to be used into their school curriculum However, the predictive validity was not attempted due to the time constraint and it's longitudinal nature.

5.2 Suggestions for future researchers:

1 The present study was a study done for the primary sections. The researcher suggests that a similar study could be taken up for the secondary level as well as for higher education.

2 The present study deals with developing a curriculum only for the state of Andhra Pradesh. Studies could be taken up in other states and the possibility for the development of a national curriculum should be explored.

3 The present study has taken into consideration five areas, i.e , Information Technology, work, culture, environment and population (based on the obtained data). This leaves scope for similar studies to be taken up in other areas such as value systems, concept of leisure, concept of peace, and so on.

4 Longitudinal studies should be taken up by the State, National as well as International departments and organizations such as NCERT, UNESCO, etc., to implement the recommendations provided by the above study by incorporating the changes as per the requirements of the area / country concerned.

(g) MANAGEMENT OF EFL IN SSA

Prof. D.L. Sharma
Former Principal,
Institute of Advanced Studies in
Education, GVM, Sardarshahr

BACKGROUND

SARVA SHIKSHA ABHIYAN (SSA) has emphasized on promotion of EDUCATION FOR LIFE (EFL). Promotion of EFL is one of the major goals of SSA. SSA in its framework supports the view that Education is not only a process of acquiring the cognitive abilities of Reading, Writing and Arithmetic but it is a learning system with a focus on total development of the children. SSA, like Mahatma Gandhi is of the view that Education is a process of all round development of the child by drawing out of the best in the child's body, mind and soul. I am of the view that the objectives and different domains of the learning system here termed as in EFL, remain almost the same as of GEETA in ancient time, GANDHIJI'S Basic Education and INTERNATIONAL COMMISSION ON EDUCATION'S Report popularly known as DELORS Report in Twentieth Century. All these three viewpoints talk of all round development of the child by drawing out the Treasure within the child. The following table shows the similarity in the three viewpoints

THREE MAJOR ASPECTS OF CHILD'S PERSONALITY & THREE MAIN DOMAINS OF LEARNING PROCESS

	Major Three Aspects of Child's Personality			**Three domains of Learning**		
S. N.	**General**	**Geeta**	**Three H's of M. Gandhi**	**Three related domains of Learning**	**Geeta's Three domains of Larning**	**Delors Report and domains of Learning**
1.	Body	शरीर इंद्रियाँ मन (Body)	Hand (Body)	Psycho-Motor	कर्म	To do
2.	MIND	बुद्धि(Mind)	Head (Mind)	Cognitive	ज्ञान	To Know
3.	Soul (Heart)	आत्मा (Soul)	Heart (Soul)	Affective	भक्ति	To live together > To be

Steps of Logical Process of Learning under EFL are -

COGNITIVE	AFFECTIVE	PSYCHO-MOTOR
जानना 'To know' (Understanding Critical Thinking Judging	मानना 'To be' Accepting (having a Faith) Inculcating in behaviour	करना 'To do' Application in day-today life in form of different activities and expressions

Learning Methods of EFL may be as follows for Different aspects of Learning -

	1	2	3
Learning Aspects	जानना 'To know'	मानना 'To Be'	करना 'To Do'
Learning Methods	श्रवण - Listening -Observation - Interaction - Doing by hand along with five senses	मनन - Understanding - Critical Thinking - Judgement - Self Experiencing	निदिध्यासन Application in day to day life through expressions & activities

We could not adopt this disired universally accepted Real Education i.e. Education For Life enunciated by Geeta, followed by Mahatma Gandhi and adapted by International Commissions on Education. (Delors Report)

WHY EFL

- We are practising **Information and certificate centered system of education** which is -
  - away from needs, real life of learners, family and community.
  - away from development of learners, family, community and nation.
  - not suitable to the majority of Indian people residing in rural India, and deprived / weaker sections of the Indian society.
- EFL brings desired behavioural changes in the children, convert them in to developed human resources required for community & national development, **therefore there is an urgent need of introducing & implementing EFL.**

CONCEPTUAL ELABORATION OF EFL IN THE CONTEXT OF SSA

BASES OF EFL

EFL is community life and child life centered learning system. its bases are as follows -

I Socio-Cultural, economic and natural environment of the community.

II Needs, Interests, Experiences, Attitudes, Aptitudes and Ethos of the Children.

LEARNING MATERIAL

Learning material in EFL should be area and learner's age specific. Special features may be as follows -

- District specific / Area specific learning material incorporating learning experiences from local social and natural environment.

- Designed in accordance with the age group and experiences of the children.
- Using processes & problems of the community for learning.
- Integrating Health, Nutrition, Physical education, socio-cultural & vocational experiences and activities in its content.

TEACHING LEARNING PROCESS

EFL differs from the present day system of education, which focuses on only on cognitive aspect of learning. Accordingly learning process in EFL is also a different one. Here -

- Children learn through
  - Listening
  - Interaction
  - Observation
  - Doing
  - Experiencing

LIFE SKILLS RELEVANT TO ELEMENTARY CURRICULUM

- Life skills are the abilities required for leading better quality healthy, wealthy Socio-civic life
- Life Skills relevant to Elementary Curriculum are the life skills required for the children & adolescents in the age group 6-14 hence, here Life skills are based upon the different aspects of life of the children & adolescents.
- Development of Life skills depends upon the quality of learning which takes place in the family, school & community.
- Learning leads to modification of human behaviour and really speaking Life skills are the behavioural patterns for different aspects of life
- Adolescence, a turning point of elementary education, is the age for developing Life skills.

Different Aspects of Children's / Adolescents's life	-	Life Skills for different aspects of Children's / Adolescents's life	Curricular Areas
1. Healthful living (Physical & Mental Health)	-	Health Skills	Health, Nutrition, Sanitation (EVS), Yoga
2. Family Life	-	Family Life Skills	EVS (Social Studies)
3. Learning (Education)	-	Communication - Observation skills	Language
4. Community - Civic Life	-	Civic Skills	EVS (Social Studies)
5 Cultural Life	-	Cultural Skills	EVS (Social Studies)
6. Natural Environment & Life	-	Environmental Skills	EVS (Science)
7. Economic life (Occupational Life)	-	Economic skills (Occupational Skills)	EVS (Social Studies) Mathematics

To Know ⟶ To Be

During this age of life, knowledge of occupation in the community and outside is required Occupational skills as such can not be developed. The learner has to be equipped with the ability to solve the simple economic problems of daily life relating to the use of money, purchase of essential goods etc.

- Teacher acts as facilitator, organizes and presents the learning situations in social and natural environment.
- Teacher provides learning environment, observes and helps in achieving the learning targets.
- Teacher uses locally available physical & natural resources, processes & problems of the community in Teaching, learning process.
- We find correlation and integration of Health, Nutrition, Child women welfare activities, Agriculture and experiences shared by elderly persons of the community, with the cognitive aspects of learning.

SCHOOL AS HUB OF COMMUNITY ACTIVITIES & COORDINATING CENTRE

- In EFL School is not only a centre for imparting education of three R's but it is also a centre of activities of the community from which children learn.
- School complements and coordinates Intersectoral infrastructures and different sub systems.
- In EFL school is less costly as it utilizes optimally the locally available existing infrastructures, physical & human resources in the community.

MANAGEMENT OF EFL IN SSA

The cycle of **PIME** given below may be followed in managing the EFL in SSA-

P = PLANNING

I = IMPLEMENTING

M E = MONITORING & EVALUATION
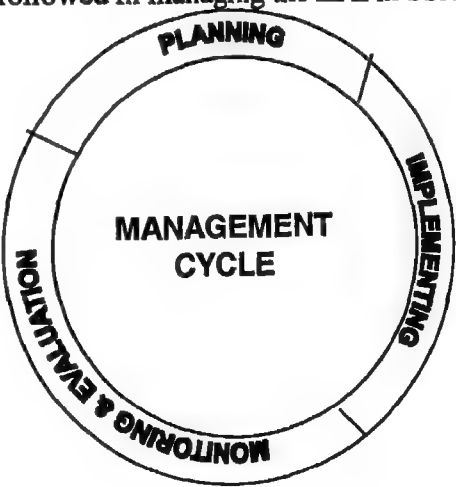
1. PLANNING OF EFL

EFL is community owned & community managed program therefore planning is also community based. Community people are involved in planing. Following steps may be followed in preparing plans for EFL. According to SSA perspective & Annual plans are to be prepared.

- Deciding specific objectives of EFL for a habitation, a District and a State.
- Preparing specific community based action plans.

The format of the worksheet given below may be used for developing Action plans with required modification if there is any.

S.N.	Activities / Actions	Responsibility	Time	Place
1.1	**Constitution of core teams for EFL** from Habitation to District and State Level	State Implementation society (SIS) with community based approach		
1.2	**Orientation programme** Orientation of community people, P.R.I.s Educational Administrators, Persons in General Administration, Health,Child-women welfare etc. Deptts. & NGO's	Core Team at their level with the help of Resource persons & Resource Institutions		
1.3	**Mobilization of Govt. Deptts.** and establishing Inter sectoral coordination.	SIS		
1.4	**Motivating and mobilising community** through need based welfare activities	Local core group		
1.5	**Pooling Resources** and converting the schools as community centres	Local core group		
1.6	**Assessment surveys** of - Needs & Resources etc.	Core group along with community people.		
1.7	**Formation of community committees** at Habitation / Village level for Micro Planning at village level.	Local core group with the help of BRC		
1.8	**Preparation and development of District / Community specific learning material**	District implementation society		
1.9	**capacity building of the following for implementing EFL** - Community people - Teachers - Extension workers - Persons in administration	Resource Institutions & Resource persons		

1.10	**Monitoring**	Self monitoring by teachers & Administration participatory monitoring by community people with Resource persons SIS & National Institutions		
1.11	**Evaluation**	Internal by Resource Institutions and external by external agencies outside the state		

Note: Decisions regarding time and place will differ from state to state, hence not mentioned.

2. IMPLEMENTIING

Implementation of EFL is quite different from the implementation of a general elementary education program. Here, emphasis is on Motivating & Mobilising Community people who have to manage the program with the help of different Govt. departments, NGOs & Educationists. Outline of the functional strategies are being given on the next page.

FUNCTIONAL STRATEGIES FOR IMPLEMENTING EFL

2.1 **Orientation and Motivation of the political leaders and bureaucrats** Orientation & Motivation of the Chief Minister, Ministers holding charge of Education, Health, Social welfare, Rural Development, Agriculture, Animal husbandry etc. departments and bureaucrats lookingafter the departments is required for smooth & speedy implementation of EFL.

2.1.1 **Mobilization of the Government Machinery** - In addition to orientation & Motivation of Political leaders and bureaucrats at the state level, mobilization of district, block and local level officials is also required for smooth and speedy implementation of EFL Meetings and discussion of Action Plan is essential for the purpose.

2.2 **Stratizing for functional Inter-sectoral coordination at different levels for implementing EFL**

EFL is a multisectoral effort with intersectoral linkages. An effective implementation of EFL can scarcely be achieved by the Education sector alone. Effective and sizable contributions from other sectors, particularly Health, Agriculture, Animal Husbandry, Cooperative Banks, PHED, PWD, Electricity, Cottage Industry, Housing, Irrigation and communication are vital for making EFL a model, a free vehicle for modification of behaviour of children for better quality life.

Multisectoral and intersectoral linkages in the following area at local, block and district level is essentially required under the cover of Zila Parishad

Health & Sanitation, Education, Economy, Social welfare, Social Cultural development activities and development departments.

School should work as a centre of Inrter sctoral activities.

Horizontal and vetical linkages should be considered for developmental, vocational and welfare programs. Vertical linkages are particularly relevant at micro and macro levels to facilitate effective decision making, planning at micro level.

Close coordination and collaboration with NGOs should be accorded a high priority. There can be no single approach or model to make intersectoral coordination a reality. What is required is the dissimination of the spirit of concerted intersectoral action.

2.3 **Constituting EFL Management committees** from village to district level based upon tri-party relationship among community, Govt. & NGOs with a good representation of women and persons from disadvantaged and marginalised sections of the society.

2.4 **Motivation and Mobilization of Community People** This can be done by organizing problem solving, need based, health, sanitation, agriculture, animal husbandry and financial help camps integrated with folk lore, folk dances and one act plays. Details of these activities for motivation and mobilization of the community people are being given below -

MOTIVATIONAL ACTIVITIES FOR MOBILIZING THE COMMUNITY

	Area of Activity	Name of the Activities and their details
1.	**Personal, Family & Community Healthcare**	**Organization of Swasthya Mela with the following activities** - Medical check-up - Preventive & Curative Medical Advise and Treatment - Providing Medicines / Medical kit - Eye and dental check-up camps - Immunisation camps - Pre and post natal care camp - Other camps on the basis of the need of the community.
2	**Professional and Vocational Development activities**	**Krishi Pashudhan Vikas Mela with the following activities -** - Demonstration of latest techniques and skills in Agriculture and animal husbandry - Providing help for diagnosis and treatment of animal and plant diseases - Information education for the use of Gobar and other waste material of live stock - Information education about the best use of waste materials in the family &, community - Other related and required knowledge and

		skills for economic development
3	**Financial help Activities**	**Arthik Sahayata Mela** - Bringing Financial institutions to the village / habitation - Information about different financial assistance programmes - Helping in getting loans & subsidies
4.	**Socio-Cultural Activities**	Integrating the information education program with Folk lore. Folk dances & One act plays.

2.5 SURVEY of Needs, problems and available Resources

As states earlier that EFL is a multisectoral programme to be managed by the community, therefore it is required that needs & problems of the community are surveyed alongwith the survey of locally available natural, physical and human resources to meet these needs and problems so that holistic micro plan can be prepared. Needs & problem to be surveyed are in the areas of Education, Health, Sanitation, Nutrition, Agriulture, Employment & income generation Animal husbandry, cottage industries, Financial helps, Essential community facilities like Roads, Electricity, and housing etc.

2.6 Micro Planning at Village level - Based upon the surveys of basic needs, problems and available resources at local level, Micro planning at village level will be done by the community people with the help of the Govt. officials, experts & teachers. This micro planning will be done keeping in view the holistic development of the village community and inplementation of EFL simultaneously. The school will be the centre of this planning. Prior to the exercise of Micro planning the persons involved in the excercize will be trained for it by the experts of the field.

2.7 Mobilization and Planning for Optimum utilization of locally available Resoures : Natural, Physical, Human and Material

On the basis of the identification of resources available with the community, an action plan for the optimum utilization of these resources has to be prepared under the Micro planning stage and accordingly resources are to be utilized.

The existing infrastructure of different departments at local, cluster & block level be optimally utilized in an integrated way for providing better quality life education. The only need is to integrate them for minimizing the wastage in their individual isolated efforts.

Regarding, the available human resources, the major task is converting them into developed human resources by way of imparting training with an objective of developing their knowledge & skills and to drawout the best they possess. This will minimize the expenditure on EFL as they will be used for EFL.

The other essential step is to arrange financial resources from financial institutions, Govts & Industries in order to implement the EFL programme. Volunteerism, professionalism and public enthusiasm are to be given momentum to make the program a success.

2.8 **Developing Curriculum for EFL** - EFL being a different programme of education, an integrated approach is required for developing the Curriculum for it. Broader curricular areas may be related to the following -

- **Health** - Personal healthcare, hygiene - our body, health habits
- **Nutrition** & Health
- **Sanitation** - Environmental sanitation
- **Family** - Place of individual in a family Kinship Role of family in individual development. Different roles in a family.
- **Community** - community & family, Individual & community, community & Development. Neighbourhood relationship Different roles in community
- **Plants** - germination of seeds, young seedlings, warmth, air, moisture, sunlight, etc for growth of plants. Specific plants in the specific area. Plant diseases
- **Crops** - different crops - their timings. Seeds - different type manure's & methods of sowing etc.
- **Different vocation/occupation in the community in the block and districts** - Inter dependence of occupations. Material & jobs in different occupations.
- **Population & Development** - Population education, reproductive healthcare, sexual habits & sexually transmitted diseases.
- **Childhood & Adolescence** - Their special features, Physical, Mental changes during adolescence - Drugs - different types and their use / misuse.
- **Geographical knowledge** - of the state and the nation
- **Rights and duties of a citizen**
- **Freedom struggle, Indian Constitution, special features of Indian Democracy / constitution**
- **Decentralisation** - Local slef Govt. & Panchayat Raj
- **Socio - cultural heritage** - Art, Music, Dances, Literature, Folk art, Folk Dances, Folk Lore
- **Religions** - Religious & communal Harmony
- **National Identity & National Integration.**

These areas will be kept under different subjects. Emphasis would be on development of life skills for better quality life.

Listening, Interaction, Debate, Discussion, Activity, Field Visit, Plays, Project work, Dramatization will be Methods of Learning.

2.9 **Preparation & Development of Learning Modules** - Learning Modules will be developed on the basis of the needs, interest of the children drawing learning experiences from the problems, processes and environment of the community.

These learning modules would be developed in the workshop. Where teachers, community people, some senior students and educationists collectivity would develop the learning modules.

2.10 **Training for Transaction of Curriculum** - Teachers, parents, selected youths will be trained for transacting the curriculum. Training would be mainly activity based. Trainees would be required to transact the curriculum in the school effectivity.

Teachers are to be trained as facilitators encouraging self learning in the classroom. Teachers are to be equipped with the skill of providing opportunities to children for their development in accordance with their needs, interest etc

2.11 **Training for Delivery Modes of Learning Modules**

Teachers are to be equipped with the skills of delivery of the learning modules in real life situations through day to day life activities.

Teachers has to monitor whether he is achieving the objectives of the learning modules, behavioural changes in terms of knowledge, skills attitudes etc. are visible in the children.

Training for action learning, participatory learning will be imparted.

3. MONITORING & EVALUATION

3.1 **Monitoring & Evaluation plays very important crucial role in the process of management of any programme / project as it ascertains the achievement of the objectives of any programme or project effectively, economically. Thus Monitoring & Evaluation is a desirable & acceptable weapon of managerial effectiveness.** Monitoring is concurrent and continuous with the systems operation. It does not wait ill the wheels of management have been derailed; it seeks to prevent the wheels from getting off the rails. Monitoring is not one time and after the event exercise its evaluating function is ex-post.

Management of any program / project must know about -

- **What's happening**
- **What's going wrong**
- **What shifts in plans and directions are called for**
- **What must be done to set things right or to seize a good turn when it comes along**

The four points stated above are the subjects of the function of Monitoring & Evaluation. No program can be managed successfully without the feedback through Monitoring & Evaluation, hence Monitoring & Evaluation is very essential part of management process.

The common bases of Monitoring & Evaluation are four - **1. Quality, 2. Quantity, 3. Time and 4. cost**. Any one of these or combination of any two / three / four may be adopted as an index of inputs & output depending upon the nature of the programme / project. SSA is a program of the nature which talks of **Quantity , Time and Cost** with a greater emphasis on **Quality based education** for improving human abilities of all children in the age group of 6-14 through community owned quality education in a mission mode, **hence Monitoring & Evaluation gets a very important place in the management of SSA in general and EFL in SSA in particular.**

3.2 MONITORING & EVALUATION IN MANAGING EFL

EFL under SSA is an educational program of the community by the community for imparting the knowledge skills, attitudes, values required for developing human abilities of community children.

Through the monitoring technique we are able to decide - what is happening & what is going wrong In the following aspects of EFL

- Community ownership and management of the program
- Decentralized management
- Life skills orientation of the programme
- Design of the integrated curriculum
- Area-specific Learning Material
- Child centered Learning process
- Integration of cognitive & non-cognitive subjects in the learning process.
- Role of Teacher, Extensive workers and community people in transaction of curriculum
- School as a hub of community activities
- Intersectoral coordination management in EFL
- Mobilization & utilization of physical & human resources of the community
- Capacity building of community people, teachers, extension workers and persons in administration.
- Teacher preparation programs & teachers competencies
- Evaluation of learners

3.3 MODES OF MONITORING

3.3.1 Self Monitoring At local level - Manages, teachers may do self monitoring as follows -

- The teachers regarding learning environment, learning process and learner's interest and progress in learning

- The community people regarding the physical facilities, financial resources, community contribution. Use of physical & human resources of the community.

Tools for the purpose may be developed locally with the help of the experts. Self monitoring may be done weakly / fortnightly. The nature of self monitoring should be informal / less formal It should be a continuous process

Community based Participatory Monitoring

Partners in participating monitoring may be -

- Community prople
- EMIS
- Resource persons & Resource institutions
- Representatives of District / State level implementation society.

EMIS will correlate the school level data with the community based information from micro planing and surveys. EMIS will have the periodic reporting system. State implementation societies and National mission for UEE and National Institutions like NIEPA, NCERT, NCTE will also undertake periodic monitoring.

Academic, Organisational and Financial monitoring would work together.

3.4 EVALUATION

In management process ex-post approach to Monitoring is its evaluatory function. The following two questions out of the four stated above are the main theme of Evaluation.

- **What is going wrong**
- **What shift in plans decisions and discussions are called for.**

Evaluation will be based upon research carried out by state level institutions Comparison of data with EMIS and the data collected by the community would help in evaluative research. Evaluation would answer how far the objective of the program have been achieved effectively and economically. Evaluation would provide the feedback to administration, community people and academic workers for what must be done to set things right. Half yearly and yearly internal evaluation can be proposed In the end the evaluation may be by external Resource institution from out side the state.

CONCLUSION

EFL in SSA is a different from the prevalent education programs for Universalization of elementary education. It's major objective is inculcation of life skills in the behaviour of the children. In achieving the objective of EFL program the major management challenges are -

- Motivation & mobilization of the community people for managing the program
- Equipping the community people with the knowledge & skills required for managing EFL
- Inter-sectoral coordination
- Development of desired area specific curriculum & learning material
- Equiping the teachers, educational administrators with the knowledge & skills required for effective transaction of the curriculum

To meet the challenges an effective management system has to be developed. Development of effective management set up for SSA in general and EFL in particular is the major challenge before the sponsoring agencies of the program. Therefore it is an urgent need to build up an effective management system for managing EFL.

(h) Relevant Education: Life skill approach in the context of children of a disadvantaged and marginalized community - micro data from a village in district Koraput, Orissa.

Prof. S.N.Ratha
Former Professor of Sociology
and Social Anthropology,
Sambalpur University

I Referring to the "Learning to do" component of the Delors Commission Report, the concept paper, prepared for the National Consultative meet on "Education for life" by Dr. Shabnam Sinha, on behalf of the National Council of Educational Research and Training, holds "the life skill approach" specially significant in providing meaningful education of the difficult to reach, disadvantaged and marginalized sections of society" (P5).

II

The situation, which I had the opportunity of observing from a very close quarter, refers to a village in Koraput district, Orissa. The village is situated about 13 Km from Jeypore town on the edge of a forest. Spread over 3 hamlets - one is inhabited by the Bhumia(ST), the second by the Damba (SC) and Paraja (ST) and the third by the Kandha (ST). A small population of non-tribal backward communities is also part of the first and the second hamlet. The distance between the first hamlet and the second is about a kilometer, separated by a canal. The third hamlet is more than two kilometers from either of the first two hamlets and is perched on a hill slope.

The occupations in village center around marginal agriculture, agriculture wage and forest collection.

The inhabitants live in nuclear families. They have defined gender roles. The labor at home as well as at work place is divided on gender basis.

III

A primary school is located in the second hamlet. Children from the other two hamlets have not enrolled themselves in the school. The school building made of bricks and cement has two classrooms for 5 classes. On the day of my visit only one room was open. Two children were playing and a teacher was sitting across the village path, in front of a shop and talking to the shop keeper. The head master, who was reported to have come in the early hours, had marked 58 children present, obviously to account for the midday meal.

Literacy in the village is found to be 2% for the male and 'Nil' for the female. The literacy in the district is 24 64% (male 33.99% and female 15.15%). In the rural sector of the district the literacy is 15.89% (male 24.60% and female 7.17%). In the Jeypore Block, of which the village is a part, the literacy is 21.92% (male 31.75% and female 11.88%). Incidentally this is the Block-wise highest literacy (1991 census). The lowest literacy Block is Boipariguda with only 10.59% of the population being literate (male 16.39% and female 4.76%)

IV· Children in age group of 6 - 14 years, when don't go to school, how are they remain engaged?

· In age group of 5-7 years, boys as well as girls do baby-seating for their younger siblings.

- Female children in the age group 8-10 years accompany their mothers, male children in the same age group accompany their fathers to their respective work places/ forest to learn the perenta jobs.·
Both, male and female children in the age group of 11-14 years join the work force.

- Boys marry around the age of 20-22 years and girls around 15.

V
In agricultural operations the female labour component is in transplantation, weeding, harvesting (cutting). These are skilled operations.
Transplantation requires the knowledge of the depth to which the seedling is to be fixed as well as the distance between two seedlings.
It is a group activity and requires coordination among the participants. The participants maintain a defined distance among one another as well as keep pace with one another as the operation goes on. The child apprentice is expected to observe the operation carefully, learn and internalize the skill.
Weeding is a more difficult job. When the field is ripe for weeding,the plant (paddy) and the weed look alike. The child apprentice has to perfect her observation to distinguish the plant from the weed.
Harvesting involves cutting the crop- paddy as well as other cereals (millets of different varieties).

Here is a risk of injuring the fingers if there is any flaw in handling the sickle and the right way of holding the stalks to be cut.
VIForest collections:
It is a round the year activity. Different items are collected in different seasons. Quite a few of these items supplement the daily food intake. During the rainy season, a number of different types edible mushrooms and green leaves are collected. The mushrooms are capricious elements. Some are deadly poisonous. The child apprentice has to sharpen her/his observation to distinguish edible ones from the poisonous lot.

Similarly, edible leaves are to be recognized particularly when the structure of the leaves of more than one plant, are alike, and only one among them is edible.
As the winter sets in, edible tubers are dug out. The tuber throwing plants are largely creepers. The tubers are ripe for consumption only after the plant dies and dries up completely. Thus a tuber yielding dry creeper is to be distinguished from the ordinary ones.
40% of the economy is around the forest. Precise knowledge of the composition and content of the forest has come to become an integral part of the life skills of the community.
VII
Ploughing a masculine job. The boys learn to manipulate the plough from the adults- the father or grandfather or an adult sibling When the ploughman takes a little respite to smoke, the child learner holds the handle. Through such handling, over a period of about 2 years, becomes a ploughman himself.
There is a complementary requirement to this training - establishing rapport with the drought animals to ultimately control them. This is achieved when on the way back to home, the animals are washed in the pond or the river. The boy does it, rubbing the body of the animals and splaying water on them,when the father takes bath.

If these livelihood skills are not learnt during the formative years, the boy would become a misfit and marginal to the community and may end up carrying bricks at the construction sites of the nearby town.

I have tried to describe this scenario in order to drive home the point that these life skills should be regarded as education in the broader sense of the term and be suitable incorporated into the curriculum.

VIII

Consequent upon these observations, I suggest that community/area specific curriculum be devised and life skills required for post school life be incorporated into the learning content along with literacy and information oriented contents

The life skills, whatever they may be, are to taught in situ by the skilled worker and not by the teacher in the school. So that the community and its environment shall come closer to the school and the participation of the people in institutional schooling shall be closer and sustainable

BACKGROUND READING MATERIALS CIRCULATED TO THE PARTICIPANTS

(a) Education for Life – Concept and Approaches

Dr. Shabnam Sinha
Department of Elementary Education, NCERT

Education for life is a concept based on the fundamental assumption that education goes beyond mere transmission of information. It is aimed at all round development of the learner with interface between **cognition, emotion and motor readiness** for **right and appropriate action.** It also includes inculcation of values for personal, social and spiritual development. As a concept 'Education for Life' highlights the significance of knowledge, attitudes and behaviour that support individuals in taking greater responsibility for their own lives. The aim is at promotion of positive existing knowledge, attitudes and skills for risk reduction, making healthy life choices, resisting negative pressures and making life productive (The Delors Commission Report)

'Education for Life' is an extremely amorphous concept and is often used synonymously with (a) **education for life long learning,** (b) **education for life skills,** and (c) **education for living.** However, equating education for life with any of these specific sub-sets would amount to an unwarranted narrowing down of an extremely comprehensive concept.

a) **Education for life long learning** continues throughout the entire life span of an individual and is consonant with all the **dimensions** of education as well as the years spent outside formal education. Education for life long learning has a **horizontal dimension** penetrating across and into every form of intellectual and spiritual learning known to human being. There is also a **depth dimension** of life long learning which on the one hand responds to immediate and simple needs and on the other to the most sublime search for truth. Education

for life long learning delineates certain role competencies for performing the various roles required to be performed by an individual in human life. Attempts have been made to taxonomise and classify the roles as those of a learner, a friend, a family member, a worker; a leisure time user and so on. Education for life long learning is facilitated through the process of instructional socialization, that is, learning one's role in life through social experience and culturally mediated activities rather than through structured formal teaching. Education for life long learning would cover formal, non-formal and informal modes of learning to equip the learner to perform the varied roles expected to be performed in life.

b) Education for life skills is essentially a concept that aims at elimination and negation of the essential gap between the content of education and the living experience of students. Ideally, education ought to prepare students to face the challenges of life. For this, it needs to be initially linked with different life skills, the abilities for adaptive and positive behaviour that enable individuals to deal effectively with the demands and challenges of every day life. This could be by way of developing in the students generic skills related to a variety of areas such as health and social needs. Besides this, there would also be certain specific skills, which in the context of elementary education would be divided into sub-skills relevant to and integrative with the curricular subject areas. These would cover cognitive as well as non-cognitive and co-scholastic areas with the aim of a holistic development of the personality of the elementary learner. A diagrammatic representation would be as follows:
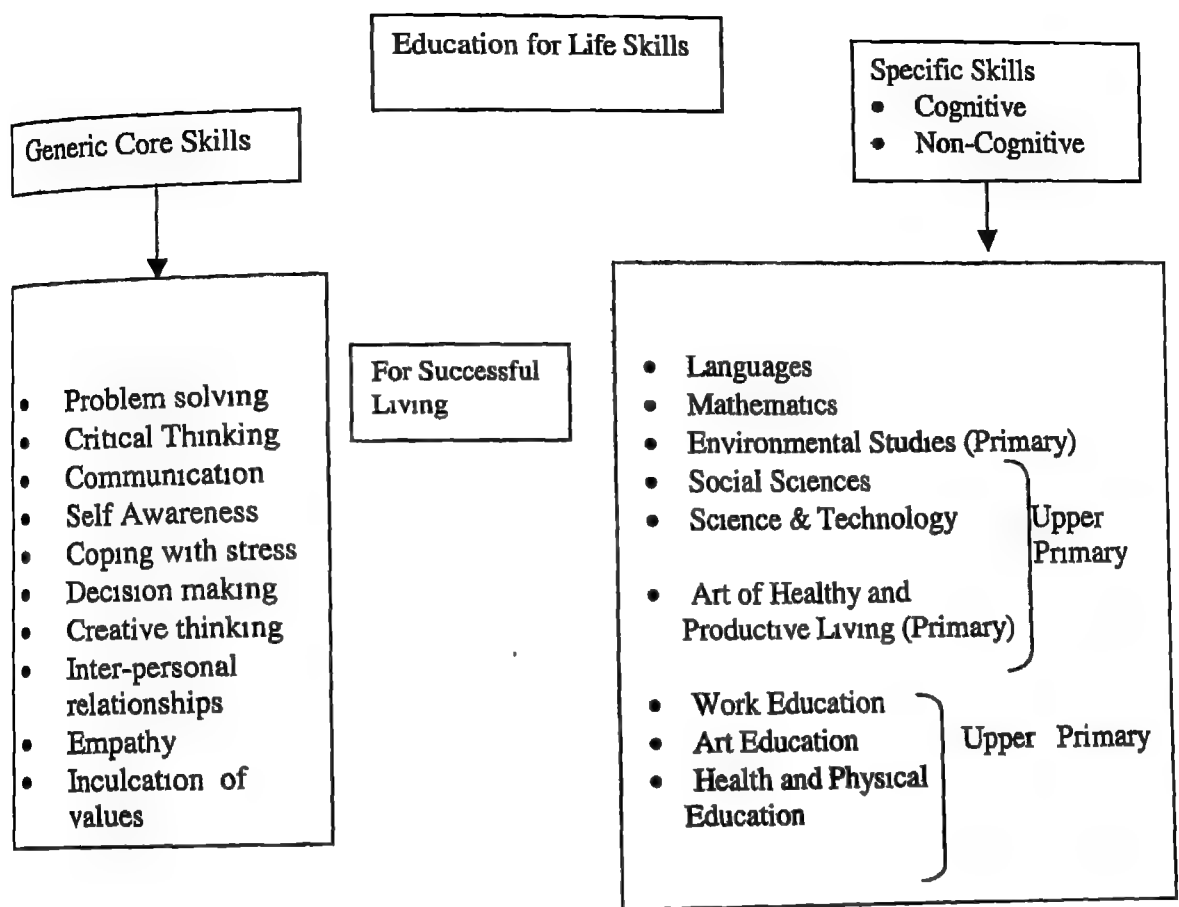
Fig. I

Education for life skills is more relevant for the elementary level. The core skills cover the behavioural adjustment aspects. The specific skills cover the subject specific competencies that equip the learner to develop capabilities both at the cognitive and non-cognitive levels.

c) **Education for living or livelihood** contains within itself the vocational component of education. Such education equips the leaner with the relevant skills and capabilities to enable him/her to earn a livelihood. This is a preparatory phase, to transition the learner towards the world of work. It could contain pre-vocational and vocational skill development related to cottage industries, agriculture, computer education, and the like. Education would be linked to economic productivity to train the learner to earn a livelihood in future life. This is a

concept that would be relevant to the senior secondary level with its roots having been founded at the elementary level itself, in the area of Art of Healthy and Productive Living. This is an area that would be of special relevance to the alternative stream of education; developing in the learner certain pre-vocational competencies that could subsequently be transitioned to vocational training.

Education for life emphasis within itself education for life skills, education for life long learning and education for living. The entire concept of education for life may be diagrammatically represented as follows
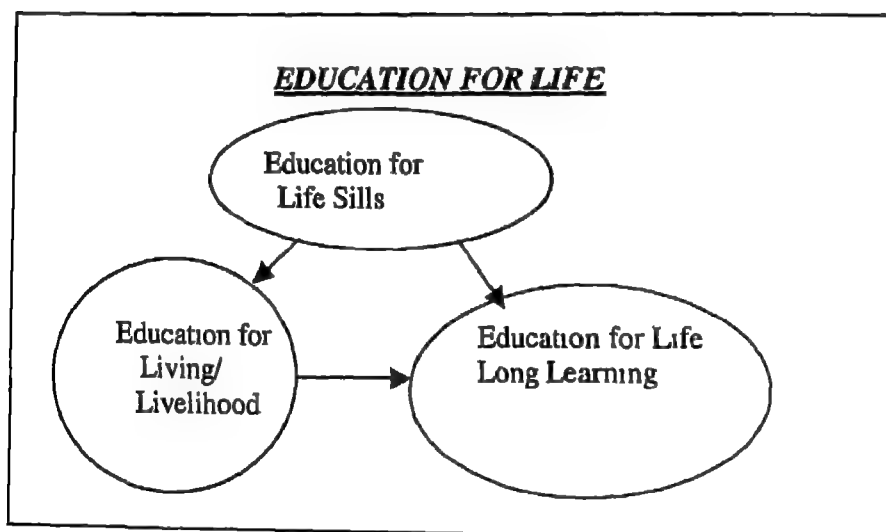
Fig II

Education for life can be broadly defined as equipping the student with the capacity to translate knowledge, attitude and values into actual abilities – to know *what to do, when to do and how to do* in actual life situations. Education for life is *spatial* i.e. it varies across in cultures and regions. It is also *temporal* i.e. its relevance varies with variation in time and the same skills may not be unformally useful for all times to come. It also

has a time dimension, equipping the learner with skills to face the present an the future with comfort and ease.

The approach towards **'Education for Life'** presupposes transactional strategies that are facilitative of a participatory approach. Traditional teaching-learning focuses on reproduction of facts and emphasizes lecturing and written texts. The emphasis is primarily on standard knowledge that has little relevance or adjustment to local conditions. The attention to attitude and skill development becomes minimal. The **'education for life'** approach however would require fundamentally different teaching and learning strategies. Learners would need to be approached with teaching methods that arouse their curiousity, enhance their willingness to participate actively in the learning process and promote self-learning. The approach would be child friendly, practical, locally relevant and creative. Teaching-learning strategies would need to be interactive and participatory with significant stress on interaction between:

a) Student to Teacher

b) Teacher to Student

c) Student to Student (Child to Child Learning)

What is the Child to Child approach?

The child to child approach is a way of teaching that encourages children to participate actively in the process of learning and to put into practice what they learn. It is based on the pedagogic principle that children enjoy being involved and it helps them to learning better This makes teaching-learning extremely effective. This could be used significantly for a larger design through developing in the children qualities of:

- *caring and being responsible for siblings (child to child)*
- *influencing other children of the community (child to children)*
- *sharing information with families (child to family)*
- *spreading ideas and messages to the community (child to community)*

The **education for life** approach would encompass the following elements:
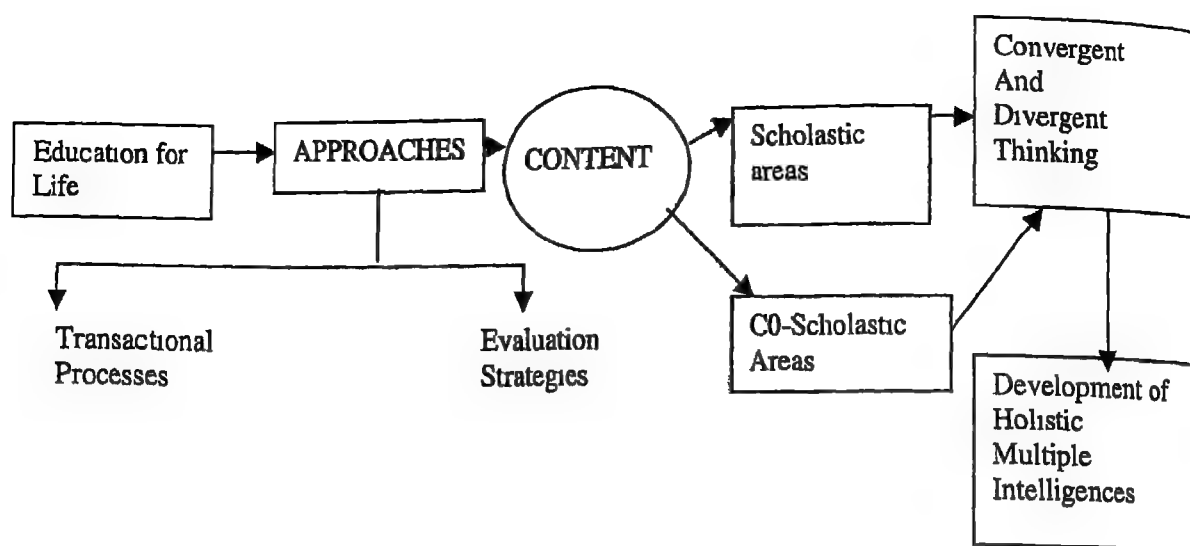
The approaches for **education for life** would be determined by the content of the curriculum. The content of the elementary education curriculum can be broadly categorized into the scholastic (cognitive) and co-scholastic (non cognitive) areas. The scholastic areas cover the subject areas prescribed in the curriculum. The co-scholastic areas cover the Art of Healthy and Productive Living at the primary level and Work Education, Art Education and Healthy and Physical Education at the upper primary level (National Curriculum Framework for School Education, NCERT, 2002)

While transacting the major curricular areas too, the approach would be primarily to transition the subject towards inculcation of skills that are relevant to life. A broad taxonomy would be:
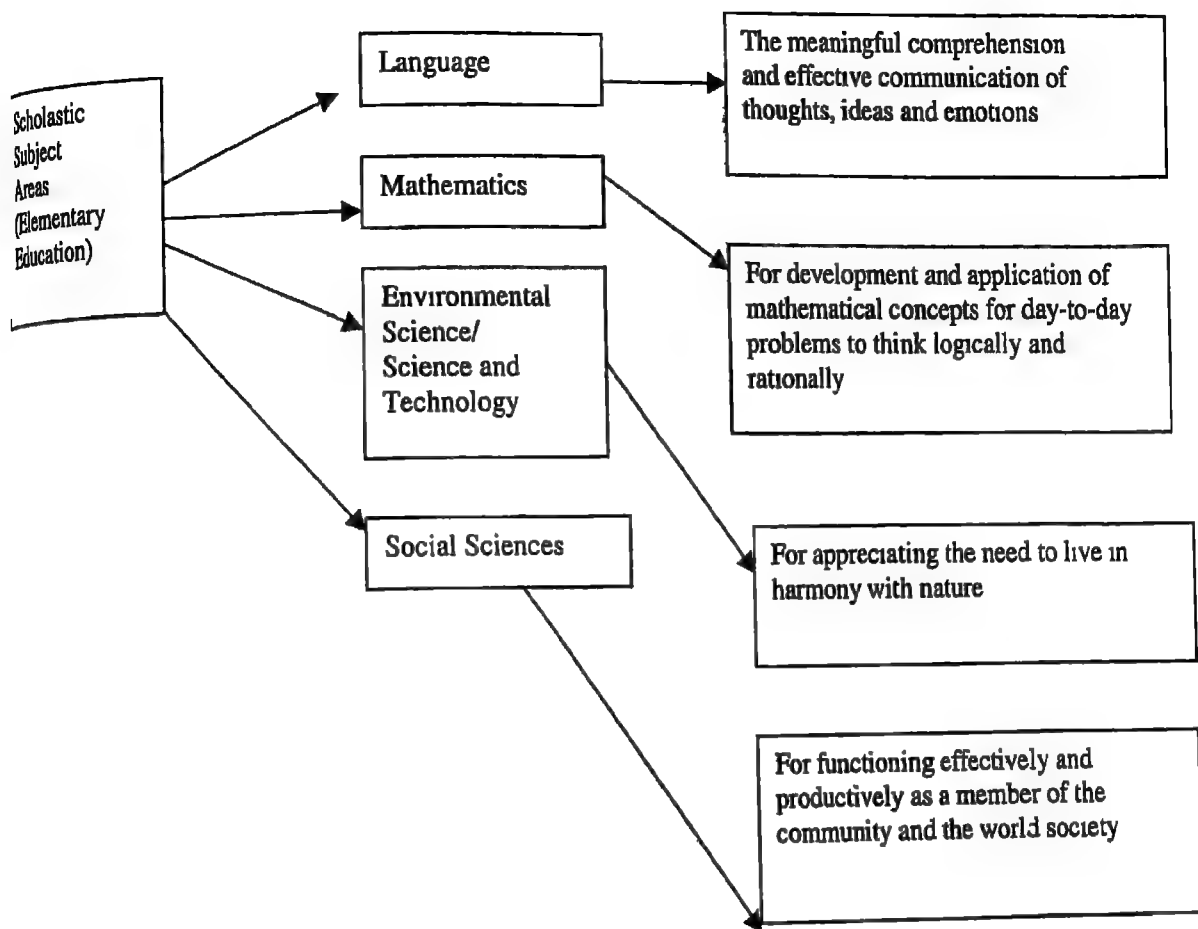
(NCFSE, 2000 – NCERT)
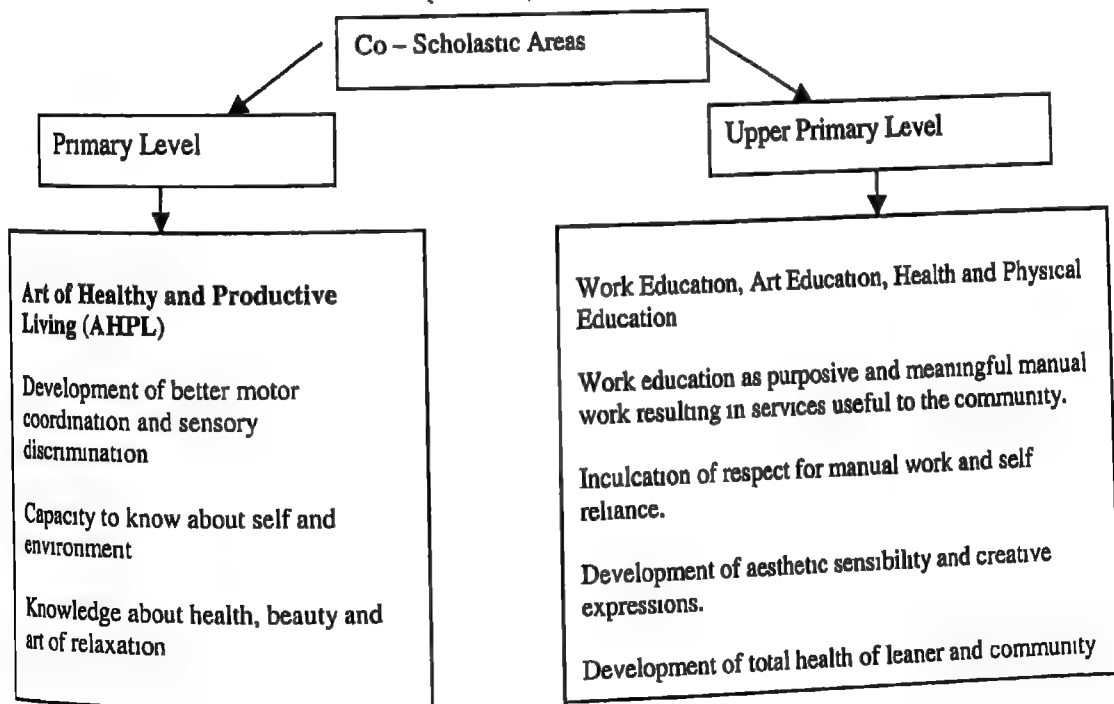
(NCF, NCERT, 2000)

The **education for life** approach would provide emphasis on transactional methodologies that would be sufficiently challenging to the various facets of the learners' personality; effectively catering to the left as well as the right domains of the human brain. Further, the approach would also need to attempt at developing what Howard Gardner terms as the seven types of intelligences **(Gardner, H. (1983)) Frame of Mind: The Theory of Multiple Intelligences).** Gardner proposed that all humans possess at least seven types of intelligence, each related to a specified area of the brain. His concept of intelligence consists of three components;

- The ability to create an effective product or offer a service that is valuable to one's culture.
- **A set of skills that enables an individual to solve problems encountered in life. I.Q. according to him was the capacity to solve problems and make things. It's the can-do part that counts.**
- The potential for finding or creating solutions for problems, which enables a person to acquire new knowledge.

MULTIPLE INTELLIGENCES

***Verbal – Linguistic** – ease in producing and using language*

***Matho-Logical** – ability to reason deductively and inductively (problem solving, reasoning and questioning skills)*

***Spatial:** ability to create visual – spatial representations of the world and transfer them mentally or concretely*

***Musical:** sensitivity to pitch, timbre, rhythm of sounds and responsiveness to emotional elements of these aspects of music*

***Bodily-kinesthetic**· using one's body to solve problems, make things and convey ideas and emotions*

***Inter-personal** ability to work effectively with other people and to understand them and recognize their goals, motivations and intentions.*

***Intra-personal** ability to understand one's own emotions, goals and intentions*

The Delors Commission Report (Report to UNESCO of the International Commission on Education for the twenty-first Century, 1996, Pairs) has also decried the formal system that emphasizes acquisition of knowledge to the detriment of other types of learning. The Report has called for education with a more encompassing vision - a vision that needs to guide reforms and policy, in relation to both contents and methods. The Commission has delineated the four pillars of learning.

(a) Learning to know
(b) Learning to do
(c) Learning to live together
(d) Learning to be

These may broadly be explained as follows:

Learning to know	**Learning to do**	**Learning to live together**	**Learning to be.**
• understanding • knowing and discovering • intellectual curiosity • critical faculty • independence of judgement	• dignity of human labour • application skills • aptitude for team work • development of life skills • ability to communicate and interact with others • ability to negotiate skillfully. • anticipation skills • extrapolation skills	• discovering others-an awareness of interdependence of humans • mutual cooperation, cultural commingling social cohesion etc.	• freedom of thought • development of ones talents • aesthetic , artistic, scientific, cultural and social expression • working towards a rich and creative personality

These skills identified however are merely illustrative and not exhaustive as any effort at quantification of life skills would be counter-productive. The major emphasis would be on identifying some **core skills** which would be subdivided into **specific skills** that would be subject specific and target group specific. It would also have a **time dimension**, being future oriented, equipping the child with skills to face the present and the future with comfort and ease.

The approach to **education for life** would have a dual emphasis, it would have a pronounced **practical bias** and would be **application oriented**. For this the **project based** transactional methodology would be a very appropriate strategy. The project based transactional methodology would attempt at teaching-learning that would have multiple levels;

a) Knowledge level
b) Comprehension level
c) Application level
d) Analysis level
e) Synthesis level

After this would come the most significant component of the **education for life** approach, and that is the **evaluation procedures.** As the teaching-learning strategy highlights **active learning**, based on **interactive, participative** and **activity oriented** procedures, the evaluation strategies would need to be accordingly modified. The traditional summative evaluation processes would need to be substantively changed. Formative evaluation combined with performance-based and norm-based evaluation tools would have to be developed. The **paper and pencil** kind of test would have to be combined with a significant portion of **project based assessment.** Observing a child at work and the providing grades would be a good strategy These grades could be aggregated with actual summative

evaluation and term-end examinations. Deficiencies in learning would need to be **effectively diagnosed** and appropriate **remediation strategies** devised.

A tentative table is presented containing subject areas, transactional methodologies and evaluation procedures:

(The list is illustrative and not exhaustive – a single competency for each subject has been elaborated upon)

Subject Areas and Competencies	**Teaching Learning Strategies**	**Evaluation Procedures**
Language: Communicating meaningfully in familiar and unfamiliar situations	Plays, debates, role play conversation, dialogues discussions in familiar and unfamiliar situations	Holistic skill evaluation of comprehension and effective communication in a meaningful language • Story telling, Picture reading, Comprehension of stories related orally, etc.
Environmental Studies (i) **Social Sciences** (ii) (Self government and participation)	Visible participation of children in school activities, mock public activities, leadership roles, etc. in a mock, simulated situation.	Observation of qualities of decision making, ability to perceive one's own interests as well as those of others, and contribute as a responsible member of the community
(iii) Science Natural Phenomena and Resources	Textbook teaching combined with outdoor, excursions, field visits, etc.	Through simple check list for observation, oral questions, practical activities and projects and role play based on the environment.

Mathematics Understanding geometrical shapes and their characteristics	Relate concepts to previous knowledge – 'half a chapatti', 'one fourth of an apple', etc. – concrete examples from the local context to explain abstractions.	Active involvement, through handling materials and shapes, comparing and looking for patterns. Evaluating concept formation through oral questions/ application skills related to the kitchen, the market, the playground, the bus or other familiar situations.
Art of Healthy and Productive Living (AHPL) To develop respect and dignity for manual labour and hard work	Keeping the classroom and surroundings clean – an activity to be carried out as a joint participative effort of the teacher and the children.	Organisation of group and individual activities and observation in the child of the capacity to imbibe values of respect of manual labour, tolerance humility and respect for peers

A holistic approach towards **education for life** would result in behavioural change in the learners to empower them to take positive actions towards self-protection, promotion of health and positive social relationships. These would enhance in them productivity, promote self-esteem, prepare them for the world of work, maintain good mental and physical health for joyous, stress free and happy living.

On the macro level, an early realization of the need to provide education that is relevant to life and local specific would have obviated larger detriments. "Had we realized the significance of acquainting children with the indigenous techniques of water resource management, traditional methods of preparing fertilizers, preserving food grains, utilizing herbs and ensuring cleanliness and developing a sense of attachment and responsibility towards people and the community, the picture would have been very different in every sphere of human development (Rajput, J.S. 2002: Quality Perceptions in School Education).

The time is perhaps now ripe to undertake a system of education which in the words of Dr. Zakir Hussain (Presidential address, All India Education Conference, 1952); "would strengthen the foundations of life, which would give the right direction to thought and action, which would harmonize life with laws of nature, which would offer morality to character and strength the personality".

References

1. Dave, R.H (ed) 1975. Reflections on Lifelong Education and the school, Hamburg, UNESCO
2. Guidelines and Syllabus for Primary Stage 2001, NCERT, New Delhi.
3. Guidelines and Syllabus for Upper Primary Stage 2001, NCERT, New Delhi.
4. Learning: The Treasure within, Report to UNESCO of the International Commission on Education for the 21st Century, 1996. Paris.
5. National Curriculum Framework for School Education, 2000, New Delhi, NCERT
6. Rajput, J S., 2002: Dimensions of Curriculum Change, New Delhi, NCERT.
7. Sarva Shiksha Abhiyan: Framework for Implementation, MHRD, Government of India, New Delhi.

(b) Basic Education of Gandhiji as a Preparation for Life "Education for life in the context of Sarva Shiksha Abhiyan (SSA)"

Dr. Ila Naik
Principal
Shikshan Mahavidyalaya
Gujarat Vidyapith
Ahmedabad - 380014

It has been a need of the day for providing education to children that is relevant to life. Universalization of Elementary Education through the Education for All (EFA) programme demands providing quality elementary education to all, relevant to life. Education relevant to life needs to equip children to face emerging challenges of survival, health and hygiene, globalization and awareness about their rights to education. It is planned and expected to achieve universalization of elementary education by 2010 in the national programme. Gandhiji gave to the world-community a vision for social awareness and cohesion, living together harmoniously without conflicts, and achieving equality, equity, peace and social justice. He perceived how such ideas could be put to practice. The universal declaration of human rights of the General Assembly of the United Nations (1948) states in the article 26: (1) Everyone has the right of education. Education shall be free and compulsory at least in the elementary stages. (2) Education shall be directed to all-round development of the human personality. (3) Parents have a prior right to choose the kind of education for their children.

Providing such relevant education for life is not al altogether new area. Efforts have been taken in the past for providing education for life skills rather than mere cognitive education. The Basic Education Programme (1937-61) was nothing but a life-skill approach to education. Basic Education involves education to equip the learner to face life through all round development of the body, mind and spirit, socially useful productive work culture and development of values and character -building.

Concept of Basic Education:
The educationists at the Wardha Education Conference discussed thoroughly the scheme of education put forth by Gandhiji and adopted the following resolutions:

- Free and compulsory education for seven years at the elementary stage must be provided on the national level.
- Education should be imparted through the mother tongue.
- The focal point of such education should be manual productive work in order to develop total capabilities.
- Basic Education is an education for life, and through life, through creative and socially useful productive work.
- Basic craft is an integral part of the productive work.
- Basic craft should be correlated to subject-content and social environment.
- All knowledge would be correlated to some activity, practical experience and environment
- Close integration would be effected between the school and the community with a view to fostering values of community living.
- Basic Education would not be regarded as being meant only for rural areas.

Lord Macaulay had introduced education of three 'R's (Reading, Writing and Arithmetic) with a view to governing India. Gandhiji put before the All India Educational Conference (Wardha - 1937) his new scheme of education of 3 'H's (Head, Hand and Heart) in place of three 'R's It contained basically new values of education, so it was known as ".

Gandhiji's Thoughts on Education:
Mahatma Gandhiji was a great revolutionary Rishi. He had contemplated about all aspects of entire life and reached his own conclusions. It was his originality that he tried out every idea in his own life and became sure of its relevance and then he applied the same idea on a wider scale. In this way he convinced all concerned of the wonderful potential of his idea to bring about social educational, economic and political revolution. It was his firm conviction that the national regeneration was possible only through new system of education. He was a vision of that system of education. He wanted to spread that system of education in India. On the other hand, he was making experiments of education in his Ashram on a small scale.

Value-education and Character-building
Gandhiji was convicted that all development without character building was meaningless, as if zeroes without one His aim was character-building in education and therefore he asserted this point frequently before the people.

Some quotations of Gandhiji
- The true occupation of man is to build his character.
- ..Our ancient school system is enough ..... character-building has the first place in it.
- All education must aim at building character.
- Even imparting knowledge should aim at character-building.
- Formation of character should have priority over knowledge of the alphabet. If this order is reversed the attempt would be like putting the cart before the horse and making it push the cart with its nose and would meet the same success as the latter course
- Education, character and religion should be regarded as convertible terms. There is no true education which does not tend to produce character and there is no true religion which does not determine character.

According to Socrates, knowledge which does not end up in virtue is meaningless. Education of character-building was given in the ashrams of the ancient rishis.

Method of character-building:
- A man becomes good or bad by his deeds, आचार: प्रथम: धर्म: A The price of action less thoughts comes to naught Hence good actions, good behaviour is fundamental to well-being of an individual as well as society.
- Simple living and high thinking is a way to acquire virtues. One has to consciously strive for than True education is that which develops internal virtues of man.
- That to do good to others and serve them is real education
- Gandhiji had valued importance of craft in education very high. True development of the intellect is not possible without vocational training.
- That education alone is of value which draws out the faculties of a student so as to enable him/her to solve properly the problems of life

Attainment of soul or salvation is one and the final goal of human life. सा विद्या या विमुक्तये Education is that which liberates. Thus the aim of education is spiritual development, and where this is achieved, the ability to make living is bound to follow.

Education through craft:
Good habits of doing every work necessary in life in a nice way should be inculcated through education. Efforts should be made to impart as much knowledge through craft as possible. Special care should be taken that correlating every subject with craft education does not become unnatural and artificial. Gandhiji, Gijubhai, Vinoba, etc. wrote number of articles in this regard.

After the implementation of Wardha scheme of education, the Bombay Government adopted the policy to convert all primary schools into basic schools and all training colleges into primary basic training colleagues. Gandhiji had put the scheme of basic education before the country in which subjects are to be taught in correlation with craft, community-life and chhatralay activities.

Craft-work or socially useful productive work (SUPW) is a process inseparably connected with life. It prepares children for life. The success of basic education depends on implementation of these principles. To live consistently in the community, to live industriously and to live a self-reliant life-all these form a foundation of art of living, which is basic education - a preparation for life. The teacher in basic education not only teaches various subjects to students but also moulds their lives

Special characteristics of Basic Education:

- Education for preparation of life is given through life, so the qualities of self-reliance are inculcated in children.
- Education is imparted in correlation with the society, nature and craft.
- Hand, heart and health are associated with head i.e. education of 4 H is imparted.
- Education is imparted in correlation with craft i.e. some sort of socially useful productive work (SUPW). In this respect Gandhiji warned: "I don't talk of Craft (udyog)-education, but I talk of Craft (udyog) in education. Udyog in education means: It makes minimum wastage. It is taught scientifically and not as drudgery. Udyog is not taught in vacuum. It is taught as a part of society. In buniyadi talim there is udyog upto the last stage. Old education is Job-oriented. Job means: less work· more money. Then how can poverty be eliminated? All things are produced by labour. Hence in udyog is the first priority.

Hence society and udyog should be connected in . This is correlation. Without correlation there can be no .
Knowledge that is attained through action becomes effective as it is proved by experience क्रियावान् स: पंडित: । उत् + योग त्रउद्योग The yoga - the work which rises the man is udyog (craft). Knowledge when got correlated with craft becomes science. ज्ञानम् विज्ञान सहितम् A because on correlating knowledge with action number of new and new correlations materialize The craft proves more efficient as compared to other educational media in arousing one's self-confidence by manifesting creativity in the child. There is a qualitative difference between activity and craft has given importance to craft and not to only activity. Moreover it has defined craft as socially useful productive work (SUPW). The activity or work in which these conditions are not fulfilled is not a craft in view of Craft may change according to place and time as SUPW.

Correlation is the breath of Nai Talim. Correlation must be in all subjects. The word alone is lame, the activity alone in inert. Establishment of relation between the two is correlation

Learning: the treasure within

Learning: the treasure within, an educational charter of the 21^{st} century is a commentary of Nai Talim itself.

Education for life means: education going beyond mere information and knowledge. Education for preparation of life aims at all-round development of the child including inculcation of values. Thus basic education prepares students to face challenges of life, as it is linked with life skills.

The Delor's Commission formulated four pillars of learning. (i) Learning to know. (ii) Learning to do (iii) Learning to live together and (iv) Learning to be. These pillars are nothing but the Basic Education terminology. It is not enough to supply the child early in life with a store of knowledge The child must be equipped to search learning opportunities throughout life, both to broaden knowledge, skills and attitudes to adapt to a changing, complex and inter-dependent world.

Basic education has been organized around four fundamental types of learning throughout life as stated by pillars of knowledge.

i Learning to know: acquiring knowledge.
ii. Learning to do: doing activities creatively
iii. Learning to live together: participating and co-operating with other people in human activities as community living.
iv. Learning to be. Essential progression proceeding from the previous three. Of course, all these four pillars form an integrated whole. In fact all this is nothing but a commentary of what Gandhiji said:

- "By education I mean an all-round drawing out of the best in child-body, mind and spirit.
- True education should aid development of manhood."

Gandhiji had advocated getting knowledge while doing things. True development of intellect is not possible without vocational training, i.e. the concept of education through vocational training.

Those who are required to live together, they learn to live together. By doing daily work together as community living, they develop the spirit of mutual co-operation, spirit of equality and spirit of mutual help.

This is the foundation of community life in the chhatralays. 'Learning to live together' is synonymous to community life in Nai Talim.

Gandhiji had said: "That education alone is of value which draws out the faculties of the child so as to enable him/her to solve properly the problems of life".

Gandhiji said, "I have given two-four things to the world, but the last and best of all of them is that of Nai Talim". Nai Talim achieves comprehensive development both of the person and the society together.

Nai Talim is the education of social transformation aiming at creating a new society based on equality and free from exploitation by ensuring educational, economic and social development, trailing behind and removing disparities in the society

Nai Talim institutions in Gujarat have lighted many lamps of knowledge in backward, tribal, remote and underdeveloped areas, have awakened a new consciousness in people led them on path of development and manifested a new life on them through various constructive activities These institutions have aroused an indomitable hunger, in the classes of society neglected since thousands of years - scheduled castes, scheduled tribes and other socio-economically backward classes and in women of each and every class for education development and improvement of their lives, thereby helping universalization of primary education and spread of education at all levels. This reveals a glimpse of social transformation through .

The fundamental aim of Nai Talim is 'Creation of a New Man - A new man in new age'. Nai Talim does not stop at the personality development. Its target is, "A New Social Order" - the name of which is Sarvodaya, Non-violent Society. tries to impart 'true education' through the media of craft, community-life and social service over and above the traditional education

Role of the Basic Education in the universalization of primary education

Primary education is a key to national development. Our constitution made it a guiding principle of state policy to provide free and compulsory education to all children upto age of 14.Primary education has been made a fundamental right.But a great obstacle in this work is scarce resources. As a solution to this very problem Gandhiji had put the scheme of basic education, before the country. Basic education has conceived this situation and provides a workable solution. The vision concretized in basic education will remain for years to come . Gandhiji called Buniyadi Talim as the greatest gift given by him India.

The contribution of ashramshalas (residential primary basic schools) in the universalization of primary education in villages and tribal areas is invaluable. There is no exaggeration in saying so they are a blessing for children of the backward classes in the development of education *Aadivasis* are backward in education as compared to non-*aadivasis*. They are not that motivated to get education. Hence ashramshalas where established in *aadivasis* areas to inculcate in them attitude for education . After independence in the year 1953- 54, schemes of ashramshalas was implemented. At that time eduction at the primary stage was being imparted in ashramshalas .

Thus in different districts of the Gujrat state the total no of ashramshalas for Scheduled Tribes, scheduled Castes, and Socially and educationally backward classes is 653 in which there are 427 ashramshalas for Scheduled Tribes, 84 ashramshalas for Scheduled Castes and 142 ashramshalas for Socially and Economically Backward Classes.

The Gujarat Sangh since its establishment in 1948 has been very active so that all the (Basic Education) institutions become best centres of . It started its work very effectively in the whole of Gujarat, as a result the Gujarat is the only State all over India, where work of basic education is going on very well; as compared to other States. The sangh helped to

develop at all stages education through craft, community life activity and programmes of social service. The sangh has prepared and published under the project: Study of the present status of institutions in Gujarat the following literature:

(I) Research (Survey) Reports·

i. Ashramshalas

ii Uttar Buniyadi and Uchchatar Uttar Buniyadi Vidyalayas

iii. Mahavidyalayas (Gramvidyapiths)

iv. Prathmik Buniyadi Adhyapan Mandirs (Primary Basic Training Colleges)

v. Gradiate's Basic Training Colleges (GBTCs)

(II) Success-stories of 25 Institutions.

(III) in Gujarat: Philosophy and development (History of)

All this served as reference material.

Wherever Basic Education () has been implemented with sincerity and dedication the results have been very commendable. The approach of basic education and its programmes in Gujarat have been praise-worthy and therefore it is required to tread that path with more commitment, dedication and consciousness. And all this will help not only in universalization of primary education but also in development and spread of education at all levels and thereby help in preparing children - the new generation for life.

(c) Curriculum Issues and Concerns for Education for Life

Prof. Onkar Singh Dewal
Retired Professor ,NCERT

Education is a process of human development and empowerment, a process that enlarges the boundaries of the self from self-centred ego to society to the universe, a process that raises the levels of consciousness from physical to emotional to vital to intellectual to spiritual. Ideally speaking it prepares a person to lead a full life of what UNESCO (1972) calls a *complete man* or what Carl Rogers calls *fully functional person* satisfying to oneself and beneficial to the society.

Prof K G Saiyidain (1962, p-5) sees education "as an activity which is concerned with the individual and with society or rather with the *individual in society*". Every system of education he says "must be judged by this criterion – does it foster the development of individuality and in that process manage to adjust the individual adequately to his growing social environment"? In this context the educative process is life centred, life long and life related To use Vivekananda's phrase education is for *"man making"* or to use the well known Gandhian phrase education is for *mind, body* and *spirit.*

Education, as a *system* is an orderly grouping of interdependent and interactive components linked together organically to achieve specific objectives. As a system, education encompasses components such as teachers, students, educational management, curriculum, teaching learning process, teaching materials and aids, monitoring, evaluation and subsequent feedback to review and revision different components. It is in this context that one may see curricular issues and their relationship with education for life.

Curricular issues *per se* relate to triple realities relating to social, educational and curricular. The curricular reality being the subset of the educational reality which in turn being the subset of the social reality.
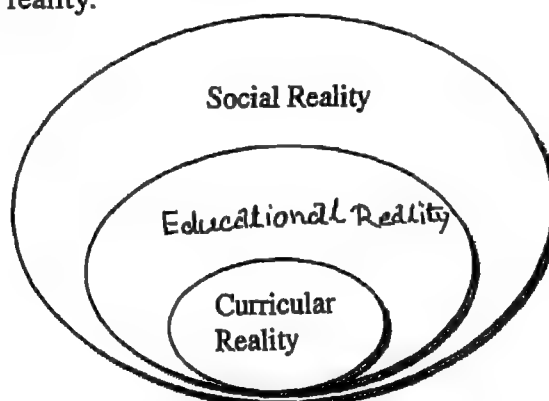
Social reality is a multidimensional entity. It is a function of cultural, political, economical, technological options. Boundaries of social reality also interact globally and thus global reality impinges on the nation's social reality. Social reality like an individual is never an island Thus the present global trends of unipolar world, technological world and distanceless world have implications for India's social reality.

For understanding intertwining of curricular issues and education for life, one has to look at the historical perspective. Formal education system in India began with Macaulay's Minutes of 1935 which had observed that Indian customs, tradition, languages and literature were awfully deficient and wanting. This was a very wrong and malicious estimation. Based on this (wrong) assumption the British founded the system of modern Indian Education in India The Minutes observed that "the dialects commonly spoken among natives of this part

of India contain neither literary nor scientific information and are so poor and rude that until they are enriched from some other quarters it will not be easy to translated any valuable work into them". The Minutes further observed, "We must at present do our best to form a class who may be interpretators between us and the millions whom we govern, a class of persons Indian in blood and colour but English in taste, in opinion, in minds and in intellect". It was this thinking that launched the modern education system in India which bereft it from its roots and severed its connections with life. Instead of education being "For Life" it was made to become an instrument that formed Indians in blood and colour but English in taste, in opinion, in mind, in intellect.

Before the beginning of the colonial rule the aim of education and aim of life were two sides of the same coin. As life needed truth, light and immorality education was to lead from falsehood to truth, from darkness to light, from death to immorality.

असतो मा सद्गमय
तमसो मा ज्योर्तिगमय
मृर्त्यो मा अमृतंगमय

Mere accumulation of wealth was never the objective of life मा गृध कस्य स्विदधनम्(ईश 1) Wealth by itself was never seen to true happiness and peace of mind न वितेन न वितेन तर्पणीयो मनुष्यो Education was seen for growth and development and self empowerment उधानं ते पुरषो नावयानम

Education and knowledge was considered as the real and everlasting ornament of a person. विधानाम नरस्य रूपमाधिकं (भृत हरि नीतिशतक) "Learned man" says Iqbal is one who has "few needs and high aims and goals." उसकी उम्मीदें कलील उसके मकसद जलील- The role of education he further observes "is to help to realise our potentialities. It should create and enhance our creative potential rather than imprison, crush and curb them." Iqbal says "Fettered and cramped life is like a little sluggish rivulet Free, it becomes the boundless ocean" बन्दगी में घट के रह जाती है एक जू-ए कमाब और आजादी में बहर-ए बकरन है जिन्दगी or what Upnisads say, knowledge is nectar of life. विधा अमृतं अश्नुते

The point that is being built up is that the British System made a breach between life and education; which was seen in ancient and medieval periods as one indivisible whole. Even during the colonial period many illustrious persons of the country dedicated themselves to rejuvenate educational processes and content. They saw the danger of the British education system and launched on any innovative ideas and experiments. Raja Ram Mohan Rai, Dayanand Sarasvati, Ishwarchand Vidyasagar, Tagore, Vivekananda, Sri Aurbindo, were to some name a few. Mahatma Gandhi and Dr. Zakir Hussain evolved the concept of basic education or Nai Taleem; that saw education as an inseparable entity of productive work, self empowerment and social life. Coordination in Nai Taleem was to be established not only between academic and vocational subjects but among different subjects, and topics between work and education, society and school, and between content of learning and nature. Thus the learner, the content of learning, the institution (School) the society and the nature were to develop among themselves interdependent links. The whole thing was an undivisible entity, a web of interconnectedness of strands where individual strand by itself has no meaning unless seen in relationship of the network

Nomenclature Nuances

Before we delve deeper into the interface of curriculum and education for life, we should make a clear distinction between *education for life* and *education for living and education for life skills.* Education for life should not be equated with education for living nor with life skills Education for living is only a subset of education for life. Education for living brings in the concept of work education, pre-vocational, vocationalization of education and

vocational education. It builds bridges between education and the world of work. Organised thoughtfully, vocational education, and work experience may help manual work to become an integral part of academic work also. This aspects, well visualized in Nai Taleem, seems to have been now relegates to the background. Mahatma Gandhi insisted that "work" and "thinking" should go together and to express that aspect he used a term "thinking fingers". This aspect later on caught attention of Paulo Freire (1970) and Donald Schon (1983) who developed and elaborated concepts like "action and reflection" and "reflection practioner" respectively.

Education for life also should not be seen as ***education for life skills***. Life skills are local specific, and are "temporal and spatial in nature" (NCFSE 2000, p-17). There are core life skills like problem solving, critical thinking, communication, coping with stress, decision-making, creative thinking and interpersonal relation, there are other life skills which are *instrumental*. Swimming may be an important life skill in villages of costal region. Camel riding may be another instrumental life skill in the desert areas of Rajasthan. Knowledge and awareness about AIDS, teenage pregnancy, drug addiction also constitutes life skills.

Life skills could be seen in the context of target groups like teacher, students, facilitators. Hurst (1983) has outlined five skills for adult educators (facilitators) relating to self confidence in oneself to handle any situation, effective communication, commitment, compromise, and creativity. Harris (1970 p-32) mentions probability estimation as one of the important life skill. It refers to capacity of an individual to infer and estimate what may happen. Life skills are also embedded in subjects, taught in elementary or secondary classes like active listening or reading between the lines in languages, or correct observation in sciences or empathy in social sciences. There are also skills which students must acquired, teachers must imbibe and skills which have universal application when skills get repeated over a long period of time, they develop commensurate attitudes which when becomes a part of life, part of personality, they get transformed into values. Fig 2 presents this idea in a graphic form

The first circle contains subject oriented skills and values. For example languages must help develop the value and skills of clarity, precision, force and rthym. Similarly, science and mathematics should develop brevithy, objectivity. The values of social cohesion national identity, and the rich cultural heritage may be weaved in while teaching social sciences. The core teachings in all languages and other subjects may highlight the importance of tolerance, peace, living together and striving for excellence.

The second circle presents (List is illustrative only) essential values that need to be developed in the learner, the student. If the institution designs its activities in such a way that students develop qualities and character of hard work, diligence, punctuality, self control, persistence, perseverance, cleanliness, regularity, self esteem, what better there can be education for life Ancient Indian Literature show a hard road to the student.

काक चेष्टा बकोध्यान
स्वान निद्रा तथैव च
स्वल्पहारी गृह त्यागी
छात्रस्य प च लक्षणम्

Similarly, teacher education, through inservice and preservice programmes should develop in teachers those skills, values and characteristics which will be beneficial for the overall teaching process. For example commitment, dedication to duty, impartiality, concern for the learner, resistance to commercialization, are true indicators of education for life for a teacher. He should continue to learn these skills through out life. The Upnisads says, we

should never abandon or postpone self learning and instruction (sharing one's thought with others) स्वाध्याय प्रवचनाभ्यां य न प्रमदितव्यम (तैति 1.11)
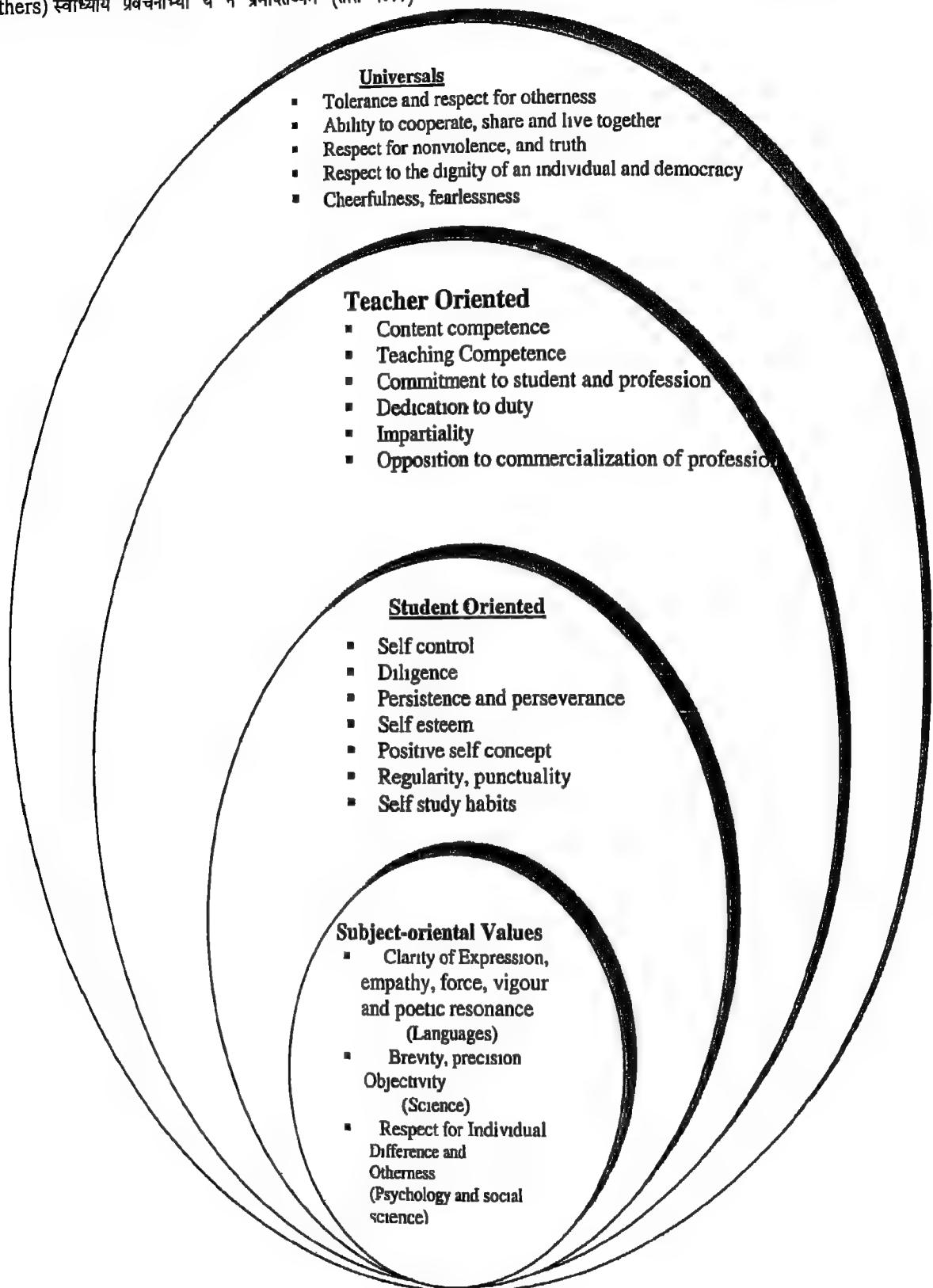
Fig 2
Concentric Circles of subject student, teacher and universal oriented skills, attitude and value systems

The term "education for life" is a very wide and comprehensive one. Its meaning and scope will depend upon the meaning we give to life. T. S. Eliot has seen it at various levels in the following lines

Where is the life we have lost in living
Where is the wisdom we have lost in knowledge
Where is the knowledge we have lost in information

(Choruses form the Rocks)

Those who believe in higher levels of consciousness may find the following advise of the Upnisads, a perfect case for education for life. "Tell the truth always follow the righteous path and never abandon self learning" It is an example of education for living outlined in Traitriya Upnisad.

सत्य वद धम स्वाध्यायानमा पमद : (1.11)

To fully understand Education for life one has to reflect at the philosophic level. We have to ask ourself what constitutes life Certainly life is a many-sided activity; it is an activity that is lived for self, and the society and it is to be lived here and now and also in future. It demands ability to reflect deeply and acquire knowledge (jyana) to do meaningful, purposeful, beneficial work (karma) and love your fellow being and the Highest Power (Bhakti) to live fearlessly (Abhaya) to abjure pride (adhambha) to live without wearing masks (arjavam) to engage in self study (svadhyaya) to have mercy (daya, karuna) to abjure violence (ahinsa) and to be truthful (Satya).

If we come down from this high pedestrian we may say that education for life would develop our awareness and knowledge about other issues like problem solving, decision making, productive use of time, increasing one's performance efficiency, rational thinking, coping with stress effective communication and pursuit for excellence. The list can be long and daunting. We may take two examples one relating to communication and other relating to open mindedness which, by all count, are important ingredient of education for life.

Communication

One of the important objectives of education for life is to help the student gain language competence. It requires a life time to gain language mastery; for language is a unique system that can make infinite uses of finite units to communicate information, concepts, principles and emotions With language competences one develops abilities to comprehend, to express, to negotiate. Creative expression is one of the higher level competency. One can feel the force of creativity and emotion in this well known couplet of Mirza Galib.

रगों में दौड़ने फिरने के हम नही कायल
जब ऑख ही से न टपका तो लहु क्या है

Sanskrit literature tells us not to indulge in meaningless, dry and hard worded talk. Look to the brevity of expression
शुक्ता रूक्षा पुरषा पाचो न ब्रयात ??
Major concern of education is to develop right language competencies. It takes years to develop a feeling for words; to create verbal images, to induce poetic resonance. If we look to following illustrations we would see how choice of words create everlasting impression.

I decline to accept the end of man because he has a spirit capable of compassion, sacrifice and endurance. It is poet's duty to remind him of his courage and honour and hope and pride and compassion and pity and sacrifice

(William Faulker)

I impeach him in the name of the Commons of great Britain whose national character he has dishonoured, I impeach him in the name of the people of India whose laws, rights and liberty he has subverted, whose properties he has destroyed whose country he has laid waste and desolate

(Edmund Burk)
Impeachment of Lord Harding

Four score and seven years ago our forefathers brought faith on this continent a new nation conceived in liberty and dedicated to the preposition that all men are created equal

(Abraham Lincoln)
Gettysburg speech

Friends and comrades, the light has gone out of our lives and there is darkness everywhere, our beloved leader, Bapu as we called him the Father of the Nation, is no more......... The light has gone out, I said and yet I was wrong for the light that shone in this country was no ordinary light.....

(Jawaharlal Nehru)
The above examples have been given to show how selection of words make everlasting impression. Communication is a multisided capability that encompasses abilities to speak clearly, distinctly forcefully and without harshness Communication includes ability to listen, and to understand the meaning of gestures, pauses and body language. And communication includes, reading (and reading between lines) and writing. Communication also includes articulating ideas, discussion, debating, and negotiating. Let us take another example.

Open Mindedness: Open mindedness is a frame of mind that makes one open to receive new ideas and open to correction. It has been said "He who never alters these opinions is like standing water and breeds reptiles of the mind." (W. Blake). To develop skills, attitude and values of open mindedness, educational curriculum will have to reengineer its transactional and evaluation strategies. It is an important component of scientific temper. Open mindedness believes that there is no such thing as finality. Sticking to one's own views even when the conceptual gaps have been identified is a mark of close mindedness. There would not be a better illustration than to quote Mahatma Gandhi what he wrote in Harijan (April 29 1933, p-2) " I would like to say to the diligent reader of my writings and to others who are interested in them that I am not at all concerned with appearing to be consistent. In my search after truth I have discarded many ideas and learnt many new things"

Curricular Concerns

Thoughtful efforts have been made over the years to concretize educational experiences making them relevant for life. Efforts done by Vivekananda, Tagore, Aurobindo and Mahatma Gandhi take education come closer to spirituality, nature and aesthetics (Tagore), selfless service and boldness of character (Vivekananda), cosmic and super consciousness (Sh. Aurobindo) and respect for manual labour, coordination and interrelationships between learner, work, content of learning and nature (Mahatma Gandhi). Let us take some examples. National Educational Policy (1986, 1992) emphasised that education for constitutional obligation, content essential to nurture national identity and India's common cultural heritage should become the common core as well as an essential part of education for life. NPE (1986) included equality of sex, protection of environment, removal of social barriers, observation for small family norms and inculcation of scientific temper as an essential education for life. Minimum levels of learning (NCERT 1991) lists nine areas,

which must become essential part of education for life. Non cognitive areas specified in MLL are; regularity and punctuality, cleanliness, industriousness, sense of duty and service, equality, cooperation, sense of responsibility, truthfulness and national identity.

National Curriculum Framework (1988, p-34) mention affection, kindness, sympathy, politeness, emotional control, emotional stability as some of the characteristics which must be developed both in the students and the teachers. NCF (2000) mentions social cohesion, national identity and preserving cultural heritage most important areas of education for life. Education in the 21st Century must also equip the learner to meet challenges of information and communication technology, and impact of globalization. The education system should make every effort to build interface between conceptual intelligence, thinking and emotional intelligence. Developing emotional poise has been considered as one of the important feature for achieving overall success. Many researchers have shown that success in business depends as much as on IQ as on EQ (Emotional quotient). The well known word *Sthitya Pragya f°lÉiÉ |ÉYÉ* has great significance for achieving equipoise, balance, tranquility and emotional stability.

UNESCO and Education for Life

Jomtien Declaration (1990) gave an extended concept of basic education and also widened the target group to include child, youth and adult. The extended concept of basic education included learning tools such as literacy, oral expression, numeracy and problem, solving. Content included knowledge, skills, values and attitudes. The focus is to impart education for life so as to help learners to develop their full capacity to live and work in dignity, to participate fully in national and international development, to improve quality of their life, to make informed decision fo/kksRiu foosdu lnSo L;kr lqfu;Z.k and to continue learning.

UNESCO (1972, 1990, 1996), UNESCO (1996) identified a forth pillar of learning and stressed that education must promote skills, attributes and values that initiate and strengthen living together. The expanded vision of basic education (EFA Jometein Declaration) relate to pre primary education, primary education, adult literacy. The essential skills include knowledge skills and attitudes, which are needed in everyday life relating to work and quality of life. The basic learning skills help learners to raise their awareness and knowledge of rights and duties. For example education would include life skills needed for better health, childcare, nutrition. The life skills have to be learned in the school as well as outside the school. Life skills are to be promoted by teachers as well as media, newspapers, magazines, and social activities, libraries and museums. Every opportunity may be used to ensure environmental protection, and repel health hazards.

Peiris (1996, p 311-316) mentions anticipation, exploration, and participation as main life skills. Anticipation would demand observation and analysis of the situation. It also demands readiness for future contingencies. Anticipation is a life skills demanding comprehension not only of the parts of the whole but how the parts interact and how they get combined. Similarly exploration demands imaginative adjustment. It also demands creativity and flexibility. Participation has implications of give and take; agreement and disagreement. Participation also builds linkages, network and collaboration.

Education Commission (1964-66) saw education as a task for national development. In that context developing one's own competences and levels of performance ensure national development. Productivity is an important measure to alleviate poverty. In a sense education must alleviate poverty. Poverty can be seen at various levels. In a thought provoking article

(Wagle 2002) poverty has been shown to have three reference points; one relates to economy, that includes income and consumption, the second relates to an individual's capacities in terms of education, and health and the third relates to social exclusion, which results into exclusion, isolation, alienation and a sense of aloofness and loneliness. Educational efforts should be directed to help eliminate poverty of all the three categories referred to above. That means education should be work oriented and vocational in character to help an individual to increase his income and thereby help him live a comfortable life overcoming deficiencies of health and malnutrition. Education programmes should also develop such – skills that will make an individual build his capacities. Learning to learn is one skill that helps in developing one's capacity building putting in hard and sustained work is another attitude that helps an individual to increase one's own innate capacities. Pursuit for excellence is still another one. Education should also help an individual to overcome his sense of exclusion, aloofness, alienation UNESCO (1996, p-57) brings out the point that education should not contribute to social exclusion.

Thus, education for life must be such that would help an individual to enhance his income. Education should be such that develops those skills which empowers an individual; skills to learn, to manage time, to manage tensions, to increase performance output, to live together and work in a teams. Similarly, education for life must promote inclusion and remove exclusion.

Designing a Matrix for Education for Life

Education for life should be understood on 4 by 4 matrix that relate to aspects of life (i.e. relationship with self, relationship with society, relationship with nature and relationship with work), with aspects of education (physical, intellectual, emotional and spiritual.) Some examples have been provided under each cell which are suggestive and many more could be designed and these could be modified: Aspect of life, as I conceive, have four parts, the self, the society, the nature and work. The self pertains to one's relationship with oneself; how one sees oneself. Self can be seen at the physical level, it can be seen at the intellectual level, which would mean cognitive and academic aspect it could be seen at the emotional level and finally at the spiritual level. Similarly life can be seen in relation to society that is one's relationship with society which will extend from the family to the community, to the nation, to the universe. Similarly life can be seen in relation to physical nature and also in relation to work in which one is engaged. These aspects of life relating to society nature and work again has to be related to physical, intellectual, emotional and spiritual aspects.

Education for life, to put it briefly, should lead to enrichment, and empowerment of life as a whole which has physical, intellectual emotional and spiritual aspects. Education of physical aspect relate to health, game and sport, yogic and anaerobic exercises. It should build disease free body healthy, strong, supple, and plastic. In four words Pantanjali puts the essence of health education

रूप लावण्य बल वज सहननत्वामि

The intellectual side is to be developed by critical thinking, lateral and divergent thinking, rigors of intellectual analysis, deep level learning and cultivation of higher cognitive abilities. These should form part of the elementary school curriculum in some form, and flower fully in higher education.

The emotional education should make a person sensitive to others pain one should become clam and balanced and equipoised emotionally stable It is said that the greatest good is to given pleasure to others and greatest sin is to give pain to others. If someone can

learn this lesson, what better could be the example for Education for Life. Curriculum can take these aspects of education by co curricular activities, camps, social service and scouting.

The spiritual side of education should lift a person from the levels of materialism to the level of spirit. If one believes that there is some higher power that informs this universe, that the Power is all merciful and kind, one, eternal and unending, he would see the meaninglessness of hording, the hollowness of affluence, competition and violence.

Aspect of Education / Aspect of Life	Physical	Intellectual	Emotional	Spiritual
Self	Healthy Individual	Reflection मनन चिन्तन	Balanced Individual	तप, त्याग, स्थितप्रज्ञ
Society	Social relations and Social Hygiene	Individual as a social being	Learning to live together वसुधैव कुटुम्बकम्	[illegible] to see others in you and you in others
Nature	Preserving and conservation	Aesthetics (Seeing beauty in nature)	Environment sensitivity and love for nature (Tagore)	The concept of Mother Nature (ancient Indian view)
Work	Income Generation	Action with reflection and Pursuit for excellence	Sense of Satisfaction and joy in work	[illegible] as the means of moksa (Gita, Gandhi)

Education for life, to conclude, should stress the following things

- It should emphasize skills of learning rather than give prominence to examining of information.

- Bring out dangers that due to digital divide and globalization. People may get uprooted from their indigenous knowledge. It is therefore, necessary that people keep to their roots and remain connected with local and tacit knowledge.

- It should not overlook the importance of environment and its role in supporting human society Sustainable development and environmental sensitivity becomes important components of education for life.

- Learning to live together is an important pillar of education This includes tendency to discover good things in others and to respect otherness and to appreciate differences.

- It should promote diversity to encounter others through dialogue and debate and not through violence. In other words to manage and resolve conflicts peacefully.

- To understand one's culture one's religion, one's tradition in the light of new context and new concerns

To end, let us conclude with Delors (1996, p51) that provides significant pointers for education for life.

> *We must be guided by the Utopian aim of steering the world towards greater mutual understanding and great sense of responsibility and greater solidarity through acceptance of our spiritual and cultural differences. Education by providing knowledge for all has precisely this universal task of helping people to understand the world and to understand others.*

Value education therefore becomes the one single most important component of education for life Without values there is no life and without values there is no education. In the Indian way of life, as NPE (1986) observed human being is a positive asset and a precious national resource and education has an acculturing role. Every country develops its system of education to express and promote its unique socio-cultural identity and also to meet the challenges of times. It (Education) refines sensitivities and perception that contribute to national cohesion, scientific temper and independence of mind and spirit. One cannot but end with the Jomtien Conference (1990) expression; which is the focal point of education for life.

Basic learning will empower individuals in any society and empower them a responsibility to respect and build upon their collective culture, linguistic and spiritual heritage to promote the education for others, to further the cause of social justice, to achieve environment protection, to be tolerant towards social, political and religious systems which differ from their own, ensuring that commonly excepted humanistic values and human rights are upheld and to work for international peace and solidarity in an interdependent world (Article 1 Meeting Basic Learning Needs).

Our measured steps must move in that direction of promoting basic learning.

<u>*References*</u>

- (The) Dalai Lama (2001) *The way to Freedom*, New Delhi Harper Collins Pub India Ninth impression (p 156-181)
- Friere Paulo (1970) *Pedagogy of the Oppressed* New York, Continuum
- Goleman D. (1996) *Emotional Intelligence*, New York: Bantam Books
- Government of India (1986) *National Policy on Education* New Delhi Ministry of Human Resource Development
- Harris, T. A. (1970) *I am OK you are OK*, London, Pan Books
- Harsh E M (1983) "Essential skills for facilitators" *Community Educational Journal* 10(4) July 1983 p-25
- NCERT (1988) *National Curriculum for Elementary and Secondary Education: A Framework*, New Delhi

- NCERT (1991) *Minimal levels of learning at primary stage*, New Delhi
- NCERT (2000) *National Curriculum Framework for School Education*, New Delhi, NCERT
- Peiris, K. (1996) "*Lifelong learning for the development of life skills*", UNESCO PROAP (1996) Partnership in Teacher Development in a New Asia, Bangkok UNESCO
- Saiyidain K G. (1938) *Iqbal's Educational Philosophy*, Revised by Dr. (Mrs.) Syeda Saiyidain Hameed, New Delhi, NCERT (1988)
- Saiyidain K. G. (1962) *Problems of Educations Reconstruction*, New Delhi, Asia Pub. House, third Edition
- Schon, Donald A, (1983) *The Reflective Practioner: How Professional Think in Action*, London, Temple Smith
- UNESCO (1972) *Learning To Be*, Paris UNESCO
- UNESCO (1990) *World Declaration for Education for All: Inter Agency Commission*, Paris UNESCO
- UNESCO (1996) *Learning: The Treasure Within Report of the international Commission on education for the 21st Century*, Paris, UNESCO
- Wagle Udaya (2002) "Rethinking Poverty: Definition and Measurement" *International Social Science Journal*, March 2002, UNESCO, Black well publishing (p155-165)

(d) EDUCATION FOR LIFE FOR CHILDREN OF SPECIAL GROUPS IN THE CONTEXT OF SARVA SHIKSHA ABHIYAN

Prof. N.K.AMBASHT
Chairman, NIOS
&
Prof. NEERJA SHUKLA
Head, DEGSN,NCERT

"All children must have the opportunity to fulfill their rights to quality education in schools or alternative programmes at whatever level of education is considered "basic".

The Dakar Framework of Action,
UNESCO, 2000, p 15

INTRODUCTION

Education for life is a very comprehensive and all embracing term, because all education is for life. It can mean education that prepares one for coping with the challenges of life. It can denote education for survival. It can mean equipping one to live peacefully with others, with environments- both social and physical, and so on. And yet it may mean all these at the same time. In a broad sense education is simultaneously all of the above.

Govt. of India (1993:49) while discussing Education for life, makes a very broad statement: " If education is to reach the poorest of poor children, and then it will have to be made relevant to their contexts A standardized format cannot meet the varied needs of one and all."

Sinha (2002: 6) in her background paper, delimits the scope of education for life to yet another dimension when she tries to define education for life skills as "imparting those skills that help the children to translate knowledge, attitude and values into actual abilities to know *what to do, when to do* and *how to do* in real life situations". She has supposed that the child has already acquired 'the knowledge', ' the attitude' and ' the values' and the skill required of her to translate these into practice at an appropriate time, in an appropriate manner. Therefore, according to her, the education for life skills is a sub set of the macro term 'education'. The National Curriculum Framework for School Education (NCERT:2000 :17) views the purpose of education thus, when it says, "Education ideally must prepare students to face the challenges of life. For this it needs to be intimately linked with different life skills, the abilities for adaptive and positive behaviour that enable individuals to deal effectively with the demands and challenges of everyday life, by developing in them generic skills related to a wide variety of areas such as health and social needs". Education for life is, therefore, more comprehensive. It does not relate only to skills. It is more comprehensive, embraces skills and yet extends much beyond it. It modifies not only the actions but the very thought processes, behaviour- both internalized and overt- and inculcates values that guide or determine the actions or behaviour patterns.

The United Nations General Assembly Session, held in New York in May 2002, in which India played a very substantial role, accepted many fresh qualitative and quantitative goals

for children for the present decade relating to survival, health and nutrition, early childhood care and education, and child protection. The significant outcome,
which impinge on the education for life, and which are the direct result of India's strong advocacy were:

- Strong text on strengthening of the family and inclusion of ethical values for the development of children, (the concept of 'religious and ethical values' was incorporated)
- Inclusion of quantified goals for health and nutrition, and balance the Rights approach with the Development approach.
- Acceptance of differentiated phases of childhood, distinguishing between childhood and adolescence,

Thus it will be clear that the major concern of education for life is being rightly emphasized as value based education. Whatever education and for whichever education we envisage, values cannot be overlooked. But a fair discussion on this issue will require another paper. Suffice it to say that when we talk of education of the children of special groups we have to consider the matter with *empathy and not sympathy.*

WHAT IS *SARVA SHIKSHA ABHIYAN?*

The worldwide picture of primary schools is very encouraging. During the last decade i.e., since 1990 there has been substantial increase in the number of girls in the schools. Various countries through their sincere efforts have conquered the negative repercussions of economic constraints and continued growth in the population. The end result is that developing countries as a whole have over 20% enrolment in the schools. The dropout and stagnation rates have declined and there has been a noticeable improvement in the quality of education. However, these quantitative achievements do not necessarily talk about the diversified population primarily consisting of special groups as their special learning needs are neither met in a common classroom, nor attention is paid to empower them to overcome these difficulties by providing context- specific or context-free learning environment. The importance of local language or the mother tongue for initial learning and the major impact of family, community and the society on the child and their learning are very crucial. One of the key challenges before the system is to take into account the needs of the poor and the most disadvantaged, including children with impairments, working children, remote rural dwellers and nomads, ethnic and linguistic minorities and children belonging to socially disadvantaged groups.

The Constitution of India (26 November, 1949) states clearly in the Preamble that everyone has the right to equality of status and of opportunity. The Directive Principles of the State Policy further states in Article 41 the right to work, to education and to public assistance in certain cases including disablement. Article 45 of the Constitution lays down that free, compulsory and Universal Primary Education should be provided to all children up to 14 years of age. Article 46 of the Constitution commits the State to promote educational and economic interests of Scheduled Castes, Scheduled Tribes and other weaker sections All these Articles and their implementation aim at providing quality education to all including various disadvantaged groups.

The Constitution of India directs State actions very comprehensively in matters of child welfare and development. It relates to children when it addresses the issues of equality, protection against discrimination; liberty; prohibition of trafficking of human beings and forced labour; prohibition of employment of children below the age of 14 years in factories,

mines or any other hazardous occupation, freedom of conscience, freedom to profess, practice and propagate any religion. It directs the State to ensure that the health of men and women and that the tender age of children are not abused. The Directive Principles of State Policy, under Art. 45, directs the State to endeavour to provide for free and compulsory education for all children until they complete the age of 14, besides directing further under Art. 47 that the level of nutrition and standard of living be raised and public health improved.

The concern and efforts to provide education to all children up to the age of 14 has been a constant effort of the Government of India. The *Sarva Shiksha Abhiyan*, meaning the Campaign for Education for All is a further effort in this direction with renewed vigour.

The proposed 93rd Constitutional Amendment for providing free and compulsory education as a right is manifestation of its resolve. As far as children are concerned there are number of Acts which provide them protection of various kinds. To mention a few; The Factories Act 1948; The Child Labour (Prohibition and Regulation) Act 1986; Juvenile Justice (Care and Protection of Children) Act, 2000; The Infant Milk Substitutes, Feeding Bottles and Infant Foods (Regulation of Production, Supply and Distribution) Act 1992; The Child Marriage Restraint Act, 1929; The Immoral Traffic (Prevention) Act 1986; **The Persons with Disabilities (Equal Opportunities, Protection of Rights and Full Participation) Act 1995,** etc. The above enumeration will amply demonstrate that there is a clear vision and effort to address the problem of education for life comprehensively and extensively. The specific objectives of the *Sarva Shiksha Abhiyan* are:

- All children in school, Education Guarantee Centre, Alternate School, 'back-to-school' camp by 2003.
- All children complete five years of schooling by 2007
- All children complete eight years of schooling by 2010
- Focus on elementary education of satisfactory quality
- Bridge all gender and social category gaps at primary stage by 2007 and elementary stage by 2010
- Universal retention by 2010

The Policy

The National Policy on Education (NPE)1986 envisaged a National System of Education with emphasis on Universalization of Elementary Education. The concept of National System of Education implies that, up to a given level all students irrespective of caste, creed, location or sex, have access to education of comparable quality. The Policy framework outlines the Government's commitment to the provision of educational opportunities for children with specific needs who have been marginalized. National Curriculum Framework for School Education is a step in this direction. National Policy on Education (1986 & 92) has not only recognized the importance of providing quality education to marginalized groups through child centered pedagogy and curriculum restructuring but has also laid emphasis upon equity, empowerment, empathy and respect to all cultures which are essential components of a cohesive society. Equity, empowerment and empathy are key concepts for the educational development of marginalized groups such as children with special educational needs, and children from the Scheduled Castes, Scheduled Tribes, other Backward Classes and Minorities. A society based on discrimination and segregation can never ensure healthy living and healthy co-existence.

The special educational needs of marginalized groups manifest in a number of ways during the learning process and ultimately lead to poor retention and achievement. The

learners may be 'dropouts' or rejected by the education system. Their special educational needs may be just transitory if addressed on time by sensitive educators. They may also culminate into an 'educational deficit' if left unattended. Therefore, the National Curriculum Framework for School Education (NCFSE) has clearly emphasized upon "importance of individualizing instructions for all learners with special needs". One has to ensure that the curriculum planning interrelates "the facets of classroom services, special support services and personnel and co curricular activities in creating a new and vital programme which will facilitate curricular integration in its most specific situations" (NCFSE, p.10). Individualized pedagogy, promoting "self motivated, self-actualizing and self-monitored learning" and provision of "direct learning experiences" in setting of a 'inclusive school' to those who have been deprived of such experiences, are important facilitators for inclusion of children in the mainstream. Personalized pedagogy, careful investigations into individual aptitudes are salient features of the efforts made to develop a healthy environment in the school and in the society and to provide meaningful and useful education to all. Segregation or isolation is neither good for learners with impairments or for other learners. Societal requirement is that learners with special needs should be educated along with other learners in "inclusive schools", which are cost effective and have sound pedagogical practices.

DEFINING SPECIAL EDUCATIONAL NEEDS

Special Educational Needs (SEN) have been defined by many experts and also by different governments across the world. Lynch (1994) has classified children with special needs in the following groups:

1. Children who are currently enrolled in primary schools, but for various reasons do not progress adequately.
2. Children who are currently not enrolling in primary school but who could be enrolled if schools were more responsive.
3. The relatively smaller group of children with severe physical, mental or multiple impairments who have complex SEN that are not met.

SEN in the children may exist from earliest childhood and may not make their appearance till later date The parents of the child with SEN may not be aware about the existence of these needs till these manifest themselves in a classroom situation. Similarly, a teacher may not realize that s/he may have to pay a little more attention to a particular child because of her/his SEN. Sometimes, if the parents are observant and knowledgeable, they may predict the existence of these needs, as the child grows older. Every child has a fundamental right to education and every child is unique in terms of characteristic interests, abilities and learning needs. A sensitive teacher can bring out the best in the child. Just placing the children with SEN in the classroom is not enough. Their SEN must have access to regular schools, which should accommodate them by giving individual attention to meet their SEN. These children should have regular social interaction with other students during play or other activities.

Sometimes it is easy to identify special educational needs as in the case of children with visible disabilities. Sometimes these learning needs may emerge from the nature of the curriculum, school organizations, teachers' ability and readiness to respond to the diversity of level of understanding, experiences and learning styles of children in the classroom. These can be identified only if teachers in the classroom have a climate of close interaction with

their pupils. These can also be identified if students are free to voice their learning difficulties to the teacher without any fear. This also requires teachers to use whatever resources they have in the form of others around them like colleagues and pupils as they reflect on the difficulties. The teachers may be required to meet the parents of the children who may be having some difficulties in learning or even go to external support agencies run by NGOs or the government. "All young people and adults must be given the opportunity to gain the knowledge and develop their capacities to work, to participate fully in their society, to take control of their own lives and to continue learning" (The Dakar Framework of Action, 2000, p. 16).

THE MAGNITUDE

If we look at the child population of the country, according to the latest figures(GOI: 2OO2 : 3), the total number of children in the age group 5-9 years is 111,294,732 and in 10-14 years it is 98,691,898, which make a total of 209,986,630. The no. of children in the age group 6-14 and enrolled in schools (1999-2000) are 155,677,737. They are being served by 641,695 primary schools and 198,004 middle schools. We may, if we like, assume that all the High Schools also have primary and middle sections. In that case the number of High Schools could also be added to the list, which are116,820. Thus 956,519 schools are serving 155,677,737 population. The out of school population in the relevant age group is 209,986,630 – 155,677,737 = 54,308,893. In order to cater to them, with the present rate of school capacity we shall need 333,183 schools with all the necessary infrastructure and teachers. This is possible only through additional support of alternative schooling, open learning system, support of the NGOs etc. ***Sarva Shiksha Abhiyan*** takes into account all these avenues for achieving Education For All (EFA).(GOI: 2002 : 5)

WHO ARE THE CHILDREN OF SPECIAL GROUPS?

For the purpose of this paper, the children of special groups can be described as those who have been disadvantaged in matters of education for basically two reasons:

* Social handicap (whether by discrimination, lack of opportunity, access, tradition, or taboo or the like)
* Physical delimitation, (whether partial disability, total impairment of one or more faculty)

Among those who are socially disadvantaged may be listed are the girls, Scheduled Castes, Scheduled Tribes, child labour, children in urban slums, street children, working in the unorganized sectors of work and who are not able to attend the regular school when it meets. Each of these categories has one or more unique problem. For instance the tribal communities have unique educational problems emanating out of their culture, their habitat, their tradition- about which lot has been written- which require unique solutions. (See *Ambasht: 2001).* In the case of the Scheduled Caste it is more of social injustice, deprivation etc. Similarly other factors like access, economic deprivations etc are the causative factors either singly or compounded. The same is true in case of children of various categories noted above, although with different dimension and also calling for the Application of Child Labour Act 1986, referred to above

Among the group with physical delimitation are the children who may be suffering from one or more physical impairment. They may, very often, have different abilities than those we address in the schools. Some people may call them differently able children, some handicapped children and some impaired children. It is sometimes felt that the normal school education is at times not suited to the children of single or multiple impairment(s). Special

Schools for the blind, deaf and dumb are the manifestation of such a perception. This however has been superceded by the general agreement manifest through the protocol signed in Salamanca where it has been recognized that such segregation does more harm than good and the concept of inclusive schooling has gained ground. The PDA Act 1995, mentioned above, does recognize this fact and makes it mandatory that the children with impairments do study with the general children. It provides for certain proactive provisions in it's Chapter 5, when it specifically deals with the statutory obligations of the school, of the educational administrators and of the system.

It may be pertinent to note that there is manifest difference between what we are teaching in the school in the name of education and education for life. It becomes more evident in case of the children of the disability groups. We define **education for life** as ***"education that makes the learner a socially useful productive citizen of the society"***. In the light of above we have to recognize the potential of each individual child and examine how the education that we envisage under the Sarva Shiksha Abhiyan with the mechanism that we envisage is going to realize, in the words of Prime Minister Vajpaayee (2002), that *"Children are the greatest assets of our nation Investing in them means investing in a better future for our country, for the world* Let us resolve to fight, with renewed vigour the problems of illiteracy, hunger, disease and exploitation that many children have to contend with in our cities and villages. *Children have right to better life, to happiness and sense of security.* Let us do everything to ensure that *every child in every part of the country* enjoys this right." (emphasis ours)

CHALLANGES

Education for life refers to special efforts to meet the educational requirements and needs of children from disadvantaged groups viz. Life skills, curriculum and the context, transactional modalities and the concepts. To make education relevant to children from disadvantaged groups, it would be worthwhile to identify the constraints vis-à-vis these areas and develop modalities to address the whole system to resolve them.

The problems are diverse and complex. If inclusion is to be effected, then, all teachers, whether in the regular schools or in the EGS or Alternative School or NFE Centres will have to be fully trained in handling the children of single or multiple impairment along with the normal children. Logistical problems are varied and it is high time that *Sarva Shiksha Abhiyan,* not only takes note of it, but also makes serious efforts to cover this sector of children. In this connection Open Learning methodologies can be handy on two fronts; Preparing the teaching community to handle this problem and using its advantages of flexibility in curriculum and approach to cover such children.

1. **Life Skills**

   - This can be viewed in two perspectives. One is survival skill and the other is competitive skill. While it may be essential to emphasize survival skills in our educative process, over stress on competitive skills may lead to undesirable personality traits In case of the impaired or differently able children, this aspect assumes a different perspective. The ability that such a child could possess may not be the parameter of our measuring the achievement. The survival skills that need to be nurtured very often is not the area of stress or consideration, which our education recognizes.
   - Skills needed for socialization and adaptability to the new situation are basically empathy related. It is more a question of developing a positive attitude towards such children as equals. The teacher has to be equipped with such capacity, at the same time she should be endowed with the capacity to

inculcate an attitude of equality among all the children irrespective of the impairment.

- This would further raise the question of values. The culture laden words and phrases, at times, may be offensive to other's sensitivities. Further, culture specific values and universal values have to be delineated and reviewed in the context of each other

2. The Curriculum and the Content

- Making curriculum accessible is another major problem when inclusive schooling is being sought. The curriculum writers are often conditioned to normal children's context as a mindset while determining the content or exercises. The skills of adjustment to differential needs are often missing in the curriculum planners and lesson writers. The paper setters are seldom concerned with this. This is the reason that there is a strong demand that the examinations of various Boards of Examination must provide this kind of differential needs in questions and in examination processes.
- Centralization of material development is a barrier in learning among the children with special needs of both the categories of children mentioned above. Decentralization not only helps but also is essential in order to be effective and relevant. As of now the trend is towards centralized material development in spite of all theoretical arguments contrary to it. The convenience of the educational administrators and thinkers prevails upon all logic. The trend needs to be reversed.
- The material has to be highly illustrative at whatever cost. The communicability of the material should not be compromised for want of cost.
- Use of culture specific information is essential to increase the 'understanding-factor' of the learning material. Unless it is related to the experiences of the learner, its communicability is adversely affected. Hence, once again, the need for decentralized material development is desirable.
- Adapting the evaluation system, as mentioned above is highly imperative. It needs to be undertaken as an urgent and immediate action. Although some Boards like the CBSE and NIOS have made a beginning, there is still scope for more positive action in this regard.

3. Transactional Modalities

- Making teaching contextual is one of the essential attribute that the teacher has to be specially adept in. Although it is a necessity for all teaching learning processes, the degree of its importance increases particularly with the SEN children. Identification of life experiences and integrating them with transaction is a special skill that needs to be built into the teacher preparation programme with specific needs of SEN children This has to be focused on the ecological environment of the child.
- Community involvement and participation is extremely important for SEN children The community needs to be made aware of the attendant problems for two reasons-one preventive and, two, proactive. School community relations are of paramount importance. In case Scheduled Caste/Tribe/Girls education there is different kind of problems with the community that is apathy, whereas with differently children there is total lack of information. The school has to mount programmes accordingly.

- Attitudinal shift in teachers and teacher educators is a foremost necessity on which the entire premises of this paper rests. As stated earlier, in the context of the *Sarva Shiksha Abhiyan*, it becomes all the more relevant as the teaching community in this universe is very diverse. We have already made this point earlier but it is worth reminding even at the cost of repetition.
- Use of local resources, materials and traditional knowledge and folk literature would be an added advantage in various ways in making the educational process learner friendly and, therefore, more effective and acceptable.
- Language issues particularly, in the case of the tribal communities, are very important. Lot has been written on this issue (Ambasht *Op Cit*) and the National Policy of Education has very strongly advocated its use at the initial stages of education but there is still very scant progress in this direction.

4. The Concepts

- A major difficulty that is faced by the curriculum writers and the text writers is to make competency based content free curriculum so that the materials may be developed at the local level in the context of the learner and oriented to acquisition of learning with understanding leading to the skill development, habit formation, attitude building and value development. Excuse us if you see Bloom in us, but we are stressing it particularly because of stress on value formation as the ultimate goal of education. It is also relevant in the context of education of SEN children.

REFRENCES

Ambasht, N.K.(2001) Tribal Education: Problems and Issues, Venkatesh Prakashan, Delhi

Govt. of India (1986) National Policy on Education, Ministry of Human Resource Development, New Delhi

................(1992) *Ibid*

.... (1993) Education For All, Department of Education, Ministry of Human Resource Development, Govt of India,

...............(2002) The Indian Child : A Profile, Dept. of Human Resource Development

Lynch, J (1994) Provision for Children with Special Educational Needs in the Asia Region, The World Bank, Washington DC

NCERT (2000) National Curriculum Framework for School Education, National Council of Educational Research & Training, New Delhi

Sinha, Shabnam (2002) Concept paper, National Consultative Meet on "Education for Life", Department of Elementary Education ,NCERT.

UNESCO (2000) Dakar Framework of Action, France.

Vajpayee, Atal Bihari Message in *Indian Child: A Profile 2002* , Govt, of India, Dept. of Women and Child Development, Ministry of Human Resource Development, New Delhi.

(e) EDUCATION FOR LIFE : MANAGEMENT STRUCTURES AND FUNCTIONS

Prof. T. N.Dhar
Former J.D, NCERT

{ The objective of this paper is not to describe at length the management structures that exist and the roles that are performed, adequately or inadequately. The purpose is also not to make definitive statements as to what new structures need to be created or how the existing structures need to be strengthened are drastically altered to perform the roles expected of them in the context of Sarva Shikhsha Abhiyan and its emphasis on education for life The purpose is to raise management related issues which the National Meet should deliberate upon and make suitable recommendations for early implementation.}

1. Education for Life; Concept and Dimensions

The basic assumptions underlying education for life in the context of the Sarva Shikhsha Abhiyan are; that education should be relevant and that it should be perceived to be relevant by those whose educational needs are expected to be catered to. The latter is particularly significant for motivating households to send their children to schools and to retain there till they attain the expected level of competencies.

2. Education for life seems to have among others four perspectives in terms of its relevance:

- to the individual while in an education institution in the sense that educational activity should be relevant to and based on his/her developmental stage.
- to what an individual is likely to do in the immediate future, for example, continue further education for which the present stage should lay a base.
- to what he/she hopes or intends to do after completing the stage at which he/she leaves education
- to what he/she is expected to contribute to social good as a good citizen.

The first seem to be easier to deal with since a fair amount of literature is available, for instance on characteristic of children at different stages of development suitability of learning materials, transactional modes etc. Further stages subsequent to the elementary stage of education-which is the concern of Sarva Shikhsha Abhiyan-indicate although on a prior grounds the competencies that a child is expected to have on entry (second and the tertiary stages of education) However, the possibility of entry to the latter stages depends to a great extent on the capacity of the household to support education of the individual which includes the family's willingness and ability to forego his / her income.

3. The third viz. what an individual intends to do after leaving education, presents problems since it involves an identification, as precisely as possible, of the tasks that an individual is likely to engage in after completing education, given the social and economic situations in the country It has become increasingly difficult to ensure that all those who leave education at its different stages will be immediately employed gainfully. It is not only the organized sector of the economy which has limited opportunities for gainful employment; even the unorganized sector is not expanding fast enough to absorb all those who discontinue education Apart from the supports that an individual needs to settle down in a remunerative self-employed person-easy credit, market related information,

technical advice etc. - school leavers seem to have little knowledge and few skills to be productive workers even in parental and community occupations in which they are likely to settle after completing for instance the first eight years of schooling. Considering that a large number of children are likely to discontinue education after eight years of schooling-assuming that they will become compulsory and universal as expected in Sarva Shiksha Abhiyan- the competencies of school leavers should in the context of education for life be an important concern for educational planners and decision makers.

4. The last viz. the preparation of an individual as a "good" citizen is extremely difficult to deal with for among other things three reasons: difficulty to develop a concrete vision of what the futue will be like and for which an individual should be prepared the difficult to control the experiences through an individual passes which have a determining influence on her/her behaviour and the influences external to education, that he is subjected to which are difficult to control. For these and other reasons, the possibilities of education being completely relevant seem to be limited. It is necessary that educational institutions recognize the limitations that circumscribe their role in this regard.

5. Education for life in the sense of preparing children to live a meaningful life by using the competencies promoted by and learnt in an educational institution needs also to be thought of in relation to different spatial levels at which an individual functions life in the household which expects and requires him/her to augment the family resources and its quality of life; community level which expects an individual to be a creative and contributing member; national level which expects him/her to promote and strengthen national unity and integrity and contribute to be realization of nation's goal: and the global level which has become significant in the context of globalization. Education system needs to be conscious of these levels and plan for them. At each level educational activity will also need to take into consideration the implications of scientific and technological advances for production processes sustainability of environment, nutrition, hygiene and family welfare and values which add to the meaning and quality of life.

6. The various dimensions of education for life discussed briefly have implications both for managerial structures and the roles that "managers" will be expected to perform. Managerial structure provide the institutional mechanism for performance of such functions as a systematic study of ground realities, policy, planning, programming and decision making and monitoring and evaluation of implementation strategies and programmes. Of particular importance in the context of education for life would be the mechanism to envision and forecast. It is only on the basis of visions and forecasts that educational programmes can be tailored to suit the needs of individuals and communities. The performance of managerial functions would require competencies to design programmes and projects and ensure effective implementation supervision monitoring and evaluation of educational activity. These competencies can be ensured through induction of competent personnel and education and training of functionaries.

Management Structure

7. The design of management structure can be considered from two somewhat different points of vies: identification of tasks and the designing of suitable structures for their performance and accomplishment; and a critical examination of existing structures and the identification of areas of strengthening and /or restructuring. The latter could also

lead to the determination of new sub-structures within the existing overall structure. Considering the entrenched character of existing structures and the stake that various groups have in their continuance, the second course should probably be the preferred option the major advantage being the avoidance of disruption that creation of new structures might cause. For instance, it might be easier to think of and design coordinating mechanism for effecting convergence within education, which in itself might not be easy considering the proliferation of ministries, departments and divisions that has taken place in educational administration. In a situation of this type convergence between education and other sectors of development poses still greater problems. The major danger in coordinating mechanisms is what might be termed as the syndrome of no body's baby. To be effective, both in undertaking and accomplishing tasks, there would be the need to fix responsibilities in specific terms and to insist on accountability not only for successes but moreso for failures. This is virtually non-existent in the present set up.

Levels of Management

8. Management structures and functions need also to be considered in relation to various levels of educational administration: community (local), district, state and national. For all these there is no doubt a commonality of goals and objectives to be achieved. The scale of functions and their inter se priority are likely to differ. For instance at local levels community mobilizaiton and empowerment will probably have a much higher priority than at other levels. At state levels, guidance, financial support monitoring and evaluation of performance would probably receive precedence. And at national level the development of a vision of educational future for the country would receive greater attention.

9. Sarva Shikhsha Abhiyan has indicated the goal- of universal elementary education - that needs to be achieved within a specific time frame. It has also indicated the main strategies for planning and implementation: micro-planning with development of programmes on the basis of the identification of needs of specific localities (habitations) and specific segments of the population (disadvantaged and deprived groups); convergence within education of inputs and interventions targetting specific locations and groups; coordination with other development sectors and their programmes, particularly those that concern and aim at poverty alleviation and enhancing the quality of life (rural housing, drinking water, provision of employment, health, child care and family welfare etc.). The programmes of development sectors other than education are of great significance for education since they promote and enhance the capacity of the households to facilitate children's enrolment, retention and attainments which are the principal goals of universal elementary education.

National and State level

10. The national and state level management structure seems to consist of: the bureaucratic (nomenclature used for want of a term which describes the complex variety of ministries and departments) and somewhat autonomous institutional arrangements which have been created ostensibly with the purpose of performing tasks normally not falling within the purview of the bureaucracy and to serve its needs of making policies and taking decisions "on rational grounds". This distinction may not hold in all circumstances and often the roles performed and modes of functioning might have a large degree of similarity. At the national level the Ministry of Human resource Development and its Department of Elementary and Secondary Education are principally concerned with Sarva Shikhsha

Abhiyan. The academic setup comprises autonomous institutions like the National Council of Educational Research and Training, National Institute of Educational Planning and Administration, National Council for Teacher Education, National Open School etc. At the State level the structure is virtually duplicated in the form of ministries and their departments and academic institutions like the SCERTs, DIETs etc. with the difference that state institutions might not have the same degree of autonomy enjoyed by national level institutions. A significant difference between the national and the state level management structures would also seem to be the absence in the former of a large contingent of field staff (District Education Officer, Inspectors, Deputy Inspectors and so on).

11. The major tasks for government departments ought, among other things, to be: development in relation to macro concerns a vision of educational development, identification of policy interventions, laying down in broad terms of strategies for implementation, provision of financial support, coordination of effort of departments within education and with other sectors of development, support for innovative educational initiatives, particularly those of non-governmental organization, monitoring of implementation of educational activity and evaluation of performance of the system in relation to expected goals and outcomes. These tasks can be accomplished with the support, involvement and inputs of the institutions which have been established to provide academic and training inputs to the system. These institutions can for instance, indicate through systematic studies the responses that other education systems have made to emerging concerns and the strategies that they have adopted to achieve relevance of educational activity. They can also provide data on ground realities which help in forming well informed judgement on the feasibility of proposed policy and programme initiatives.

12. The principal tasks of the institutions would be: design of national frameworks, training of key personnel, development of exemplary teaching and learning materials. Considering the diversities that exist, among other things in educational contexts and situations a major responsibility of these institutions should be the development of capacities of local government functionaries and communities for planning and programming in relation to local needs and conditions and adapt for local use the exemplary materials and training formats developed at national / state levels. Unfortunately the development of these capacities continues to remain an unfinished task despite the need having been emphasized time and again. One of the probable reasons might be the difficulty experienced by the personnel of these institutions to meaningfully understand community situations mainly because of the lack of exposure and general lack of community related experiences on their part.

District Level

13. In Sarva Shikhsha Abhiyan and consequently in Education for Life, district administration is expected to play a crucial and critical role. It is at the district levels that plans formulated in relation to specific habitations and segments, will be coordinated presenting a coordinated and coherent picture of what is proposed to be done and how. A shelf of project will be decided upon for implementation and resources-material and manpower-determined and provided for. The district will also be responsible for monitoring implementation and effecting midway corrections on the basis of field information and experiences the district with its somewhat unified administrative setup-in the form of district collector and his establishment and a specific well defined area of operation-will have the crucial role of effecting convergencies within education and with

sectoral programmes of other development departments. Being closer to the field, district administration is more favourable placed to make a realistic assessment of the needs of different communities and locations and design programmes which cater to their needs. With panchayati raj institutions functioning in many states, district collector as chairman of the District Development Council will be able to interact with people's representatives and obtain feedback on what communities need and want In fact, with decentralization of authority to panchayati raj institutions, implementation of educational - and other development programmes-depends considerably on district administration's attitudes and the relationship that it builds with people's representative bodies.

14. The many constraints of the present district level structure require to be identified and dealt with. Some of them are discussed briefly. First education generally not being an area of interest and preference of civil servants. It often does not get the attention that it deserves. There are no doubt notable exceptions. Second , the somewhat amorphous nature of educational activity and its long gestation period and the absence of immediate visibility of outcomes-generally adopted as criterion of measuring performance-does not provide the needed motivation for undertaking innovative educational activity. Physical targets rather than the quality of services tend to be emphasized. Education for life related activities need to be followed through for a sufficiently long period to determine the extent to which they meet the expected objectives. Third, district level administration has yet not been sufficiently professionalised to undertake planning programming and project formulation exercises which require the use of sophisticated techniques rather than the rule of thumb approaches. Fourth, the centralised identification of tasks and how they need to be accomplished tends to restrict the area of manoueverability at the district level. The scope for making adjustments is further restricted by the financial provisions allocated and the norm for support and spending. Last, with education becoming a major area for exerting influence and pressure-appointments, transfers, recognition of institutions, teachers union etc-educational decisions tend to be taken on consideration other than relevance and need.

Community Level

15. Community support for, community involvement in and community control of education particularly at local levels have been advocated as a mechanism for augmentation of resources for education and for ensuring that institutions function and teachers perform the rules expected of them. The need for community support has been advocated principally because of the government's inability to provide sufficient resources and/or utilize the existing resources optimally to meet the basic needs of the people. The earlier informal mode of community support-for instance the community providing and maintaining a school. education Guarantee Scheme for instance requires that in order to be eligible for government' financial support for primary education the community should provide premises for the school. It wants educational need to be certified by a specified number of community members; it also expects the local community to identify a local resident even when not fulfilling the prescribed qualification to perform teaching functions on remuneration which is less than the scale of pay prescribed for "regular" teachers. While this measure might help in making some form of education-as against none-available to communities there can be possibility of poor resource communities being completely ignored in the provision of educational facilities.

16. The formal involvement of the community is expected to be ensured through local bodies: municipal committees and corporations in cities and metropolitan area and panchayati raj institutions in rural areas. The record of the former being willing and able to support education remains unsatisfactory. Even the resource rich Municipal Corporations of Delhi and Mumbai and despite much greater civic consciouness have neither been able to provide universal access to elementary education for ensure that institutions have the requisite manpower and infrastructure which will allow them to provide the climate for teaching and learning of reasonable quality.

17. Decentralization of authority and resources-constitutionally mandated-has been advocated since the very early stages of planning The 72 and 73 amendments of the Constitution have provided a clearer blueprint for the establishment (for instance composition) authority and functions (the 11 Schedule) and resources (the setting up of State Finance Commissions for devolution of resources) for panchayati raj institutions at various level. Information about the present status of the implementation of the provisions of the amendments is not available for all the states: nor also the critical analysis of how these institutions are functioning. At best the progress seems to be uneven across the country. There are no doubt examples of these institutions being endowed with what might be termed as "real authority" in educational matters and resources to implement educational decisions. The perceived loss of discretion and authority on the part both of bureaucracy and state legislators, the difficulty to effect attitudinal changes and lack of resources might be some of the reasons for panchayati raj institutions yet not emerging as vibrant and effective agencies for educational development in rural areas. Of course there is the usual argument of these institutions to be "nurtured, supported and encouraged in a positive manner" so that "they can grow to their full potential." The people representing these institutions are yet not seen to possess the capacity to govern themselves and plan, take and implement decisions which affect their lives although such capacity could be developed by blundering in the path of self-governance.

18. Although not elaborated empowerment of communities is advocated as a significant management measure for elementary education (as for so many other development activities). Empowerment would seem to comprise: clear cut assignment of functions; delegation of authority to take decisions; responsibility and accountability for implementation of programmes; capacity for planning, programming and monitoring, and availability o required resources for implementing decisions. The Programme of Action (1992), elaborating the National Policy on Education had recommended that a "Village education Committee comprising not more than 15 members with representatives of parents panchayats, co-operatives, Scheduled Castes, tribes minorities and local development functionaries will be constituted to look into overall management of all educational programmes at village level." It had also recommended that in view of their critical role village education committees should be vested with statutory and administrative made by the CABE Committee, constituted by the Ministry of Human Resource Development in relation to the constitutional amendments, regarding the role in education of Panchayat raj bodies need serious consideration. A critical evaluation of the action that has been taken on the constitutional amendments and the CABE Committee recommendations has yet not become available. However, information from states seems to indicate that except in some areas, village education committees play only a peripheral role partly because of the "lack of substantive authority and necessary administrative and financial autonomy." It needs also to be recognized that the idyllic image of the village community-being homogenous, characterized by warmth of relationships and mutual

support etc.-is not a reality for most of the villages. Reports are replete with fragmented character of village communities on the basis of castes, dominance of certain groups in decision making etc. Elections to people representative bodies seem to have further fragments the already fragmented village communities.

Non-Government Organizations

19. Non-Government organizations are likely to operate more flixibly in relation to community related education activities. For one thing, they are often not under "central" control and can undertake activities which meet the specific needs of the community and adopt modalities that suit the local educational situation. Secondly, since their existence depends to a large extent on how best they can serve community interests their activities tend to have much greater credibility and acceptance. This enables them to mobilize community resources- material , manpower and motivational-for various programmes and at the same time be accountable for tangible outcomes. Thirdly, being closer to the scene and with rapport with the community, they often are in a position to gauge more realistically community needs and their inter se priority and feasibility of implementing programmes in a given community situation. The understanding and appreciation of diversities that prevail allows them to tailor programmes-adopting different modalities-to specific needs of specific groups instead of adopting an omnibus approach to community development.

20. The major problems in involving non-government organizations in educational activity are likely to be: identification of organizations which have appropriate credentials and expertise to undertake activities; their preconceived perceptions about problems and solutions which makes it difficult to convince them of other points of view, weak conceptual framework for their approaches and programmes; the somewhat authoritarian modes of functioning with concentration of authority in an individual or group with little participation, of workers in decision making, and reluctance to adhere to financial norms and procedures which public authorities being answerable insist upon. In spite of these problems-which are not beyond solution-there does nor seem any escape from involving non-governmental organizations in the implementation of educational programmes particularly those which make education relevant to community life and concerns. In deprived locations and among disadvantaged sections they might prove to be the only mechanism for fulfilling community needs-as is evident from the activities of many organizations working in such difficult area as slums, tribal areas etc. In disadvantaged location they often seem to represent the only available option for educational advancement of the people. Their effort at social mobilization and social action can be of particular significance in creating motivation and demand for education. Since many non-governmental organizations have been involved in establishment and maintenance of nonformal education centres and have the expertise to develop /adapt teaching learning materials, they can be entrusted with task of preparing these material for local use. They can also be associated with training of communities for designing educational programmes. There seems need for involving them meaningfully in decision making and for flexibility in the provision of financial support. At the same time periodic monitoring and evaluation for their programmes would be necessary.

Professionalization

21. Planning programming monitoring and evaluation of educational development require technical expertise rather than intuitive and rule of thumb approaches. Over the years

competencies have become available for use of analytical and sophisticated techniques to project educational development. These techniques are used both for macro and micro-level visualization of the directions that educational effort should take although at micro community levels projections of educational needs can be made through household surveys for instance in determining the quantum of non-enrolled children and the extent of drop-outs etc. It needs to be recognized that at some stage and in the case of some facets of community life, micro analyses have to be linked to nearby and distant growth centres so that they do not remain permanently at the periphery of the development effort. There is need for equipping different making structure with professional expertise.

22. There is also the need to create an adequate data base for decision making which transcends the usual effort at collection, compilation and hopefully retrieval of statistical information when required. Information on a variety of indices needs to be generated through rigorous empirical studies to allow more "rational" making of management decisions. Among others this information should reflect on social attitudes, economic situations, household capacities, dominance of castes and groups etc. since they have considerable significance in designing education for life related activities which determine meaningful participation of communities in education. The existing delays in providing authentic information-statistical and other - need to be dealt with.

23. An important managerial concerns should be the specification of tasks fixing of responsibilities and insistence on accountability for policies advocated programmes and projects designed effective implementation of educational activities and for outcomes. They need to be done at all levels of educational administration, particularly at levels where implementation takes place. Unfortunately this does not seem to happen for a number of reasons: planning of policies and decision making generally being entrusted to personnel whose turnover is too frequent to ensure a stake in and accountability for decisions which have long gestation periods and require long periods to fructify; the dichotomy that exists between planning and implementation with different sets of people being responsible for the two sets of activities affecting understanding and appreciation of ground level realities; top-down model of planning with implementers having little say in programme development and consequently little stake in the outcomes; the insistence of general rather than professional competencies of policy planners and key decision makers; and the insistence on decision making on the basis of bureaucratic hierarchies and procedures.

24. Of significance is the need for professional strengthening of institutions set up at local levels to provide academic support to educational interventions. Among other these include the District Institutes of Education and Training, Block Resource Centres and the District Resource Units. In spite of the important functions assigned to them they have yet to emerge as institutions which can provide meaningful academic and training support to educational development. The recruitment policies and lack of adequate avenues for career promotion and training have often resulted in staffing of these institutions with personnel who have few claims to academic and professional expertise. Since education for life requires designing of educational interventions-including teaching learning materials-in relation to specific educational contexts these institutions require substantial strengthening, not only in respect of their staff strength but more so in the professional competencies that the personnel possess.

(f) Development of Education for Life :Nature and Role of Alternative Schooling.

Dr. H.L. Sharma
Consultant, NIOS

Education

Education is "a powerful instrument of national development" for which an individual is to be provided the right type of education. Dwelling upon the right type of education Delors Commission Report while formulating four pillars of learning – (i) Learning to know (ii) Learning to do (iii) Learning to live together and (iv) learning to be, emphasised that " Formal education systems tend to emphasise the acquisition of knowledge to the detriment of other types of learning but it is vital now to conceive education in a more encompassing fashion. Such a vision should inform and guide future educational reforms and policy, in relation both to contents and methods." (Learning: The treasure within, report to UNESCO of the International Commission on education for the Twenty-first Century, 1996. Paris, Pg. 97) and this directive compels educationists to search for other strategies apart from formal i.e. non formal and incidental approaches

In the present times, life has become complex. Everyone meets challenges in different situations which create tension, anexiey, frustration, depression-making life measerable. In this regard the role of education becomes very important. The quality education prepares a learner to earn his livelyhood (Living) and to develop a positive attitude to withstand the pressures in life (Education for life). But education has failed to make most of learners to earn a livelyhood and to develop the desirable attitudes to cope up with challenges. Art of Healthy and Productive Living The word 'art' implies a graceful and skilful method of accomplishing anything. "The art of living enables a man to live life to its full value, to accomplish the maximum in the world and at the same time to live a life of eternal freedom in God-Consciousness". One needs to acquire competences to earn livelyhood and attitudes to withstand different pressures in life.

Education today faces many challenges on account of, knowledge and technological explosion, shattering of social institutions, attitudinal changes in society, crumbling of joint family system and the emergence of nuclear family system. Within the school system, there is great challenge to provide quality education- education for living and for life. The factors such as human aspects (students, teachers, parents, managers), academic aspects- (curriculum load, text books, training of teachers, evaluation system), the cost of education, participation of parents and community linkage of knowledge and action, need effective solutions. Creation of a learning society, Life long learning creation of a non-violent society, character building, and independence of education from outside control need also solutions in the past effort have been made to solve these problems. In the word's of Gandhi Ji "Real Education has to draw out the best from the boys and girls to be educated. This can never be done by packing ill-assorted and unwanted information into the heads of the students. It becomes a dead weight crushing all originality in them and turning them into mere automata" (Mahatma Gandhi -Harijan 1 December, 1933). The real education of Mahatma Gandhi envisaged 3 H - **Hand, Heart and Head**

Education for Living

The present day educational system in our country, provides experiences to learners for their cognitive development only through teaching scholastic subjects It prepares them for the

world of work in general and not for effective living, Learners after schooling do not feel confident in their day to day life. The knowledge provided by the formal school system does not help them neither to earn their livelihood.

Our educational system has not been designed to provide experiences to develop life coping skills and attitudes to overcome the various pressures of life emanating from different situations say family to face the neighbourhood, community etc. As a consequence, many of the learners do not find themselves day to day life problem. Education system has not made learners to face such situations while getting academic education. The feeling of stress arises in the mind of an individual when he/she is not able to earn his livelyhood . Stress is an invisible disease. The increasing level of stress in our society is a matter of serious concern Some situations in life cause intense stress and depression too. For instance every year after the Board Examination results, there is a spate of suicides by learners whose results do not match their expectations expectation in academic subjects. It is unfortunate that low performance in academic subjects, which should be treated as a minor speed breaker, leads to a dead end leaving learners totally dejected. Achievement in academics is only a small percentage in the life of an individual.

Why is this happening in our society? Perhaps it is happening because our educational system does not develop life coping skills and attitudes which one needs. Alternative strategies to impart schooling provide ample opportunities for the development of life coping skills.

Education for Life

The purpose of education is to prepare the learner to lead peaceful and happy life For this, it is essential to develop among learners certain desirable life coping skills and attitudes to withstand different pressures of life. The attitude to think positively needs to be developed amongst learners, suitable experiences need to be provided to develop such an attitude. It has been observed that those who have a bleak attitude towards life suffer from depression. Therefore learners need to be provided suitable experiences Yog, Asana, Pranayam, Meditation and knowledge to acquire the skill of countering the effects of stress.

Life coping skills help in 'living in the present'. Most of us often do not live in the present moment We do not work whole heartedly for it. We vacillate between the past and the future. One should not think over the past much of which is dead. What was to happen, has already happened One needs to realise that those unwanted happenings were beyond his/her control. One should not think of the future too much, which is yet to come. To be at peace one has to learn to live in the present moment, the motto being 'work is worship. When one does work with his/her hand one learns many skills.

Education for life en-visages values Values refer to anything that fulfils or has the capacity of fulfilling the needs of man, physical, psychological or spiritual. Values always refer to human needs. These list of human values ranges from five to one hundred ten and even more efforts have also been made to group these at primary, upper primary and secondary level of schooling (NIOS literature).

Value education literature advocate three methods of imparting value education - Indirect method, Incidental method and Direct method. Alternative modes of schooling appear more suitable for indirect and incidental methods. It is also said that values are not taught but caught As such it is difficult to assess the value The NIOS has made efforts to short list the

values list to 14 and have put indicators help assessing the values. Values are abstract, the values and their indicators are given below .-

Cleanliness : Personal hygiene, contributing to the cleanliness of home, neighbourhood, school premises, the community in general.
Respect for elders & Love for young ones : Being obedient, spirit for service, being humble & helpful as well as showing love and affection for the young ones.
Co-operation : Cooperation with members of the family, neighbours, fellow learners, disabled, elders
Discipline : Being punctual, exercising self control, having a sense of duty.
Patriotism : One with the nation in time of need, always upholding the dignity of the nation, having respect for the national flag, national anthem, national emblem.
Tolerance : Listening patiently to the views of other and understanding the same.
Courage : Self confidence, eager to do work, hardworking, fearless
Dedication : Faith, dedication to work, loyalty to duty.
Gratitude : Gratefulness to anyone who gives something, gratefulness to God.
Self-reliance : Capable of doing one's own work independently, seeking less support from others
Sense of Responsibility : Doing one's duty
Orderliness : Keeping one's own things and things around in order.
Self-respect : Respecting and upholding the dignity of self, family, village, state & others.
Service : Serving the poor, elderly, handicapped, disadvantaged & others.
Simplicity : Simplicity in style of living, behaviour and thinking.

The Present Scenario

Right from the inception of planning the crucial role of education in economic and social development has been recognized and emphasised. Efforts to increase people's participation in education and to diversify educational programmes in order to promote knowledge and skills required for nation building have characterised successive Five Year Plans. Despite a series of problems that the country faced soon after independence, it has been possible to create a vast educational infrastructure in terms of large enrolments and teaching force and massive capabilities for management, research and development. The country has made about 70 crore people literate. About 30 crore (which was more or less the number at the time of independence) are left to be made literate and country will, hopefully, achieve this target during Tenth Five Year Plan.

Enormous Achievements

Out country has been exploring various mechanisms and alternative strategies to fulfill the constitutional commitment of Universalisation of Elementary Education (UEE) to cover all children up to the age of fourteen years and providing Basic Education and Continuing Education to all above fourteen years of age. Several measures and programmes such as Operation Blackborad (OB), Bihar Education Project (BEP), Uttar Pradesh Basic Education Programme (UPBEP), Shiksha Ghar Programme of Uttar Pradesh, Lok Jumbish (LJ), an Swarn Jayanti Rajiv Primary School Programme of Rajasthan, Rajiv Gandhi Prathmic Siksha Mission and Education Guarantee Scheme (EGS) of Madhya Pradesh, Andhra Pradesh Primary Education Programme (APPEP), Shikshak Samakhya, District Primary Education Programme (DPEP), Centrally – sponsored Non-Formal Education (NFE) and Promotion of Literacy, Post-Literacy and Continuing Education, time-bound are area-specific campaigns

through voluntary efforts and Continuing Education, time-bound and area-specific campaigns through voluntary efforts and community participation launched by the National Literacy Mission (NLM) have helped in changing the Basic Education scenario in the country.

Not only these measures, the measures like the Mid-day Meal programme, provision of free textbooks of all SCs/STs children and girls at primary and upper primary schools have made a difference in attendance and retention. These efforts have raised the level of literacy and educational scenario of the country.

Though these measures and the strategies of educational development during the past decades of planning have taken into account factors like - the national goal of providing primary education as a universal basic service, the Supreme Court Judgement declaring education to be a fundamental right for children between 6-14 years of age, (now education a fundamental right), the need to operationalise programmes through Panchayati Raj Institutions (PRIs) and Urban Local Bodies (ULBs), the legal embargo on child-labour, the provisions of the Persons with Disabilities Act, 1995, and heightened awareness of human rights violations in respect of women. children and persons from disadvantaged sections of society, providing primary school/alternative schooling facility within one km. of every habitation, one teacher for every 40 children group from primary and upper primary yet a large number of out-of-school children (never attended school, enrolled but do not attending, enrolled left school without completing VIIIth class etc.), who figure neither in schools enrolments nor in the calculations of identifiable child-labour, are to be provided access to schooling. Out of "19 crore children in age group 6-14 years, 15.50 crore are enrolled". Upto 8th level nearly 50% students droped out. Thus about 12 crore are out of school. "The attendance in the primary level is only 66% of enrolment". For these children there can not be one single strategy of formal schooling. There is a need to search for alternative strategies for providing schooling to these childrens.

Interventions Needed

The present day formal schooling system for different stages of education needs recasting. It should shed certain dead wood not catering to present day needs and aspirations of people. It should include development of desirable life coping skills and attitudes amongst learners. The content and methods of education have to undergo a change. To deal the issues such as : **Out of school children, Unserved Habitations with Upper Primary Schools/Sections, Non-Availability of teachers, Lack of physical Infrastructure, Low level of Achievement.** quality (education) The Director NCERT, has recently given ruling in Favour of Quality Education (J S Rajput, equity in education ruling in favour of quality Times of India; October 02, 2002), **Regional Disparities, Alternative mode of schooling may solve some of these issues and help Easy accessibility of educational infrastructure, Taking education to the doorstep of the learners, Providing flexibility regarding time to learning, academic session and curriculum, Preparing tailored made education packages to suite the learners, Linking education with life skills.**

Suitable Medium of Instructions

The right type of education can be given only in mother tongue. It cannot be given in a foreign language. In our system there is much emphasis on English as a medium of instruction The medium of instructions in ancient period and medieval period was mother tongue

Education in Ancient India

Indeed, ancient India had a systematic approach to the schooling It dwelt heavily on schooling system such as Ashram, Schools, Gurugriha (House of the teacher), Gurukuls etc. 'Ashram' schools, Gurukuls, Gurugriha, which operated generally in a totally natural environment and where there was a scientific way of living, These schools provided scientific understanding of the total environment, and practical knowledge. Practices in schools helped students evolve a scientific attitude towards life, a way of life. This required a disciplined approach to events and, therefore, it was made an essential constituent of education at all levels. The four-fold division of man's life into 'Ashrams' devoted to the realization of man's fundamental purposes in life, as per his developmental age and needs. It was, therefore, the strongest link in the life-long education that the ancient education really sought for.

In ancient India, education was given in accordance with the learning capacities and aptitudes of pupils. The duration of the studies was determined by the periods required for their completion, as per one's aptitude and capacity. This led to the provision of specialization in education according to one's interest and abilities and certainly an early initiation into it even as part of one's elementary education.

Elementary education comprised literary, philosophical as well as practical subjects, which included vocational as well as academic preparation of the child according to the role he chose to play in his life. "Elementary and general education as pointed out by Mookerji comprised the study of five subjects or vidyas viz. (1) Sabadvidya grammar (2) Silpasthanavidya "arts" (3) Chikitsa Vidya "Medicine" (4) Hetuvidya "Logic" and (5) Adhyatmavidya "Science of the Universal Soul"-Philosophy (Mookerji, Ancient Indian Education, p. 538). A child was supposed to study the science of medicine as well as the basic scientific principles and practices included in arts, crafts or vocation. The existing scientific information, useful in life activities was transmitted verbally as well as through practice-apprenteship method. This was indeed the most important aspect of ancient education at elementary level in the area of science. The completion of the study of the 'five vidyas' completed the course of elementary and general education and then followed 'bifurcation of studied or specialization" (ibid, p. 539).

Education in Medieval India

With the coming of Mulsims in India, the pattern of education which culminated in Arab countries also passed on to India. As a result Maktab and Madarsa came into existence. The concept of karkhana helped learners in learning life coping skills.

Education in British India

The existing elementary education system has developed not from the indigenous elementary schools – Pathshalas (Hindu School of Learning) and Makhtabs (Muslim School of Learning), but was developed over a period of time by Britishers to control the masses in 'a graded society', 'focussing' on the higher classes - a connection between the British Government and the masses which resulted the neglect of elementary education for the great majority of masses.

The Britishers put, in efforts in spreading elementary education in English only. Teh Macaulay minute (February 2, 1835) Macaulay's letter to his parents (October 12, 1835), high lights the aim of education. Emphasis remained on English medium. Lord Harding (1844) gave preference to English school graduates for Government services. Though Woods's Despatch (1854) laid emphasis on Primary Education for All, yet-people educated on Western lines received preference. Inspite of transferring education to provincial governments (1871), Hunter Commission (1882) recommendation to strengthen primary education, Lord Curzons (1904) reforms, Gokhale's resolution (1910) for making **elementary education free and compulsory**, Government Resolution (1913) for the widest possible extension of primary education on voluntary basis", acceptance of the goal of compulsory education (Government of India Act 1919), drawing attention towards stagnation and wastage and blaming the local bodies for inefficiency in administration and proposing checks over them (Hartog Committee 1928-29), not much happened in our elementary education system upto early thirtees. In late twenties and early thirties, there had been a slum in the economic field, which resulted into a good deal of unemployment and created a need for vocational education along with the existing general education. An important document for vocational education-the Abbot and Wood (1937), suggesting the curriculum of rural middle schools to be related to the environment of the educants, stressed on creative manual work-making it a subject in every school.

To meet the needs of the society, Mahatma Gandhi thought to impart education in mother tongue through **a craft** to give an insurance against unemployment, good health to children, meeting remuneration of teacher. In his basic education system he did not emphasize the learning from text-books. The true text book for Gandhi was the teacher. The teacher was a friend, philosopher and guide. The Basic Education system as a vital and urgent need of an individual, was accepted in our country. With the dawn of independence, India resolved to provide free and compulsory education to all up to the age of 14 years by 1960. But for one reason or the other Gandhi's basic education system could not continue.

Today one can see the emergence of English public School almost everywhere at some places English is being taught from class one onward in ordinary schools, what to talk of public schools

As education is not rooted in the traditions of the people, the educated persons tend to be alienated from their own culture. The growth of local, regional, lignuistric and State loyalties tend to make the people forget India. The old values, which held society together, have been disappearing, and as there is no effective programme to replace them by a new sense of social responsibility, innumerable signs of social dis-organization are evident everywhere and are continually on the increase". (Report of the Committee of Members of Parliament on Education, 1967, National Policy on Education, Ministry of Education - Government of India)

Linking Education with Life-Skills :- Education , by and large, suffers basically form the gap between its content and the living experience of its learners Education in its real sense should prepare learners to face the multifarious challenges that they are bound to face in the society. In order to do so, education needs to be intimately linked with different life-skills.

The "life skills" enable the individual to deal effectively with the demands, challenges and pressures of everyday life. Life skills have been variously defined as "Personal and social

skills required for young people to function confidently and competently with themselves, with other people and (with) the wider community", the skills necessary "to carry out effective interpersonal relationship and social role responsibilities, and to make choices and resolve conflicts without resorting to actions that will harm oneself or others", and "skills and behaviours which enable youth and adults to take greater responsibility for their lives by making healthy life choice, gaining greater resistance to negative pressure, and minimizing harmful behaviours.

Educators have tried to identify a core of cognitive and social skills that should be practised and reinforced in response to a range of problem areas. These are awareness, preventive health care, inadequate nutrition, avoiding conflict and resisting discrimination. Life skills International, based in Worthington, Ohio, puts forward "four R's" to follow reading, writing and arithmetic:

- Responsibility: making choice, keeping promises, and being accountable for myself, others and the natural and human resources around me.
- Respect for self and others: understanding myself, creating trust with others, and understanding and respecting individual differences and other cultures.
- Relationships: creating and sustaining positive friendships, surviving losses, peacefully reconciling conflicts, and disagreeing without devaluation.
- Reasoning: employing critical thinking, evaluating options and making healthy and positive decisions.

A World Health Organization (WHO) expert panel convened in May 1991 identified ten core life skills: decision making, problem solving, creative thinking, critical thinking, communication skills, interpersonal skills, coping with emotions, coping with stress, self-awareness, and empathy. Participants in the Life Skills Workshop held in Rajendrapur, Bangladesh, came up with a similar core list: Self-assessment, communication skills, assertiveness, coping with emotions/stress, critical thinking, conflict resolution and management, negotiating skills, problem solving, and decision making.

Analysis of the common components of different life skills, programmes in different countries reveals the following as the generally accepted core life skills:

- Self-awareness, self-assessment and self-esteem
- Communication (including the very important art of listening)
- Cooperation (the ability to work and play cooperatively, ensuring the effective engagement of all members of a group in the realization of a common goal)
- Critical thinking (the ability to critically evaluate information, opinions and behaviour) and creative thinking (the ability to make lateral moves outside of established frameworks of thought in order to generate fresh insight, perspectives and solutions)
- Decision making (the ability to make informed decisions in all spheres of life on the basis of sound information gathering, organizing and evaluating, and intuition)
- Problem solving (the ability to solve problems in all spheres of life through a combination of effective information management, creative thinking and intuition)
- Negotiation (the ability to make contracts, compromise and reach mutually satisfactory agreements or conclusions)

- Conflict management (the ability to employ conflict avoidance, resolution and mediation techniques, and to handle controversy and conflict in such a way as to maximize the creative force to conflict)
- Coping with emotions and coping with stress
- Assertiveness (the ability to own and to clearly and firmly yet respectfully express emotions, feelings, needs, preferences and fears)
- Values clarification (the ability to identify and clarify one's values and belief system and to modify personal values and beliefs to accommodate appropriate new perspectives, ideas and insights)
- Risk avoidance (the ability to avoid abuse and personal danger in their many manifestations)
- Information management (the ability to receive, organize, process, store, retrieve, utilize and express information)

Empowerment (the ability to voice one's hopes and aspirations and to engage in democratic process with the aim of achieving social betterment and desired change)

There are certain core life skills such as problem solving, critical thinking, communication, self awareness, coping with stress, decision making, creative thinking, interpersonal relationships and empathy which are of critical importance for a successful living.

The UNESCO sponsored project on Life skills in non-formal Education (2001) has identified the life skills which are given below: - Self Awareness, Empathy, Coping with Emotions, Coping with Stress, Decision – making, Problem solving, Creative thinking, Critical thinking, Effective Communication, Interpersonal relationship. Some of the main recommendations are :

- All young learners who are at risk whether they are out-of-school, out-of-homes, or in school (temporarily) or in shelters or out on the streets should have access to life skills-based education.
- Take up pilot projects with those NGOs who are already using learner-centred approaches and realize the need for teaching-learning materials.
- Success of life skills approach will depend on giving it a fully worked out curriculum, teaching learning materials, training programme and links with the formal system.
- The goal should be to prepare a kit, a curriculum to integrate life skills, a training package to promulgate learner-friendly methodology and life skills integrated teaching-learning materials, which are multi-sensory.
- Unless the new approach of life skills is spelled out with concrete teaching learning materials it remains incomprehensible to the volunteer worker or facilitator and even to the social worker in NGO set ups. They are familiar with the message content but not trained in teaching-learning transaction.

Alternative schooling may provide flexibility regarding the system of evaluation of achievement in academic and life skills. In alternative system of schooling achievement is constant while all other parameters are variable. All these call for an effective strategy to overcome the challenge in formal schooling which is **alternative schooling**.

Alternative Schooling – Nature & Role
The growth of alternative education dates back to the recommendations made by Kothari Commission which is :

> Part –Time and Own-Time Education:- Part-time and own-time education should be developed on a large scale at every stage and in all sectors and given the same status as full-time education. These facilities will smoothen the transition from school to work, reduce the cost of education to the State, and provide opportunities to the large number of persons who desire to educate themselves further but cannot afford to do so on a full-time basis. In particular, greater emphasis has to be laid on the development of correspondence courses, not only for university students, but also for secondary school students, for teachers, for agricultureal, industrial and other workers; and facilities should be available, both to men and women, to study privately and appear to the various examinations conducted by the boards of education and the universities. (Report of the Committee of Members of Parliament on Education, 1967, National Policy on Education, Ministry of Education, Govt. of India).

Since then alternative strategies such as children in remote, school-less habitations, strategies for education of children who migrate support to Maktabs/Madrasas, Bridge courses, Back to school camps, very specific flexible strategies for certain group of children long during residential camps for elder children's, Remedial coaching for children, short duration summer camp schools, in school education have been experimented (Every child in school and every child learning – Diverse strategies for universalzing access to schooling (in DPEP states)– Department of Education, MHRD – 1999).

Alternative schooling is a strategy to ensure participation of all 'out of school' children including children living in small, unserved habitations and other categories of children like working children, migrating children, street children, adolescent girls etc who are out of school. It is an opportunity to develop and experiment with innovative pedagogical practices.

To maintain the quality of any educational programme certain basic essentials are minimum infrastructure, equipment, reasonable honorarium of the Education Volunteers, proper investment in their professional preparation and regular academic support, strong learner support. There are to be ensured to maintain the quality of education. It provides education at convenient timings, all type of learners in alternative schooling.

It is a possible to provide alternative schooling with in 1 km. of the habitations. Alternative schooling should not be taken as substitute for a dysfunctional school. It can be an alternative mode of formal schooling complementary and supplementary to formal schooling

The ninth five year plan put the education of drop outs working children, girls, migrating population under alternative education. It suggested to provide a schooling to these children through institutional arrangements. Schemes such as Education Guarantee Scheme, Open Basic Education may fall under alternative schooling. EGS &AIE and other similar schemes are the part of Sarva Shiksha Abhiyan. Open Basic Education Programme of National Institute of Open Schooling (OBE- NIOS) has been discuss briefly.

Open Basic Education Programme of National Institute of Open Schooling (OBE-NIOS)

In the constant search for alternative viable strategies for **reaching the unreached**, the **Open Schooling** has emerged as an inevitable necessity. This system of schooling can take care of drop-outs, ensuring that their learning levels of reasonable standards. Teaching is in accordance with their needs and limitations posed by the social structures.

Open Schooling programmes have generated new hope before the learners and out-of-school children with greater flexibility in terms of learning without the barriers of age-limit, admission rigidities, more options in the choice of subjects, freedom to appear in examination at different interval of time as per one's convenience and above all, the credit accumulation facilities. The areas where it is difficult to provide formal schools and where the target group comprises the children who need to study in their own time and at their own pace, the Open Schooling System is the answer. The Open Schooling mode provides opportunities to learners who wish to learn or pursue their vocations and yet want to complete their academic career.

The OBE, as an alternative educational programme, equivalent to the existing formal education system, offers a mechanism to meet the urgency of providing Basic Education for all (EFA) for their academic, vocational, social and spiritual growth. The OBE programme of NIOS goes beyond the narrow confines of classroom with a vision of life-long learning thereby creation of a learning society. It is to provide a learning continuum based on a graded curriculum ensuring quality of education envisaging competencies prescribed at national level.

The OBE programme of NIOS explores and makes use of the potentialities of Distance Education Mode (DEM) in reaching the unreached. The OBE programme through DEM provides opportunities for continuous and developmental education to learners of **all ages below and above 14 years age** group particularly to children who are out of school, drop-outs and non-starters and the adult population who are either illiterate or have developed basic literacy skills through the Total Literacy Campaigns (TLCs), Post Literacy Programme (PLPs) of the National Literacy Mission (NLM).

Objectives of the OBE Programme

The major objectives of OBE programme are:

- Take education to the doorsteps of learners through Open Learning and Distance Education Modes.
- Provide educational opportunities to school drop-outs, out-of-school children up to 14 years and adults above 14 years.
- Provide life skill.
- Create a learning society by providing opportunities for life-long continuing educational pursuits.
- Remove disparities in educational opportunities by providing educational programme to girls, women and other educationally deprived sections of the society.
- Evolve educational designs that combine academic/work experience/ pre-vocational/ vocational talents and virtues/qualities (life enrichment components)

Pre-Vocational and Vocational courses in addition to Academic courses.

In Open Basic Education, NIOS is giving additional input in the form of Work Experience or pre – vocational programmes for children below 14 years and Vocational Educational including elements of entrepren-eurship for those who are above 14 years.

OBE Courses at A, B and C Levels

The courses offered at level A, B and C Levels are:

Level	*Courses Offered*
A	• Language, Mathematics, Environmental Studies (Integrated Courses), Art of Healthy and Productive Living. • Workexperience/Pre-vocational/Vocational • Talents and virtues/qualities
B	• Language, Mathematics, Environmental Studies, Art of Healthy and Productive Living and Pre-Vocational Courses. • Workexperience/Pre-vocational/Vocational • Talents and virtues/qualities
C	• Languages, Mathematics Science & Technology, Social Sciences, Work Education, Art Education, Health and Physical Education. • Workexperience/Pre-vocational/Vocational • Talents and virtues/qualities

The courses combining academic components, workexperience/pre-vocational/vocational (life enrichment, life skills) and value based aspects of life - talent and virtues/qualities provide a learning continue through graded curricular content. Integrated thematic approach to development of curricular material and teaching processes keeping in view pedagogical aspects is followed in the development of curriculum.

At a glance it may appear heavy curriculum. But when work oriented vocation based approach is followed it became a meaningful curriculum.

Good Parenting has been given prime importance for adult learners and has been made as an integral part of each subject area. Lessons on Good Parenting in the areas of nutrition, health and good habits have been written. In addition to Good Parenting, Human Values and inter - personal relationships have been given prominence as important themes relevant to Life Enrichment of adult neo-literates.

Skilled development does not take place in vacuum imparting instruction to learn skills based a vocation inculcate many other skills for example when one learns tailoring and embroidery the skills developed are :-

(i) **Personal Skills** – Perfection in stitching, Punctuality, Sincerity, Time Management, Learning New Models and Designs, Pleasing Personality, Good Relationship, Hard Working, Involvement (ii) **Work Skills** – Perfection in stitching,

Developing variety of Designs, thorough Knowledge. (iii) **Creative Skills** – Updating of knowledge and skills. (iv) **Mechanical Skills** – Repairing and Maintenance. (v) **Communication Skills** – Multilingual Skills, Approachability. (vi) **Selection Skills** – Colour Matching, Thread Selection, Needle Selection. (vii) **Courses Required** - Computer Pattern Making, Tailoring and Embroidery, Garment Quality Control, Garment Export Management. (Ref. Mismatch Establish and Developing Community Colleges in India, Dr. Xavier Alphonse, S.J., Mcrdce Publication Chennai 2002).

Multi Mechanic (i) **Personal Skills**– Responsibility and Hard work Industrious, Practice, Ethics, Punctuality and Sincerity, Problem Solving, Presence of mind and good perception Loyalty. (ii) **Social Skills** – Listening Skills, Acceptability, Solving Interpersonal Problems, Quality of network. (iii) **Communication Skills** – Multilingual, Good expression, Understanding. (iv) **Work Skills** – Electrical, Electronics, Carpentry, Mechanical, Plumbing. (v) **Creative Skills** – Innovative, Risk Taking, Imaginative, Updating of Skills. (vi) **Leadership** – Resourcefulness, Approachability, Decision Making, Service Minded, Organisation Skills. (vii) **Masonry** – Patch up work in house hold, fixing slab, Usage of Tools – Mixing proportion of Cement and Sand and Water – Leveling – While Washing – Painting – Flooring- Fixing Tiles. (viii) **Mechanic** – Identification of Tools and there usage in homes and flats, Eg. Hammer, Screw Driver, Jumper, Fill-Drilling Machine, Cutting Player. (ix) **Plumbing** – Basic plumbing ideas and handing of instrument. Repairing and fixing new apparatus in the flats. Knowledge of pipes – Quality Diameter, Thickness, Threading. (x) **Carpentry** – Fixing Home Furniture, Windows, and Maintenance. Identifying Different type of wood designing, carving, USage of Tools, Knowledge of Paints, Varnish, Polishing. (xi) **Electrical** – Wiring Circuits, Basic Electrical Tools and Their wages, Basic Electrical Theory, AC DC Current, Basic Study of meters – General Precautions, Eg. Refrigeration and T.V. (Ref. Mismatch Establish and Developing Community Colleges in India, Dr. Xavier Alphonse, S.J., Mcrdce Publication Chennai 2002).

Some distinct features of the OBE curriculum

- Contextuality with regard to learner's environmental situations, social dimensions of life, specific learning needs at a particular point of time and close linkage with previous learning points
- Flexibility with regard to learner's freedom in the choice of subject in different combinations among the courses offered.
- Openness in terms of local specificity and inclusion of new activities as per emerging needs at the local level.
- Value orientation.
- Convergence of face-to-face learning with distance education mode in a moderate form.
- Opportunity to learners to avail benefit of academic as well as pre-vocational programmes.
- Productivity oriented.
- Forward looking approach based so as to develop positive outlook among the learners
- Activity based and non-conventional approach oriented.
- Target and area-specific
- Opportunity for continuance of learning through graded curriculum content.
- Thematic and level specific.
- Parity with formal school learning.

- Coverage of core components.
- Life skill education based.
- Media oriented.
- Cultural context oriented.
- Learner's experience and resource based.

Implementation of Open Basic Education Programme

The Open Basic Education (OBE) programme is being implemented jointly by NOS and the Accredited Agencies by NOS for this purpose. In recent times the OBE programme has been strengthened by extending its partnership with about 190 renowned voluntary organisations concerned with education and welfare of children belonging to underprivileged section of society. The accredited agencies implement the OBE programme with their own resources. They admit, enroll learners and arrange teaching learning process. The NOS sends exemplar material of OBE. The Accredited Agency may adopt/adapt-or use it as reference material for developing their own material. They may use the material prescribed by the state. The NOS, on receiving of proposal from Accredited Agency and after assessment of the need, may provide financial assistance to Accredited Agencies for purpose such as adaptation of NOS materials, development of local specific materials and capacity building of functionaries.

The main focus of OBE programme is enabling the individual learner to build on his/her innate capacities and acquire skills to face challenges of life today and in future days and make informed decisions.

Process of Transaction

The Open Learning Delivery Mode of National Open School (NOS) combines traditional face-to-face transactional process with distance mode of learning using teleconferencing programmes. Print, non-print, self-learning, audio-video materials provide enrichment to the learning process. The learning set up is quite distinct from either formal school or Non-formal/alternative schooling situation. Here learner is at the centre of learning process. S/he studies and processes information from self-instructional materials and other open sources obtainable in the environment. The role of the teachers is that of a facilitator who facilitates and provides guidance to the learner, whenever it is required. Teachers operate through a network of 'Study Centres' which provide opportunities for Personal Contact Programmes (PCPs) located in some local schools accredited by NOS. The learning centre (study centre) is utilised for close interaction between the learner and the teacher wherein learners seek clarification about the learning difficulties faced by them, discuss about various curricular areas with other learners, seek teacher's guidance, procure additional reference materials and get feed-back on teacher marked assignments completed by them independently from their place of stay This mode is generally used at level C (equivalent to grades VI-VIII-Elementary Education Stage) To some extent at level B as well this kind of teaching-learning process is observable.

Largely two types of delivery modes are obtainable in study centres that offer OBE programmes at level A and B. Firstly in majority of the cases, the accredited organisations provide face-to-face programmes daily for about 2 to 3 hours along with some combination of open and distance learning process. Besides the activity based print and non-print materials, children are exposed to a variety of open learning situations in the form of solving a given problem, study of situational visuals, giving answer to questions raised on the visual,

collecting information from various sources, processing of information, critically listening to audio cassettes, self-study of comic books, interacting with people in and around neighbourhood, watching and listening to specially developed television/radio programmes for children and seeking answers to questions from different sources.

In the second type of learning situation that mostly serve the children in different circumstances (e.g. child labour, children from migrant families, street children etc.) face-to-face teaching learning takes place once or twice a week on a scheduled time at a mutually convenient place. These are known as Holiday Schools, Week End Schools, Extension Centres, Drop-in centres, Foster Homes etc. These are like Personal Contact Programmes where children are oriented with various themes, problems, play-way and cultural activities. They are given some flexible type of learning materials in the form of 'work-sheets' which they work upon from their own place of work and stay. Folk and non-conventional methods are extensively used. They also get opportunities to learn from radio, television and film shows. Cultural activities provide them good opportunities to express their feeling, ideas and perceptions about things observed and studied closely. In case of children from migrant families some designated voluntary organisations take initiative in coordinating learning activities organised at various places.

Evaluation of Learners Achievements in all aspects of Personality

Continuous and comprehensive evaluation has been visualized under OBE programme. The main focus is on the learner friendly flexible process of pupil evaluation. This includes self-evaluation by the learner. In-text questions and self-checked exercise in-built in the self-instructional material are provided to facilitate the process of self-evaluation by the learners. The evaluation through the assignment given by the teacher/instructors are expected to help developing self-confidence among the learners. Evaluation of co-scholastic aspects, self-evaluation, peer–group evaluation, teacher/instructor's evaluation, constitute the important ingredients of the formative and summative evaluation system. Children are free to sit for examination on dates suitable for them as per their demand.

The NOS provides Broad Learning Outcomes, as prescribed by NCERT the Competencies and Text free sample questions at different stages of primary and upper primary level A (Class III), level B (Class V) and level C (Class VIII). The blue print of examination papers with suggestive marking schemes is also provided by the NOS. Accredited Agencies prepare their own question papers for each examination, conduct examination at A,B and C levels and evaluate the scripts with their own finances. The NOS sends unfilled Joint Certificate specially designed for A, B, and C level to the Accredited Agencies. The accredited agency sends the duly filled up Joint Certificate of successful learners for endorsement by NOS. The Joint Certificates for A, B and C level are appended.

ANNEXURES

ANNEXURE-I

National Consultative Meet on Education for Life in the Context of *Sarva Shiksha Abhiyan*

Programme Schedule

Dates: November 27 – 29, 2002

Venue: Room No. 202, Chacha Nehru Bhawan

CIET, NCERT, New Delhi

Time: 9.30 a.m. – 5.00 p.m.

<u>Day I</u>
November 27, 2002

Time	Session	Programme
9.30a.m-11.00a m	Inaugural Session	**Welcome Address:** Prof. K.K. Vashishtha, Head, DEE, NCERT **Inaugural Address:** Prof. R.H Dave Former Director, International Institute of Education, UNESCO Hamburg, Germany **Presidential Remarks:** Prof M S Khaparde Joint Director, NCERT **Vote of Thanks:** Dr.Shabnam Sinha, Programme Co-ordinator **Rapporteurs:** Dr J P. Mittal, NCERT Dr Yogesh Kumar, NCERT
11.00a.m.-11 15a.m.	Tea	

11.15a.m.-11.45a m	Session-I	**Theme of the National Conference:** Dr. Shabnam Sinha Chairman: Prof R.H. Dave Rapporteur: Mrs. Sandhya Sangai
11.45a m-1.15 p.m.	Session-II	**Macro Group Discussion**
01.15p.m.-02 15p.m.	Lunch	
02.15p m.-03 15p.m	Session III	**Panel Discussion:** **Education For Life and Alternative Education** Panelists: Prof. N K Ambastha Prof. Nirja Shukla Shri Dwarko Sunderani Chairperson: Dr. Ila Naik, IASE, Gujarat Vidyapeeth Rapporteurs : Dr. Usha Dutta,NCERT Dr. Kamlesh Rai,NCERT
03 15p.m.-03.30p.m.	Tea	
03.30p.m.-05.30p.m.	Session-IV	**Paper Presentation and Macro Group Discussion** **Some Modules of Learner Centred Education** Prof. John Joseph Former Director, State Resource Centre Tamil Nadu Chairperson : Prof Ila Naik, Director, IASE, Gujarat Vidyapeeth Rapporteur . Dr. Usha Dutta,NCERT Dr. Kamlesh Rai,NCERT
	Session V	**Concentration and Visualisation Exercises in Learning at Elementary Education Level** Sh. Vijay Prakash , School For Creative Learning, Patna Chairman : Prof John Joseph Rapporteur : Dr. Saroj Pandey,NCERT

Day II
November 28, 2002

Time	Session	Programme
9 30a.m. - 11 00a.m	Session VI	**Paper Presentation and Macro Group Discussion** **(1) Jeevan Vidya:Education For Life** Society for Integrated Development of the Himalayas (SIDH),Mussoorie. Rapporteurs: Dr. Usha Dutta,NCERT Dr Pushpa Mandal,NCERT *(2) Communication For Life* Prof S.S. Prasad Head, P.G Department of English Patna University Chairman : Dr. John Joseph Rapporteurs: Dr. Usha Dutta Dr. Pushpa Mandal
11.00a.m.-11.15a.m.	Tea	
11.15a.m. - 1.00p.m.	Session VII	*Paper Presentation and Macro Group Discussion* **(1) Developing A Model For Primary Education For The Twenty- First Century** Prof. S. Rama Murthy Retd. Principal, IASE Osmania University, A.P. **(2)The Management of Education For Life in SSA** Prof. D.L. Sharma, Honorary Member Secretary Indian Institute of Education for Rural Transformation,Rajasthan **(3) Education For Life Skills:A Case Study Of Tribal Villages in Koraput** Prof S.N. Ratha Chairman: Prof. R.P Singh, Patna University Rapporteur: Ms. Sandhya Sangai,NCERT
1 00p m - 2.00p m	Lunch	
2.00p.m. - 3.00p.m	Session VIII	**Macro Group Discussion on Papers Presented** Chairman: Prof R.P. Singh
3.00p m - 3.15p.m	Tea	

3.15p m - 5.15p.m.	Session IX	**Group formation and Commencement of Groupwork** Group I: **Concept and Approaches of 'Education for Life'** Mrs Sandhya Sangai,NCERT (Rapporteur) *Group II:* **Education for Life: Implications for the Curriculum** Dr. G. C Upadhyay,NCERT (Rapporteur) Group III: **Teacher Preparation for Education for Life** Dr Saroj Pandey,NCERT (Rapporteur) Group IV·**Management of Education for Life in SSA** Dr Kanan Sadhu,NCERT (Rapporteur)

Day III
November 29, 2002

Time	Session	Programme
9.30a m. - 11.00a.m		Group Work Continued
11.00a.m - 11.15a m	Tea	
11 15a m - 1 00p m		Presentation of Group Work
1 00p.m - 2.00p m	Lunch	
2.00p m - 3 00p m		Presentation of Group Work
3.00p.m. - 3.15p.m.	Tea	
3.15p.m. - 5 15p.m.		**Valedictory Session:** • Presentation of Group Reports • Valedictory Address: Prof. R.P. Dokalia • Address by Sh. Praveen Kumar Director, DEEL, MHRD, Govt. of India • Vote of Thanks: Prof. K.K. Vashishtha Head, DEE, NCERT.

ANNEXURE-II

List of Participants

1.	Prof Ashok Ganguly Chairman, Central Board of Secondary Education Shiksha Kendra, 2, Community Centre Preet Vihar, Delhi – 110 092
2.	Prof. T.N. Dhar Ex - Joint Director, NCERT A – 60 Yojna Vihar, Delhi – 110 092
3.	Prof O.S. Dewal E – 250, Mayur Vihar, Phase – II Delhi – 110 091
4.	Dr H.L. Sharma Consultant, National Open School B-31 B, Kailash Colony New Delhi – 110048
5.	Prof. N.K. Ambashtha Chairman, National Open School B – 31 B, Kailash Colony New Delhi – 110 048
6.	Prof. R P. Singh Retd. Prof. of Education (Patna University) 145, Lohia Nagar Housing Colony Kankarbagh, Patna – 800 020
7.	Prof R.P. Singhal D –24, C.C. Colony Delhi 110 007
8.	Prof. Mohd Miyan Deptt. of Educational Studies Jamia Millia Islamia (Central University) New Delhi - 110 025
9.	Dr. M.C. Sharma School of Education IGNOU, Maidan Garhi New Delhi – 110 068
10.	Prof. Shaileshwer Sati Prasad Professor of Linguistics and Head, P.G. Deptt. of English Patna University, 1, Maitri Shanti Bhawan B M. Das Road, Patna – 800 004
11.	Shri Ram Murthy Retd. Principal IASE House No 11 – 6 - 405 Nampally Hyderabad –1

12.	Shri Vijay Prakash, IAS School for Creative Learning Bailey Road Behind J.D. Women's College Shastri Nagar, Patna – 800 023
13.	Ms Chetna Kohli UNICEF House 73, Lodhi Estate New Delhi – 110 003
14.	Mr. Alan Penny European Commission F-10/12, Vasant Vihar New Delhi – 110057
15.	Shri Rampal Singh President All India Primary Teachers Federation 41, Institutional Area D Block, Janakpuri, New Delhi – 110 058
16.	Prof. John A. Joseph Director 16, Andavar Street Chennai
17.	Shri. Dwarko Sunderani Director, Samanvay Ashram Bodh Gaya, Bihar
18.	Mr. M G. Marathe Director, SCERT 708, R B. Kumthekar Marg Sadashiv Peth, Pune – 411 030 (Maharashtra)
19.	Dr. Ravinder Nabham Director, SCERT Aliya School Campus Hyderabad – 500 001, Andhra Pradesh
20.	Mr. Sharadin du Director , SCERT Govt. of Uttar Pradesh JBTC Campus Nishatganj, Lucknow – 226 007
21.	Prof S.N. Ratha Annapurna Cottage Baxi Street Jeypore – 764 001, Orissa
22.	Shri Pawan Gupta Director Society for Integrated Development of Himalayas (SIDH) SIDH, Post Box No 19 Mussoorie – 248179
23.	Dr.(Ms) Ila Naik Director, IASE Principal, Shikshan Mahavidyalya Gujarat Vidyapith Ahmedabad – 380 014

24.	Prof D.L. Sharma Honorary Member Secretary Indian Institute of Education for Rural Transformation,Rajasthan 54/68, Mansarovar Jaipur – 302020
NCERT Faculty who Participated	
1.	Prof. Rajendra Dixit, Head, DESSH
2.	Prof. Neerja Shukla, Head, DEGSN
3.	Prof. C.S. Nagaraju, Head, DERPP
4.	Prof. R.L. Phutela, CIET
5.	Dr. J.P. Mittal, Reader, PPMED
6.	Dr. Yogesh Kumar, Reader, DTEE
7.	Dr. Saroj Pandey, Reader, DTEE
8.	Dr. Kamlesh Rai, Reader, CIET
9.	Dr. Kanan Sadhu, Reader, DEGSN
10.	Dr. Usha Dutta, Reader, DEE
11.	Dr. G.C.Upadhyay Reader, DEE
12.	Dr. Pushpa Mandal, Lecturer, DEE
13.	Dr. K.Chandershekhar, Lecturer, DEME
14.	Mrs. Sandhya Sangai Lecturer, DEE
Junior Project Fellows	
15.	Ms. Surbala Sahoo
16.	Sh. Mukesh Kumar
17.	Sh. Deepak Narang

RAPPORTEURS OF THE CONFERENCE PROCEEDINGS	
1. Dr J P.Mittal Reader, PPMED	6. Dr. Usha Dutta, Reader, DEE
2. Dr. Saroj Pandey, Reader, DTEE	7. Dr. G C.Upadhyay Reader, DEE
3. Dr. Yogesh Kumar, Reader, DTEE	8. Dr. Pushpa Mandal, Lecturer, DEE
4 Dr. Kamlesh Rai, Reader, CIET	9. Mrs. Sandhya Sangai Lecturer, DEE
5. Dr. Kanan Sadhu, Reader, DEGSN	10. Dr. Shabnam Sinha, (Coordinator)